



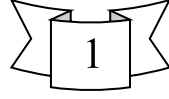
आज का पुरुषार्थ

स्व-उन्नति के लिए

आज का पुरुषार्थ - २

 bkjayshah@gmail.com

 [/gyanamrit](https://www.facebook.com/gyanamrit)



यदि हम फ़रिश्ते स्वरूप की स्थिति में आ जाते हैं तो हमारा यह जीवन संसार के लिए वरदान बन जाता है। और फ़रिश्ते स्वरूप में रहने वालों के सिर पर स्वयं बाबा छत्रछाया बनकर रहता है। उनके जीवन में यदि कोई विघ्न आता है तो बापदादा स्वयं उनकी सुरक्षा करने लगते हैं। बहुत सुंदर बात है कि भगवान हमारी care (देख-रेख) करें, वह हमारा ध्यान रखे..!

तो आइये हम फ़रिश्ते बनने की ओर आगे बढ़ें। हम अपने संपूर्ण फ़रिश्ते स्वरूप का आह्वान करें और हमें अपना यह फ़रिश्ता स्वरूप बहुत ही स्पष्ट अनुभव में आना चाहिए, बहुत क्लिअर विज्युलाइजेशन (स्पष्ट दृश्य) होना चाहिए। और इसके विज्युलाइजेशन का स्वरूप है कि, "मैं आत्मा चमकती हुई ज्योति प्रकाश की देह में विराजमान हूँ और उससे चारों ओर प्रकाश की किरणें फैल रही हैं। इस तरह मैं हो गया डबल लाईट।" डबल लाईट का अर्थ है आत्मिक स्वरूप और मन भी पूरी तरह लाईट (हलका)। तो जब आत्मा संपूर्ण पवित्र बन जाती है, जब वो बिलकुल लाईट हो जाती है, मन बिलकुल हलका, कोई बोझ नहीं, बेफ़िक्र बादशाह, निश्चिंत जीवन, एक बल एक भरोसे जीने वाले तब यह हमारा फ़रिश्ता स्वरूप प्रत्यक्ष होता है। फ़रिश्ता अर्थात् जो निरंतर योगयुक्त हो, जिसके चित्त में सभी के लिए कल्याण की भावना, शुभ भावनायें भरी हुई हो, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा, नफ़रत, तैरे-मेरे सबसे परे हो गये हो, जो बिलकुल आत्मिक स्वरूप में स्थित हो गये हो। इसलिए चाहे बहन फ़रिश्ता बने, चाहे भाई फ़रिश्ता बने लेकिन दोनों के लिए एक ही शब्दप्रयोग है। 'फ़रिश्ता' न की 'फ़रिश्ती'..! इसका अर्थ है जो नर और नारी के भान से उपर उठ गये वे फ़रिश्ते हैं, जिनके पैर इस धरती को स्पर्श नहीं कर रहे हैं वे फ़रिश्ते हैं। अर्थात् जो इस संसार के आकर्षण से उपर उठ चुके हैं, जिन्हें संसार का कोई भी प्रलोभन अपनी ओर खिंचता नहीं है वे फ़रिश्ते हैं।

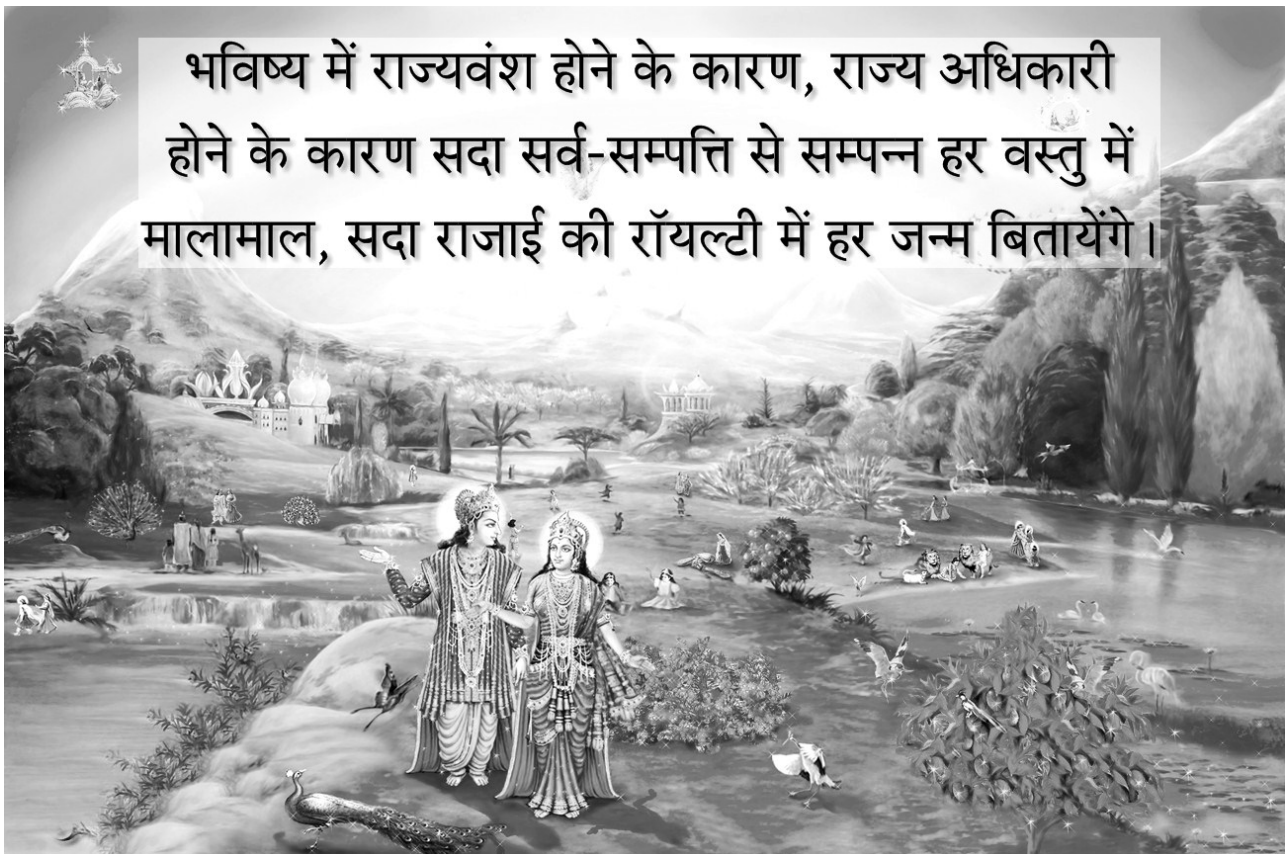
तो आइये हम इस वरदानी स्वरूप को धारण करके इस संसार का कल्याण करें क्योंकि इसी स्वरूप के द्वारा हमें सारे संसार को संदेश भी देना है और श्रेष्ठ वायब्रेशन्स भी फैलाने हैं। क्योंकि कई सारे धर्म ऐसे हैं जो केवल फ़रिश्तों में ही विश्वास करते हैं, उनमें भावनायें रखते हैं। वह भगवान आदि की बात नहीं जानते, न उसका उन्हें कोई ज्ञान है। वह केवल फ़रिश्तों की ही मान्यता रखते हैं। तो हम अपने फ़रिश्ते स्वरूप के द्वारा भविष्य में इन सभी आत्माओं को ईश्वरीय संदेश देंगे, मुक्ति का संदेश देंगे, घर जाने का संदेश देंगे।

तो आइये हम बहुत तत्परता से अपने स्वरूप को बढ़ाये, देखा करें अपना यह स्वरूप । अपने सामने थोड़ी दूरी पर खड़ा हुआ हमारा संपूर्ण फ़रिश्ता स्वरूप । हम उसका आह्वान करें, "आ जाओ, हे मेरे संपन्न स्वरूप आ जाओ... तुम्हारी बहुत जरूरत हैं" और हम चले अपने इस महान स्वरूप की स्थिति में निरंतर आगे बढ़ते चले । लेकिन हम अपनी भावनाओ को भी चेक करते चले ।

तो आज सारा दिन बहुत अच्छी तरह फ़रिश्ते स्वरूप का अभ्यास करना हैं हर घंटे में एक बार अपने इस तेजस्वी स्वरूप को देखना हैं और ग्लोब (पृथ्वी, भुमण्डल) पर खड़े होकर सारे संसार को संपूर्ण प्रकृति को पवित्रता के और शक्तियों के वायब्रेशन्स देने हैं तो आज सारा दिन बार-बार अभ्यास करेंगे, "मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान फ़रिश्ता हूँ... ग्लोब के उपर हूँ और मुझसे चारो ओर पवित्र वायब्रेशन्स फैल रहे हैं..."

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



बाबा हम सभी को संपन्न और संपूर्ण बनाने के लिए निरंतर निर्देशन दे रहे हैं। जो आत्माये संपूर्ण और संपन्न बनेगी वे पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह विश्वगगन में चमकेगी। उनके द्वारा ही संसार से अज्ञान का अंधकार विनाश होगा। वे ही संसार को नई दिशा देने वाली होगी। उन्हीं का बहुत ज्यादा महत्व संसार में होगा। भगवानुवाच हैं कि जरा आगे चलो, अंत का समय आने दो, जिन आत्माओ ने लंबे काल से साथ निभाया है उनका इस सृष्टि पर कितना महत्व हो जायेगा यह सभी देखेंगे..!

तो हमे ध्यान देना है, हमे अपने लक्ष्य की ओर चलना है। लक्ष्य को भूलकर और बातों में विचलीत हो जाना यह इस समय बुद्धिमानी नहीं होगी। सभी के लिए साक्षीभाव धारण करते हुए, हर आत्मा अपना-अपना पार्ट बजा रही है ऐसा साक्षीभाव रखते हुए हमे स्वयं को महान बनाना है। किसी भी उलझन में उलझकर जो रह जायेंगे वह अपनी मंजिल पर कभी नहीं पहुँचेंगे और जो लाईट हाउस बन जायेंगे वह सारे संसार को मंजिल दिखायेंगे, उस पर चलने का मार्ग दिखायेंगे।

तो आइये हम संपन्नता और संपूर्णता की ओर चले और दूसरा भगवानुवाच याद करें, 'मैं-पन' और 'मेरे-पन' का त्याग कर देना ही संपन्न बनना और संपूर्ण बनना है। यही आधार है, कितनी सूक्ष्म बात बाबा ने कही..! परंतु बड़ी सूक्ष्मता से यह मैं-पन मनुष्य के अंदर आ जाता है। हम कोई भी कार्य की सफलता को देख पहले बाबा का गुणगान करने लगते हैं, "वाह बाबा..! तुमने कितना अच्छा किया।" फिर अपना भी गुणगान करने लगते हैं, "हमने भी यह किया"। इसलिए जब दोनों का गुणगान मिक्स हो जाता है तो आत्माओ पर हमारा गहरा प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि यह सूक्ष्म मैं-पन दूसरो की भावनाओ को समाप्त कर देता है। बहुत सुंदर बात बाबा ने कही है कि, "मैं-पन का त्याग ही, मेरेपन का त्याग ही आधार है अष्टरत्नो का।" अष्टरत्न बनने वालो को ऐसा योगयुक्त हो जाना चाहिए। बाबा की शक्तियों को इतना सूक्ष्मता से पहचान लेना चाहिए कि 'मैं' और 'मेरे' का कहीं अंश ही न रह जाये। तो हम इसको बहुत सूक्ष्मता से ले और जाँच करें कि कहाँ सूक्ष्मरूप से मेरापन तो नहीं है? बड़ी गहरी जड़े हैं इन दोनों की। मेरा परिवार, मेरी धन-संपत्ति, मेरा मान-शान, मेरे संस्कार, मेरी सेवा यह सब बहुत चलता है। लेकिन जो आत्माये मैं और मेरे का त्याग कर देंगे, बहुत बड़ी चीज़ है कि पाँच तत्व भी उनके गले में सफलता की माला डालेंगे। वह प्रकृति के भी मालिक बन जायेंगे और कदम-कदम पर उन्हें सफलता प्राप्त होगी। तो बहुत एक बड़ी चीज़ पर हम

ध्यान दे । जिनको जीवन में आगे चलकर महान सेवायें करनी हैं, जिन्हें इस संसार को, युग को बदलने में बाबा का बहुत बड़ा सहयोग करना है वह 'मैं-पन' और 'मेरेपन' से मुक्त होकर संपूर्ण समर्पण भाव से योगयुक्त हो जाये तो कमाल होगी..!

आज सारा दिन हम इस पर बहुत ध्यान देंगे और चेक करेंगे कि कहाँ-कहाँ मैं-पन और मेरापन आता है? हो सके तो इसकी लिस्ट (सूची) भी बना ले और सारा दिन अभ्यास करेंगे आज फ़रिश्ता सो देवता का । एक ओर हमारी फ़रिश्ते की देहरूपी ड्रेस टंगी हैं, दूसरी ओर देवताई ड्रेस, और "मैं आत्मा इस ब्राह्मण शरीर में हूँ । यहाँ से निकलकर मैं देवताई स्वरूप धारण कर लेती हूँ । फिर वहाँ से निकलकर फ़रिश्ता स्वरूप ।" इस तरह कभी फ़रिश्ते स्वरूप में तो कभी देव स्वरूप में स्वयं को अनुभव करेंगे ।

ओम शांति...

बाबा हम सभी को संपूर्ण पावन बनाने आया हैं और हमारे चित्त की वृत्ति को शुद्ध करने आया हैं। हमारे संस्कार को उन्हें बिलकुल 100% पवित्र, सुखदायी, कल्याणकारी बनाना हैं। तो भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बाबा हमे सिखाते हैं। बाबा ने सभी विकारो का दान भी हम से माँग लिया, व्यर्थ संकल्पो का दान भी हम से माँग लिया। हम सच्चे मन से अपनी किसी भी बुराई का दान बाबा को कर दे। कोई दृढ़ संकल्प कर ले कि आज से हम यह करेंगे या आज से हम यह नहीं करेंगे। भगवान को एक बार वचन देकर उससे वापस नहीं लेंगे। एक शक्तिशाली मनुष्य, चरित्रवान मनुष्य ऐसा ही करता हैं कि वचन दे दिया, किसी मनुष्य को भी वचन दे दिया तो वापस नहीं लेते। हमारा इतिहास, हमारी संस्कृति ऐसे उदाहरणो से भरी पड़ी हैं। जब वचन निभाने के खातिर मनुष्य ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

तो हम भगवान को वचन दे दे और संकल्प कर ले कि उसको वचन देकर निभाना हैं। जब मनुष्य को वचन देकर भी मनुष्य सर्वस्व कुर्बान कर सकता हैं तो क्या भगवान को वचन देकर हम उसे निभाने के लिए अपने स्वार्थ का, अपनी कमजोरीयो का बलिदान नहीं कर सकते? तो दे दे वचन उसको जो हमे सबसे महान बनाने आया हैं।

दूसरी बात, वह बुराई उसको दे दे, देहभान, मन की चिंतायें, सारे बोझ उसको दे दे और कोई चीज़ जब दूसरो को दे दी जाती हैं तो उस पर अपना अधिकार नहीं रहता हैं। फिर उन चीज़ो पर अपना कोई अधिकार नहीं। एक बार देने के बाद दोबारा उसे ग्रहण करना, स्वीकार करना यह बहुत बड़ा पाप हो जाता हैं, इससे पुण्य नष्ट हो जाते हैं और फिर भगवान को देकर वापस लेना यह तो बहुत बड़ी बात हैं। फिर भगवान कभी हमारी उन चीज़ो को स्वीकार भी नहीं करेगा और हमे अपना सबकुछ देने के लिए तैयार भी नहीं होगा।

तो आइये हम यह दोनो चीज़ो का प्रयोग करके अपने जीवन को शुद्ध करें, अपने मन को बहुत शक्तिशाली बनाये, हम कमजोर नहीं हैं। सोचो, हम किसकी संतान हैं? भगवान के बच्चे क्या दृढ़ नहीं होंगे? सर्वशक्तिवान बच्चो का मनोबल क्या ढीला-ढाला होगा कि आज कुछ सोच रहे, कल कुछ सोच रहे? आज त्याग कर रहे हैं, कल वापस ले रहे हैं? आज एक प्रतिज्ञा की, आज ही तोड़ डाली? क्या ऐसा कमजोर मनोबल सर्वशक्तिवान के संतान का हो सकता हैं? बिलकुल आपका अंतरमन दृढ़ता पूर्वक कहेगा "कदापि नहीं"। जिस भगवान के बच्चे हैं, सर्वशक्तिवान की संतान हैं। हमे उनकी इन शक्तियों का शो (प्रदर्षित) करना हैं। हम कमजोर नहीं हो सकते। क्या शेर का बच्चा गिदड़ो से डर कर भागेगा? या केवल खड़ा हो

जायेगा और हजार गिदड़ भी हो, एक साथ सबके सब पलायन कर जायेंगे। पहचाने अपनी शक्तियों को और इस शक्ति का प्रयोग दृढ़ संकल्प के रूप में करें। विशेष रूप में सबकुछ बाबा को दे दे।

तो आज ऐसा एक दृश्य बनायेंगे कि हम अपनी बुराइयों की गठरी बाँधकर सूक्ष्मवतन में बाबा के हवाले कर रहे हैं, "लो बाबा, बस आज से यह सब आपका हुआ, यह चीज़े मेरी नहीं, इन पर मेरा कोई अधिकार नहीं है। मैं इन सबसे मुक्त हुई।" और फिर बाबा हमें दृष्टि दे रहे हैं। वरदान भी दिया, "तथास्तु। अब ऐसा ही हो। अब यह सभी तुम्हारी बुराईया मेरे हवाले हैं। अब मैं इन्हें जलाकर नष्ट कर डालुंगा। तुम निश्चिंत हो जाओ। तुम पवित्र हो जाओ। तुम बोझमुक्त हो जाओ।" आज सारा दिन बार-बार इसी दृश्य को देखेंगे और एक सुंदर अनुभूति करेंगे।

ओम शांति...

ऋष्य युग की जीवन शैली

हर वैभव अपना-अपना सुख देने के लिए सदा एवररेडी होंगे।
सदा खुशी की शहनाईयाँ ऑटोमेटिकली बजती रहेंगी।



स्वयं सर्वशक्तिवान ने इस धरा पर आकर अपना महान रुद्रगीताज्ञान यज्ञ रचा हैं । जिसके द्वारा युग परिवर्तन होगा, जिसमे सभी के विकारो की आहुती पड़ जायेगी, जिसमे सभी के पाप और सभी पापी भी नष्ट हो जायेंगे । ऐसा महान यज्ञ जिसकी जिम्मेदारी स्वयं बाबा ने हम सभी के कंधो पर दी हैं । हमारा परम कर्तव्य हैं कि हम उसमे संपूर्ण सहयोग करें और उसको निर्विघ्न बनाने के लिए तैयार रहे । हमारा सहयोग बाबा के इस महान कार्य को संपन्न करता हैं । हम तन का भी सहयोग दे, धन का भी दे, अपनी योग्यताओ का भी दे लेकिन विशेषरूप से अपनी वृत्तिओ को शुद्ध करके, अपनी पवित्रता का, अपने योगबल का, अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन्स का सहयोग इस यज्ञ को दे । यह हमारा बहुत बड़ा भाग्य हैं कि भगवान ने हमे अपने यज्ञ का कार्य दिया हैं, जिम्मेदारी दी हैं, हम पर विश्वास किया हैं । हम इस विश्वास पर खरे उतरे । लेकिन कुछ लोग स्वार्थवश भगवान के इस यज्ञ में भी विघ्न डालते हैं । वह कोई पद पाने के लिए विघ्नस्वरूप बनते हैं और वह समझते हैं कि "हम तो बिलकुल सही हैं, हम तो ठीक कर रहे हैं, सत्ता हमारे हाथ में ही होनी चाहिए, हमको ही सबकुछ करना चाहिए, हम ही योग्य हैं ।" वह भूल जाते हैं कि इस यज्ञ को चलाने वाला कौन हैं? यहाँ नीचे वाले तो सब निमित्त मात्र हैं बाक्री किसी में कोई ताकत नहीं और यह भी जान लेना चाहिए कि इस यज्ञ में विघ्न कोई कितना भी डाले लेकिन इस यज्ञ का कुछ नहीं बिगड़ेगा । विघ्नकारी आत्मायें स्वयं ही जलकर नष्ट हो जायेगी । यह यज्ञ तो संपन्न होना हैं क्योंकि इसके पीछे न केवल स्वयं भगवान हैं, प्रजापिता ब्रह्मा हैं लेकिन अष्ट रत्न और 108 विजयरत्न भी हैं जिनकी महान पवित्रता, जिनका शक्तिशाली योग इस यज्ञ को संपन्न करके ही रहेगा ।

तो हम सभी सहयोगी बने, विरोधी नहीं । 'मैं इनचार्य बनूं ' यह संकल्प से यज्ञ में बाधा उत्पन्न न करें । तो आइये हम सभी इस महान कार्य को संपन्न करें और बाबा के दिल को जीतकर उससे अनेक वरदान प्राप्त करें । स्वयं भगवान जो स्वयं वरदाता हैं, हमे वरदान देने आ गया हैं । उसका वरदानी हाथ हमारे सिर पर हैं । वह कुछ आत्माओ को इस यज्ञ को पूर्ण करने के लिए तैयार कर रहा हैं । उसकी कार्य करने की विधि इस संसार में बहुत कम लोग जानते हैं । न जाने किस-किस पर उसकी नज़र हैं, न जाने किस-किस को शक्तियाँ देकर वह अपने इस महान यज्ञ को निर्विघ्न करेगा और इसको संपूर्ण सफल करेगा..! हमारा तो इतना ही कर्तव्य हैं कि हम इसमें सहयोगी बने और बाबा के प्यार के पात्र बन जायें । कितना अच्छा शुद्ध संकल्प होगा कि हम मन में यह संकल्प करें कि, "बाबा का कार्य मुझे सफल करना हैं । इसमें मुझे

कोई स्वार्थ नहीं रखना हैं । मेरा स्वार्थ, मेरे नेगेटिव वायब्रेशन्स, मेरा क्रोध, मेरी कोई अपवित्रता इसमें बाधक हैं ।"

तो आइये आज सारा दिन हम अपने को यज्ञ का मालिक और जिम्मेदार समझे और यह अनुभव करते रहे कि "बाबा कि दृष्टि मुझपर हैं, वो मुझे बल दे रहा हैं । उसे मुझसे महान कार्य कराने हैं ।" कराने वाला भी वही, बल देने वाला भी वही, योग्यतायें भरने वाला भी वही । हम केवल अपने चित्त को तैयार करें उन महान कार्यों के लिए ।

तो आज सारा दिन इस अच्छे अभ्यास में रहेंगे कि "परमधाम से सर्वशक्तिवान की शक्तियाँ मुझमें समा रही हैं । उनकी संपूर्ण शक्तियाँ मेरे पास हैं । शक्तियों का एक शक्तिशाली फ़ाउंटेइन (फ़व्वारा) मुझपर पड़ रहा हैं । मैं हूँ मास्टर सर्वशक्तिवान । परमात्म शक्तियाँ मेरे पास हैं । स्वयं सर्वशक्तिवान भी मेरे साथ हैं ।"

ओम शांति...

"मैं आत्मा सुखस्वरूप हूँ... शांतस्वरूप हूँ... परम पवित्र हूँ ।" इन सभी आत्मा के मूल गुणों को स्वीकार कर ले । मेरी सुखस्वरूप स्थिति के आगे परिस्थितियाँ सहज ही नष्ट हो जायेगी, यह भगवानुवाच हैं । जितना हम सुखस्वरूप में रहेंगे, परिस्थितियाँ दूर होती जायेगी । और यदि हम दुःखस्वरूप रहेंगे तो परिस्थितियाँ बढ़ती जायेगी । तो अपने सभी दुःख बाबा को अर्पित करें । क्यों हम दुःखी हैं? इसका जरा विश्लेषण करें और ज्ञान की बहुत सारी बातें प्रयोग करके अपने दुःखों को समाप्त करें । अशरीरी होने के अभ्यास द्वारा अपने आंतरिक सुखों को बढ़ाते चले । बार-बार याद करें, "मैं आत्मा सुखस्वरूप हूँ, शांत स्वरूप हूँ ।" सवेरे उठते ही विशेषरूप से वह आत्माये जिनको दुःख बहुत रहता है वो सात बार याद करें, "मैं आत्मा सुखस्वरूप हूँ, शांति तो मेरा स्वधर्म है । जब मैं हूँ ही सुखस्वरूप तो मुझे कोई बात दुःखी कैसे कर सकती है? कोई भी परिस्थिति मुझे दुःखी नहीं कर सकती ।" चुनौती दे दे और अपने को इतना दृढ़ करें कि दुःखों की बातें तो कलीयुग में आती ही हैं । कलीयुग में क्या संपूर्ण सुख होगा? जो घोर अंधकार का समय है, जहाँ चारों ओर राक्षस ही राक्षस बसते हो, जहाँ मानव अपनी मानवता को भूलता जा रहा हो, जहाँ दानवता सिर उठा रही हो वहाँ क्या सुख होगा? वहाँ दुःख ही होगा, लेकिन हमें अपने संकल्पों के द्वारा, बाबा की मदद से, अशरीरीपन के अभ्यास से स्वयं को दुःखों से मुक्त रखना है ।

यह तो सत्य है कि यदि हमें दुःख प्राप्त हो रहा है तो उसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं । चाहे हमारी सोच, चाहे हमारे मन की दुषित भावनाएँ, चाहे हमारी दूसरों के प्रति नकारात्मक दृष्टि, यह हृदय से ज्यादा उम्मीदें और पूर्व जन्मों के पाप कर्म और मनोविकार मनुष्य को दुःखी कर रहे हैं । क्योंकि जिस परिवार में सुख शांति नहीं है उन्हें समझ लेना चाहिए कि वे किसी न किसी विकार के वश अवश्य हैं । यह तो सब सत्य है लेकिन वर्तमान में हम यह सोचकर परेशान न हो कि हमने क्या किया जो दुःख हमारे पास बहुत आ गया है? हमने जो कुछ भी किया वो तो कर लिया । अब सोचना यह है कि मुझे अब क्या करना है? वही नहीं करना है जो आज तक करते आये हैं, वो करना है जो अब हमारा परम कर्तव्य है । हम दूसरों को सुख देंगे, हम दूसरों की पिड़ाएँ हरेंगे, हम व्यर्थ चिंतन से परेशान नहीं रहेंगे, हम बाबा की याद से स्वयं में सुख भरेंगे । मुरलीयाँ सुनकर स्वयं को सुखी करेंगे, अपनी साधनाओं के द्वारा अपने दुःखों को समाप्त करेंगे क्योंकि केवल अपने ही दुःख समाप्त नहीं करने हैं, आनेवाले समय में सबको भी दुःखों से मुक्त होने में सहयोग करना है । बाबा कहते आये हैं कि तुम्हारे दुःख तो चींटी के समान हैं, आगे चलकर तो दुःखों के पहाड़ गिरेंगे । तो क्या हम उन पहाड़ों का

सामना करने के लिए तैयार हैं? क्या हमने स्वयं में इतना सुखो का खज़ाना भरा है कि हम सबको बाँट सके, सबके दुःख हर सके?

तो आज सारा दिन सुख स्वरूप में रहेंगे और संकल्प करेंगे कि, "मुझे तो सबको सुख देना है... मैं आत्मा हूँ... इस देह से न्यारी हूँ... सुख स्वरूप हूँ। सुखो के सागर की, सुखो के दाता की संतान हूँ..." इस चिंतन में रहेंगे और अभ्यास करेंगे, "मैं ग्लोब (भूमण्डल) के उपर बिराजमान मास्टर दुःख-हर्ता सुख-कर्ता हूँ। बाबा की किरणे मुझ पर पड़ रही हैं और मुझसे चारो ओर फैल रही हैं, सभी के दुःखो को समाप्त कर रही हैं।" तो हम भी मास्टर दुःख-हर्ता सुख-कर्ता हैं इस अनुभव को बढ़ाते हुए आज यह अभ्यास करेंगे।

ओम शांति...

यह संसार एक सुंदर खेल हैं। हम सभी इसमें खिलाड़ी भी हैं, साथ में मेहमान भी हैं। हम मेहमान बनकर ही इस विश्व की स्टेज पर परमधाम से आये हैं और हमे यहाँ से वापस अपने घर चले जाना हैं। हम मेहमान हैं और मेहमान जब दूसरे के घर जाते हैं तो आसक्ति नहीं होती। वहाँ कोई अच्छी चीज़े देखे तो वो यह नहीं सोचेंगे कि हम इन्हें उठाकर साथ ले चले। हम सब इस संसार में मेहमान हैं। माया ने हमारे चारो ओर अनेक आकर्षण की वस्तुयें रख दी हैं। कहीं देहधारीयों का आकर्षण हैं, कहीं सांसारिक पदार्थों का आकर्षण हैं, कहीं अथाह धन-संपदा का आकर्षण हैं। कहीं बहुत सारी सुख-सुविधाओ की सामग्री रखने का आकर्षण हैं। परंतु जिन्हें योग का रस प्राप्त करना हो, जिन्हें श्रेष्ठ योगी बनना हो, जिन्हें संसार को बहुत बड़ा योग का सहयोग देना हो या जिन्हें अपने आध्यात्मिक स्तर को बहुत उंचा उठा देना हो उन्हें इस संसार की माया में, इन आकर्षणों में अटकने की आवश्यकता नहीं हैं। भले ही यह बड़े लुभावने हैं, यह बड़े प्रिय लगते हैं, दूसरो के घरों में हम बहुत सारी चीज़े देखते हैं तो हमे भी उसके लिए आकर्षण होता हैं। परंतु ठीक हैं, यह चीज़े आवश्यकता की हैं। इनसे हमारी शोभा भी बढ़ती हैं। परंतु अब समय की माँग तो यही हैं कि हम केवल एक से सबकुछ प्राप्त करें और सभी रसों से स्वयं को मुक्त कर दे क्योंकि जब तक हम कर्मेन्द्रियों के रसों से मुक्त नहीं होंगे, जब तक हम इन आकर्षणों से मुक्त नहीं होंगे तब तक हमे संपूर्ण ईश्वरीय सुख, ईश्वरीय रस, उससे संबंधों को निभाने का सुख मिल नहीं सकेगा। वह हमे संपूर्ण सुख देने आया हैं, हमारा बनकर आया हैं।

सोचो, भगवान स्वयं बैठकर कहते हैं, "बच्चे, मैं तुम्हारा हूँ। तुम मेरे हो।" कितनी बड़ी बात हो गई। हम तो केवल उसके दर्शनो के प्यासे थे, हम तो क्षणभर के लिए उसे देख लेना चाहते थे। परंतु वह जब हमारे पास आया तो उसने हमे महसूस कराया "मैं तुम्हारा हूँ"। प्यार के सागर ने हम पर प्यार बरसाकर कहा, "देख लो बच्चे मैं कैसा प्यार का सागर हूँ... मैं सबसे प्यार करता हूँ... अनकंडिशनल (निःस्वार्थ) प्यार करता हूँ... मेरा प्यार निर्मल हैं, निष्काम, निःस्वार्थ हैं।"

तो हम सभी अब सभी आकर्षणों से स्वयं को मुक्त करें क्योंकि यह सभी चीज़े समाप्त होने वाली हैं। कुछ भी इनमें अविनाशी नहीं हैं। यह ठीक हैं कि वह थोड़े समय का सुख देंगी। परंतु यदि हम उसमें आसक्त हो गये, अगर हम उसका उपयोग करके उसके ही हो गये, उसके ही संकल्पों में समय बिताने लगे तो हम योग का परमसुख नहीं ले पायेंगे। मान लो, किसी के

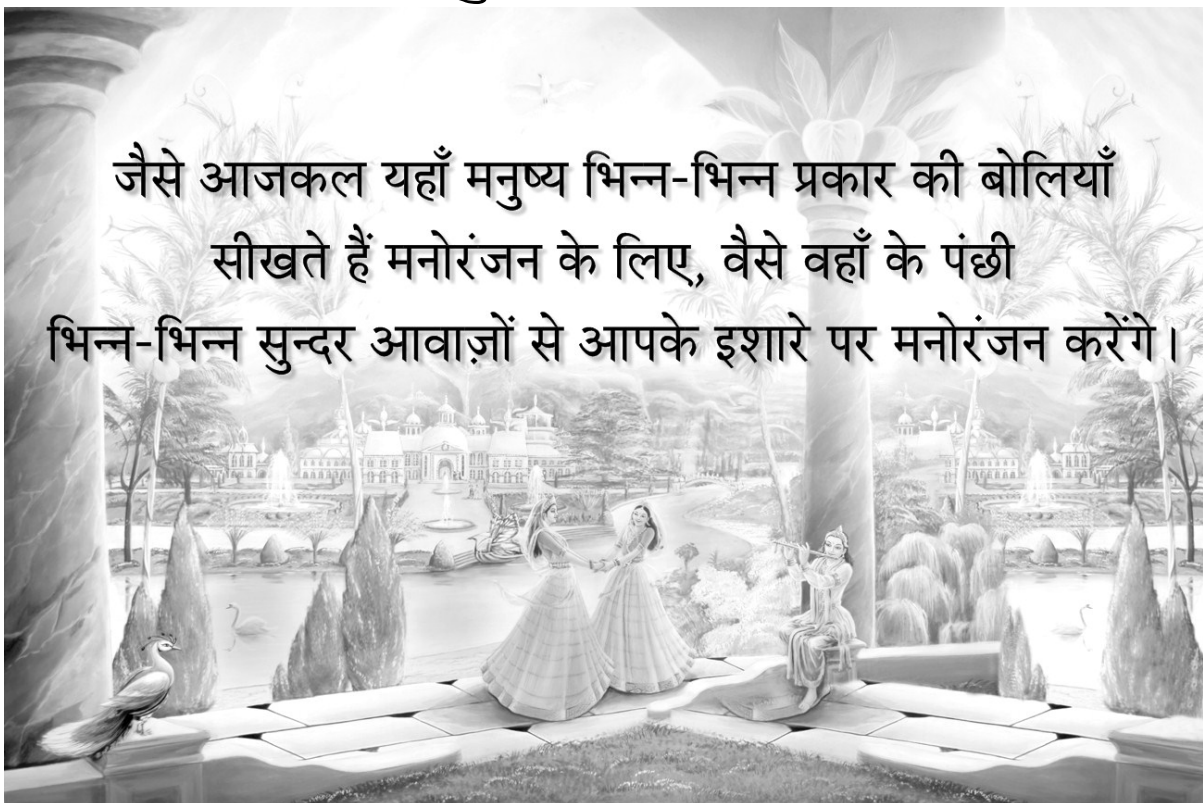
पास एक सुंदर कार हैं। उसमें बैठकर उसे बहुत आनंद आता हैं, उसमें सफ़र करता हैं। यहाँ तक तो ठीक हैं लेकिन उसमें आसक्त हो जाना, 'मेरी कार' और उसमें ही बुद्धि लगे रहना यह गलत होगा। मान लो, किसी को कोई विशेष तरह का भोजन बहुत अच्छा लगता हैं। उसे बनाने में, उसे खाने में, उसकी तैयारी करने में ही समय बिता देना तो समझो कि संगमयुग का यह अनमोल समय यूँ ही बित जायेगा।

तो आइये हम अपनी बुद्धि को चारो ओर से detached (अलग, लगाव मुक्त) करें। हमे महान कार्य करना हैं। जिन वस्तुओ को हमे छोड़कर जाना हैं उनसे अनासक्त हो जायें। उपयोग करें और अनासक्तभाव से उपयोग करें। तो वही चीजे हमे बाँधेगी नहीं, हमे सुख प्रदान करती रहेगी और हमारे ईश्वरीय मार्ग में हमारी सहयोगी भी बनी रहेगी।

तो आज सारा दिन इस स्वमान का अभ्यास करेंगे, "इस विश्व ड्रामा में मैं हीरो एक्टर हूँ और इस संसार में मेहमान हूँ। (अपने को देखे)। मैं आत्मा परमधाम से आई हूँ इस देह में। भृकुटी की कुटिया में बैठकर आँखो के द्वारा इस संसार को निहार रही हूँ। मैं तो इस देह में मेहमान हूँ। बाबा इस धरा पर आये और मुझे भी साथ में लाये हैं।" आज इसका अनुभव करेंगे कि बाबा के साथ मैं भी हूँ और उसकी शक्तियाँ मेरे साथ हैं।

ओम शांति...

ऋषर्ण युग की जीवन शैली



जैसे आजकल यहाँ मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियाँ सीखते हैं मनोरंजन के लिए, वैसे वहाँ के पंछी भिन्न-भिन्न सुन्दर आवाज़ों से आपके इशारे पर मनोरंजन करेंगे।

बाबा ने हम सभी को आकर स्मृति दिलाइ हैं, "बच्चे, यह संसार का खेल पूरा हुआ । तुम्हें अब अपने घर वापस जाना हैं ।" तो केवल यह स्मृति ही नहीं लेकिन हमे अपने घर जाने की बहुत खुशी होनी चाहिए । हम घर जायेंगे और फिर लौटकर आयेंगे अपने राज में, देव स्वरूप में जहाँ सबकुछ अथाह होगा । सुख-शांति, चैन, विश्राम, संतुष्टता सबकुछ संपन्न होगा । जहाँ कोई नकारत्मक शब्द होते ही नहीं । यह भारत भूमि भरपूर हो जायेगी, देवलोक बन जायेगा, सभी के चेहरो पर दिव्य तेज झलकता होगा, कंचन काया होगी, जहाँ विकारो का नाम निशान नहीं हैं, पवित्र-निर्मल प्यार, एक अति सुखमयी दुनिया..!

तो हमे घर जाना हैं और वापस देव बनकर आना हैं । अगर हम यह याद रखेंगे, अगर हमे इसकी स्मृति बहुत श्रेष्ठ अनुभवो के साथ होगी तो कर्मभोग यानी शारीरिक बीमारीयाँ भी हमे कष्ट नहीं देगी, ऐसा लगेगा कि शूली से काँटा हो गया हैं । बहुत बड़ी-बड़ी शारीरिक बीमारीयाँ जैसे सहज जा रही हैं क्योंकि यह आत्मिक बल हमारे देह के सभी रोगो पर सदा ही विजयी रहेगा । जिनका आत्मिक बल बहुत बढ़ा हुआ होगा, देह की पीड़ायें उन्हें जैसे होगी ही नहीं, महसूस ही नहीं होगी चाहे शरीर में कितना भी कष्ट क्यों न हो ।

तो हम ऐसा अभ्यास करेंगे कि अपनी देहिक पीड़ाओ से या किसी भी भयानक रोग से परेशान होने की आवश्यकता नहीं हैं । यह देह में आये हैं ऐसा अनुभव करें, भले ही आत्मा ही भोगती हैं लेकिन अशरीरी होकर हमे ऐसा अनुभव करना हैं कि मानो, "यह रोग मुझे हैं ही नहीं, यह देह अलग हैं, यह (रोग) देह से संबंधीत हैं, मैं तो इनसे मुक्त हूँ । मुझ पर इनका कोई प्रभाव नहीं हैं ।" ऐसी स्थिति के लिए हम अपने मनोबल को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर रखे और स्वीकार कर ले, "यह बीमारीयाँ तो आती ही हैं... आई हैं सो चली जायेंगी ।" बीमारीयों में भी हम अपने सुप्रिम सर्जन को न भूले । बीमारीयों का इलाज होगा इस अच्छी अनुभूति से कि, "बाबा मेरा सुप्रिम सर्जन हैं..!" और बस अपने को उसके आगे समर्पित कर दे कि, "बाबा यह मेरी बीमारी हैं और इसे तुम्हें हरना हैं ।" सुप्रिम सर्जन के लिए कुछ भी कठिन नहीं हैं और इस खुशी में रहे, इसको अनुभव करें कि "मैं ऐसे सुप्रिम सर्जन के पास पहुँच गया हूँ/गई हूँ जिसके वश से कुछ भी बाहर नहीं हैं ।" जैसे दुनिया में कोई बड़े सर्जन या बड़े डॉक्टर से मुलाकात हो जाये तो बीमारीयाँ सहज समाप्त हो जाती हैं । तो हमारा तो बाप ही स्वयं सुप्रिम सर्जन हैं..! तो ऐसी अनुभूति में रहेंगे तो यह सब बीमारीयाँ गई की गई । अब यह विदाई लेने के लिए आ रही

हैं। तीन युग तो क्या, लेकिन 4500 वर्ष तक कोई बीमारी होगी ही नहीं। उसके बाद भी जीवन में कोई एक बार छोटी-मोटी बीमारी आया करेगी।

तो हम बहुत सुखी संसार में जा रहे हैं, श्रेष्ठ भाग्य को पाने वाले हैं। आज इस स्वमान में रहेंगे, "मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं है..!" और "मैं आत्मा यह देह छोड़कर घर जा रही हूँ।" जाने का अच्छा अनुभव करेंगे, अपने को विज्युलाईझ (देखेंगे) करेंगे... जाकर बैठ जाये शांतिधाम में... महसूस करेंगे शांतिधाम की स्वीट साईलेन्स (मधुर शांति) को... महसूस करेंगे अपने घर में चैन और विश्राम को... फिर वहाँ से "मैं आत्मा नीचे आ गई... देवता बन गई..." अपने को देव स्वरूप में देखेंगे, सजा-सजाया रूप... "यह हैं मेरा भविष्य स्वरूप, यह हैं मेरा अगला जन्म..!" -इस अनुभव में, इस नशे में रहेंगे। आने और जाने का अभ्यास करते हुए आज अपने को श्रेष्ठ भाग्य के धनी महसूस करते रहेंगे।

ओम शांति...

हमारा यह जीवन बहुत-बहुत मूल्यवान हैं। अपने जीवन को स्वयं महत्व दे, अपने अनमोल समय की कीमत को पहचाने और जान ले कि हमारा एक-एक संकल्प बहुत ही कीमती हैं, बड़ा महान हैं, उसकी शक्ति सारे संसार को पहुँचती हैं। अगर हम व्यर्थ सोचते हैं तो वह नकारत्मक उर्जा भी वायुमण्डल में फैलकर वातावरण को दुषित करती हैं और स्थापना के कार्य में सूक्ष्मरूप से बाधा पड़ती हैं। इसलिए हमें ध्यान रखना है।

इस समय हम सभी अपने विकर्म विनाश करने के लिए बाबा से योग लगा रहे हैं। जितना शक्तिशाली हमारा योग लगेगा अर्थात् मन निर्संकल्प रहकर एक की याद में मग्न हो जायेगा उतने ही हमारे विकर्म विनाश होंगे और जितने-जितने हमारे विकर्म विनाश होंगे, हमारे संस्कार बदलते जायेंगे, हम बहुत हल्के होते जायेंगे, हमारी खुशी बढ़ती जायेगी, हमारे विघ्न समाप्त होते जायेंगे, हमारी स्थिति में वृद्धि होगी।

तो हम ध्यान दे, हमें विकर्म विनाश अवश्य करने हैं क्योंकि हमने विकर्म अगर विनाश न किये तो उनका फल हमें भोगना पड़ेगा और वह बहुत भयानक होगा क्योंकि विकर्म थोड़े नहीं हैं। 2500 साल में न जाने कितने विकर्म किसने कर लिए हैं..! इसलिए अब बहुत अच्छी तपस्या कर के स्वयं को विकर्माजीत बना देना है और जैसे-जैसे हम विकर्मों से मुक्त होते जायेंगे, एक सूक्ष्म स्वरूप, एक सूक्ष्म पहचान हम अपनी कर सकेंगे कि हमसे अब और कोई विकर्म नहीं होगा। न झूठ, न चोरी, न ठगी, न किसी को धोका देने का, न क्रोध करने का, यह सब चीजें शांत होती जायेगी।

तो हम विकर्म विनाश कर रहे हैं। हमें यह ध्यान रखना है कि अब हमारे सूक्ष्म विकर्म न होते रहे क्योंकि अगर हम सूक्ष्म विकर्म करते रहेंगे तो उसकी सजा 100 गुणी हो जायेगी और हम हल्के नहीं हो पायेंगे, हम इन विकर्मों के बोझ से मुक्त नहीं हो पायेंगे।

तो आइये स्व-निरीक्षण करें, हम किसी की खुशी तो नहीं छिनते? हम किसी की स्थिति के लिए विघ्नरूप तो नहीं बनते? हमारे कारण कोई मनुष्य परेशान तो नहीं रहता है? हमारी दृष्टि देह पर तो सदा नहीं रहती है? देह का आकर्षण तो हमें नहीं है? या देहधारियों के बारे में बहुत सारे विकल्प तो हमारे मन में नहीं चलते हैं? क्योंकि यह सभी सूक्ष्म विकर्म हैं और यदि यह बढ़ते रहे तो आत्मा बोझिल होती जायेगी और बोझिल आत्मा, बोझिल मन कभी उपर उड़ नहीं सकेंगे। हमारा योग भी बहुत भारी और कठिन हो जायेगा और जीवन में खुशी भी

बिलकुल नष्ट होती जायेगी। जिनको व्यर्थ बहुत चलते हैं, जिनका योग नहीं लगता, जो बहुत परेशान रहते हैं वो समझ ले कि कोई न कोई सूक्ष्म विकर्म अवश्य हो रहा है।

तो आइये हम सभी विकर्मों से मुक्त बनकर निर्विकारी बने, विकर्माजीत बने, ताकि हमारे द्वारा इस स्थापना के कार्य में सदा महान योगदान होता रहे। केवल धन दे देना, केवल तन लगा देना ही, केवल यज्ञसेवा कर लेना ही पर्याप्त नहीं हैं लेकिन हमे बहुत-बहुत योगयुक्त रहकर, विकर्माजीत बनकर इस स्थापना के कार्य को संपन्न करना है।

तो आज हम स्वमान में रहेंगे, "मैं राजऋषि हूँ... बहुत रॉयल हूँ... लाईट हाउस, माईट हाउस फ़रिश्ता हूँ... मुझसे चारो ओर निरंतर वायब्रेशन्स फैलते हैं... मेरी लाईट के प्रभाव से संसार का अंधकार दूर होता है।" और थोड़ी-थोड़ी देर के लिए चलेंगे परमधाम, ज्ञानसूर्य की किरणों के नीचे और बहुत सुंदर अनुभूति करेंगे.

ओम शांति...

हर मनुष्य जीवन में सफलता चाहता है। सफल जीवन देखकर हर मनुष्य बहुत प्रसन्न रहता है। जिसको जीवन में सफलता न मिले उसकी तो खुशी गुम रहती ही है। हम सब चाहेंगे कि कदम-कदम पर हमे हमारे कार्यों में, हमारे पुरुषार्थ में हमे सफलता मिले। हमारे संबंध भी सफल हो, या जो भी हम कोई कार्य करते हैं, कोई प्रमोशन चाहता हैं, कोई इंटर्व्यू देता हैं, कोई परीक्षा देता हैं... सब सफल हो! बहुत बड़ी आकांक्षा हैं मनुष्य की। यद्यपि हमारी सफलता हमारे कर्मों पर भी आधारित हैं। आजतक यह देखा गया कि जिसकी मनोस्थिति बहुत श्रेष्ठ हैं, जिसके कर्म बहुत अच्छे हैं उन्हें सहज सफलता मिलती हैं और जिनके कर्म अच्छे नहीं हैं उन्हें नौकरी पाने में भी काफ़ी कष्ट होता है, समय लगता है।

तो एक तो हम अपने कर्मों पर ध्यान दे। दूसरा, पास्ट के कर्मों का खाता भी हमारी सफलता में कहीं-कहीं बाधक बनता है, उसको हम योगबल से ठीक करते चले और पुण्य का खाता भी बढ़ाये ताकि पाप का प्रभाव कम होता रहे। परंतु मुख्यरूप से वर्तमान में हमारी सफलता निर्भर करती हैं कि कितना हममें आत्मविश्वास हैं और बाबा के बहुत सुंदर महावाक्य हैं, "यदि तुम शिवबाबा से कंबाइण्ड रहो तो सफलता तुम्हारे आगे पीछे घूमती रहेगी।"

'मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सर्वशक्तिवान बाबा मेरे साथ हैं', यह स्मृति सदा रखना माना बाबा से कंबाइण्ड रहना। शिवबाबा को अपने सिर के उपर छत्रछाँया महसूस करना यह उसका कंबाइण्ड स्वरूप हैं और जो ऐसे अभ्यास में रहते, सर्व शक्तियों पर उनका अधिकार होता जायेगा और यह शक्तियाँ उनको सफलता की ओर ले चलेगी। हमे यह अभ्यास भी बहुत रखना हैं लेकिन साथ-साथ यह बहुत ध्यान रखना हैं कि हम नेगेटिव (नकारात्मक) तो नहीं हैं? यदि हमारे मन में सारा दिन नेगेटिव विचार चलते हैं तो हमारी शक्तियाँ नष्ट होती रहती हैं। नेगेटिव विचार केवल उस कार्य के लिए नहीं लेकिन अनावश्यकरूप से ही व्यर्थ हम सोचते रहते हैं। इससे हमारी आंतरिक शक्तियाँ नष्ट होती रहती हैं और जिसने अपने आंतरिक व्यक्तित्व बहुत नेगेटिव बना लिया हैं, जिसने अपने दृष्टिकोण को बहुत नेगेटिव कर लिया हैं, जिसके मन में बदले की भावना बहुत रहती हैं या अंदर ही अंदर मनुष्य क्रोधित रहता हैं उसे सफलता कभी नहीं मिलती। सफलता ऐसे व्यक्ति से कोसो दूर चली जाती हैं।

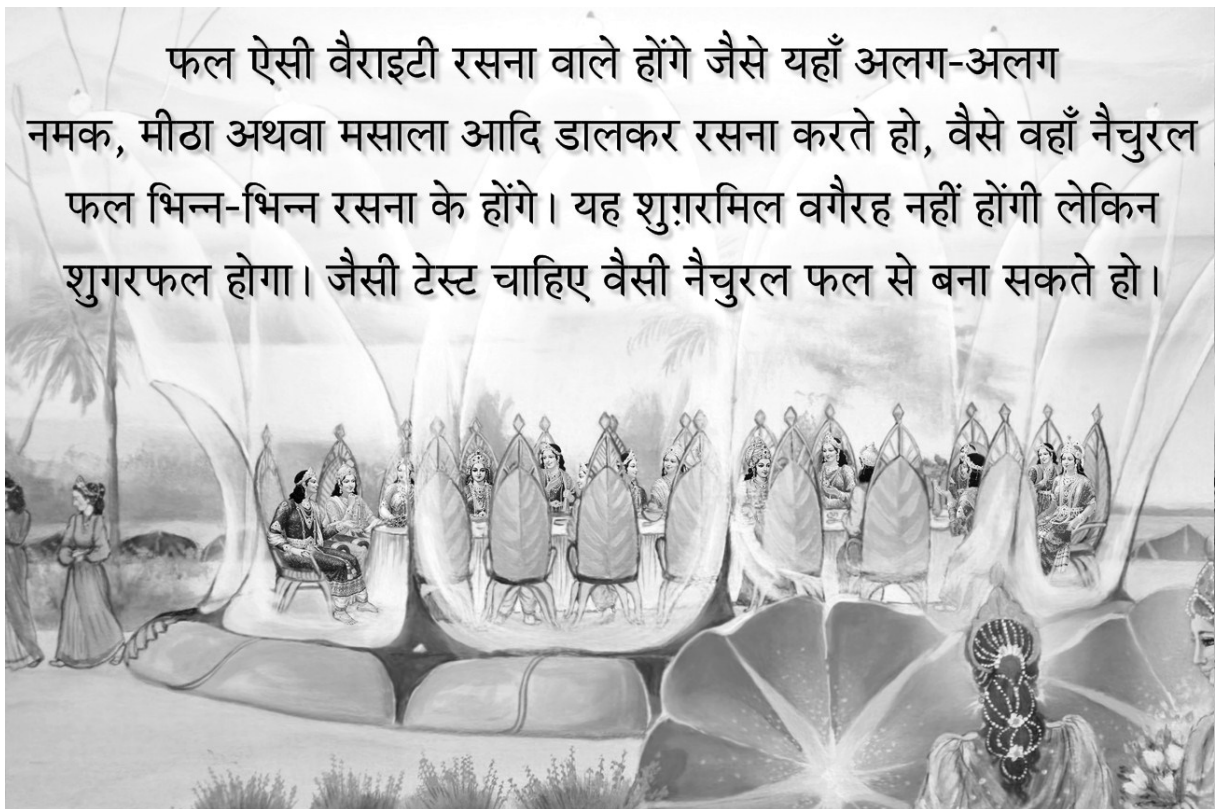
तो हम अपने चित्त को बहुत शांत करें और 'बी पॉज़ीटीव', हमेशा अच्छा सोचने की आदत डाले। अपने मन को बहुत निर्मल करें, मन में जो नेगेटिविटी (नकारात्मकता) का उद्वेग

रहता हैं, मन में जो वासनाओ की उत्तेजना रहती हैं इससे सफलता हमसे दूर चली जाती हैं । चाहे बीमारीयों की बात हो, हमे सफल इलाज कराना हो, हमे जल्दी उनको ठीक करना हो तो हम इन वासनाओ के प्रकोप को रोकने का प्रयास करें क्योंकि यह पवित्रता की शक्ति ही सबसे बड़ी इलाज की शक्ति हैं । इसके बल से ही हम सदा स्वस्थ रह सकते हैं । जब मनुष्य के अंदर ब्रह्मचर्य बहुत ज्यादा रहता था, जब उसका गृहस्थ जीवन भी बहुत संयमित था तब उसको रोग घेरे नहीं रहते थे । आज तो हर मनुष्य रोगो से घिरा हुआ हैं ।

तो हमे इन वासनाओ पर नियंत्रण रखना हैं और सफलता हमारे चारो ओर घूमती रहे इसके लिए आज सारा दिन और 'सदा ही' यह अभ्यास करना हैं, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और बाबा मुझसे कंबाइण्ड हैं..." साथ-साथ फ़रिश्ते सो देवता का अभ्यास भी करेंगे, अपने दोनो स्वरूप सामने देखेंगे । लेफ़्ट साईड में हैं मेरा फ़रिश्ता स्वरूप, राइट साइड में हैं मेरा देव स्वरूप और इधर "मैं ब्राह्मण आत्मा इस देह में, यह मेरा बहुत मूल्यवान देह में मैं विराजमान हूँ... अब इस देह को छोड़कर मैं जाती हूँ फ़रिश्ते रूप में... (कुछ देर इसकी अनुभूति करें) फिर वहाँ से निकलकर जाती हूँ देवस्वरूप में ।" यह पाँच बार अवश्य कर ले अपने घर में हर घंटे में, तो बहुत सुखद अनुभव होगा ।

ओम शांति...

ऋषी युग की जीवन शैली



फल ऐसी वैराइटी रसना वाले होंगे जैसे यहाँ अलग-अलग नमक, मीठा अथवा मसाला आदि डालकर रसना करते हो, वैसे वहाँ नैचुरल फल भिन्न-भिन्न रसना के होंगे । यह शुगरमिल वगैरह नहीं होंगी लेकिन शुगरफल होगा । जैसी टेस्ट चाहिए वैसी नैचुरल फल से बना सकते हो ।

जीवन में खुशी और उमंग-उत्साह सदा ही कायम रहे इसका बड़ा महत्व होता है । जिसके जीवन में कोई उमंग, उत्साह न हो उसका जीवन तो निरस हो जाता है । उमंग, उत्साह तो वास्तव में हमारे पंख हैं जिनके द्वारा हम खुशी में उड़ते रहते हैं । उमंग, उत्साह ही हमारे ब्राह्मण जीवन की श्वास हैं जिससे हम जीने का सुख लेते हैं । तो हम अपने जीवन को उमंग, उत्साह से भरपूर करें ।

हम ब्राह्मणों के लिए यह बहुत सहज है क्योंकि बाबा ने हमें एक महान लक्ष्य दे दिया है । दुनिया में भी जब किसी के सामने कोई लक्ष्य होता है, कोई बड़ा कार्य होता है, उसको करने की एक समयसीमा होती है तो कितना मन में उमंग, उत्साह रहता है और उस उमंग-उत्साह के कारण मन अनेक व्यर्थ बातों से मुक्त रहता है । हमें भी बहुत महान लक्ष्य दिया है- 'संपूर्ण बनना है, कर्मातीत बनना है, बाबा से सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करने है । अपनी झोली सर्व खजानों से भरनी है, बाबा हमें सबकुछ देने आया है । उससे हमें सबकुछ ले लेना है ।' यह हमारे लक्ष्य हैं ।

विचार करें, क्या सचमूच हमने अपने जीवन का कोई महान लक्ष्य बनाया है? अवश्य बना ले, तीन-तीन मास का लक्ष्य बना ले । बहुत अच्छी अनुभूति होगी । छोटासा लक्ष्य बना ले तीन पॉइंट्स का । एक पॉइंट कोई धारणा रख ले कि, 'तीन मास में मुझे यह धारणा जीवन में ले आनी है ।' दो-चार स्वमान रख ले जिसका आपको अभ्यास करना है । अपने योग का एक चार्ट बनाने का लक्ष्य रख ले कि, 'तीन मास में मुझे रोज़ दो घंटे योग करना है या चार घंटे योग करना है या इससे ज्यादा योग करना ।' यह लक्ष्य हमें बहुत महान बना देते हैं ।

ऐसे ही हमारा लक्ष्य है कि हमें संसार को दुःखो से मुक्त करना है, हमें आगे चलकर बड़ेबड़े कार्य करने हैं । तो एक उमंग साथ में ले कर हम हमेशा चले । "मुझे यह करना है ।" कभी भी जीवन में ढीलाई न आये । अपने को चेक करें, एक दृष्टि अपने जीवन पर अवश्य डाले । हम संगमयुग के यह दिन कैसे बीता रहे हैं? उमंग-उत्साह में या उलझन में? व्यर्थ संकल्पों में या बेकार की छोटीमोटी बातों के चक्करो में? हमें यह जीवन ईश्वरीय सुखों में बीताना है तो एक उमंग ले ले कि, "वाह! मुझे तो बाबा से सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त कर लेना है और इस भाग्य को प्राप्त करने में मुझे कोई भी रोक नहीं सकेगा ।" जब मनुष्य के मन में बहुत उमंग-उत्साह होता है तो इसको ही दूसरे शब्दों में कहते हैं कि, "जब बहुत लगन होती तो लगन की अगन में सभी विघ्न नष्ट हो जाते हैं ।" जहाँ मनुष्य के जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है वहीं विघ्न

उसको धराशायी कर देते हैं, वहीं विघ्न उसके उपर हावी होकर रहते हैं, उसका जीवन विघ्नमय हो जाता है। लेकिन जहाँ लगन की अग्नि तेज़ प्रज्वलित है, उसमे ही हम लगे हुए हैं, विघ्नो की ओर हमारा ध्यान ही नहीं है, कौन क्या कह रहा है? इसकी हमे चिंता ही नहीं है, हम तो अपने महान लक्ष्य को पाने में लगे हुए हैं तो 'विघ्न' विघ्न रहते ही नहीं। उनका आभास हमे कभी होता ही नहीं।

तो हम अपने महान लक्ष्य की ओर चले। संसार क्या कहता है? लोग क्या कहते हैं? इसकी चिंता न करें तो जीवन उमंग-उत्साह से सदा भरपूर रहेगा।

तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे घर जाने का और वापस इस देह में आने का। अभ्यास करेंगे, "यह संसार का 84 जन्मो का खेल अब पूरा होता है। अब यह देह छोड़कर मैं आत्मा उड़ चली अपने धाम और उड़ते-उड़ते पहुँच गई परमधाम में, बाबा के पास और कुछ देर वहाँ रहकर फिर मैं आत्मा वापस उतरी और नीचे आ गई पुनः अपने देह में।" इससे अशरीरीपन का बहुत सुंदर अनुभव होगा।

ओम शांति...

सफल व्यक्ति इस संसार में अपने को बहुत ही भाग्यवान महसूस करता है। जब मनुष्य को हर कर्म में और हर कदम पर सफलता मिलती है तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता है। ऐसा कौन मनुष्य होगा जो सफलता की माला अपने गले में न डलवाना चाहता हो! परंतु सफलता के बहुत सारे आधार हैं। कुछ बातों की चर्चा हम यहाँ करेंगे।

किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए, चाहे बीमारीया ठीक करने में सफलता मिले, नौकरीयो में प्रमोशन में सफलता मिले, बिजनेस में सफलता मिले, विद्यार्थीयो को पढ़ाई में सफलता मिले, हमारे संबंध सफल रहे। जो भी क्षेत्र हो, उसमें सफलता का आधार है एक बल, एक भरोसे जीना। केवल सर्वशक्तिवान में ही विश्वास करना, उस पर विश्वास रखना कि वह हमारे साथ है, हमारी सफलता निश्चित है। क्योंकि जितना हमे निश्चय रहता है उतनी ही सफलता निश्चित होती है। जो निश्चित है उनकी सफलता भी निश्चित है और निश्चित रहने का आधार निश्चय है। स्वयं में निश्चय, बाबा में निश्चय, अपने भविष्य में निश्चय, अपनी सफलता में निश्चय।

हम सभी ध्यान दे कि कहीं हमे स्वयं में ही संदेह नहीं रहता कि "हम सफल होंगे या नहीं होंगे?" एक स्टूडेंट मेडिकल की एंट्रन्स एक्जाम देकर आई है। उसको बारबार संदेह हो रहा है, "मुझे सफलता मिलेगी या नहीं मिलेगी?" और वह बहुत परेशान है, उसने अपने अंतरमन में शायद यह भर लिया है कि मुझे सफलता नहीं मिलेगी, तो जरूर नहीं मिलेगी। लेकिन वह अपने अंतरमन में यह निश्चय करले कि सफलता मेरी ही होगी तो सफलता उसे अवश्य मिलेगी। तो निश्चय की अपने लेवल को बढ़ाते चले।

सफलता का आधार है दुआये। हमे महान दुआये प्राप्त करनी है। हमे स्वयं भगवान दुआये दे रहा है। विचार कर ले, अगर अपने परमपिता की दुआये लेनी है तो क्या करना होगा? उसके दिल को जितना होगा, उसके आज्ञाकारी बनना होगा, अच्छे योगी बनना होगा। अगर वह कहते हैं कि अपनी समस्याये मुझे अर्पित करके तुम बेफिक्र बादशाह बन जाओ तो हमे ऐसा करना होगा। यदि वह कहते हैं कि तुम पवित्र बन जाओ, तुम परचिंतन से मुक्त हो जाओ, तुम व्यर्थ को विदाई दे दो तो हमे ऐसा करना होगा तब हमे बाबा की दुआये मिलती रहेगी। हम उन्हें प्रसन्न करते रहेंगे, हम उन्हें सुख देते रहेंगे, हम उनके कार्यों में सहयोगी बनेंगे, हम यज्ञ की सेवाओ में उनको मदद करेंगे तो महान आत्माओ की दुआये भी हमारे साथ रहेगी और यह दुआये सचमूच हमे सफलता की ओर ले चलती है। कठीन से कठीन कार्यों को

सरल कर देती हैं, असंभव कार्यों को संभव बना देती हैं। तो हम लक्ष्य रख ले कि हमें किसी को बददुआये भी नहीं देनी हैं, कोई हमें बददुआये दे भी तो हमें उसे दस दुआये दे देनी हैं। इस तरह हम अपने मन को भी खुशीयो से भरपूर रखेंगे और दुआओ के खजाने से भी भरपूर तो सचमूच हमें सफल होने में कोई भी रोक नहीं सकता। जिसके कर्म अच्छे नहीं होते, जिनका मन अच्छा नहीं होता उनको सफलता मेहनत के बाद भी नहीं मिलती है।

तो आज सारा दिन हम इस स्वमान में रहेंगे, "मैं तो सफलतामूर्त हूँ। मुझे बाबा का वरदान है। बापदादा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है" और वह कह रहे हैं, "बच्चे, सफलतामूर्त भव"। कोई भी कार्य करने से पहले इसको स्मृति में रखकर ही कार्य की ओर चलेंगे और साथसाथ हम उपर की ओर देखेंगे और बापदादा का आह्वान करेंगे। हर घंटे में बाबा का अवश्य आह्वान करेंगे, उनसे दृष्टि लेंगे, उनके वरदानी हाथ अपने सिर पर अनुभव करेंगे।

ओम शांति...

बाबा ने हमें एक बहुत बड़ा कार्य दिया है और टाइटल (नाम) भी दिया, "तुम हो मास्टर सुखकर्ता, दुःखहर्ता... तुम्हें दूसरो के दुःख हरने हैं। आगे चलकर तुम्हें सारे संसार को दुःखो से मुक्त करना होगा।" और एक बहुत ही बड़ी बात कह दी, "जब तक तुमने सभी को दुःखो से मुक्त नहीं किया, तुम घर नहीं जा सकोगे।"

तो जैसे एक डॉक्टर का कर्तव्य होता है किसी की बीमारी ठीक करना, हमारा भी यह परम कर्तव्य है कि हम दूसरो के दुःख हरते चले। संसार में दुःखो की बाढ़ आई हुई है और यह दुःख दिनोदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। भगवानुवाच, दुःखो के पहाड़ गिरने वाले हैं संसार में क्योंकि विनाश का खेल प्रारंभ होगा और सभी को उनके कर्मों की सजा मिलेगी और वह सजा मनुष्य को बहुत पीड़ीत करेगी, मानसिक रूप से भी, शारीरिक रूप से भी, व्यवहारीक रूप से भी, संबंध और संपर्कों में भी..!

तो हम अपने को सुखो के खजाने से इतना भरे कि हम दूसरो के दुःखहर्ता बन जाये। इसके लिए आवश्यक है कि हम लम्बा काल दुःख से मुक्त रहे। दुःख की सूक्ष्म लहर भी हमें स्पर्श न करें। दुःख और सुख जीवन में आते हैं। यह ज्ञात होते हुए भी कि यह दुःख हैं, हम दुःखी न हो। हम साक्षीभाव अपना ले, दुःख में भी सुख की अनुभूति करें। इसका अर्थ है कितना भी दुःख हो, चाहे शारीरिक बीमारीयाँ हो लेकिन हम अशरीरी होकर रहे, बाबा के छत्रछाँया में रहे, इस अनुभव में रहे कि वह हमारे साथ हैं, हमारा बाप ही दुःखहर्ता-सुखकर्ता हैं। तो एक आंतरिक सुख का अनुभव रहेगा और वह दुःख बहुत कम हो जायेगा।

दूसरी बात, हम स्वयं में ईश्वरीय सुख भरे। जब हमारे अंदर सुखो का खजाना भरपूर होगा तो जिस पर भी हम नज़र डालेंगे उसके दुःख समाप्त होते जायेंगे, हमारे बोल दूसरे के लिए सुखदायी बन जायेंगे, हम संकल्पो से ही वायब्रेशन्स देकर दूसरो के दुःख हर सखेंगे। तो हम लम्बा काल तक अपने अंदर सुखो के खजाने भरे। सवेरे-सवेरे हमें बहुत सुख मिलता है। आँख खुलती है और प्रभुमिलन होता है, आँख खुलती है और हम योग-अभ्यास करते हैं। हम उठते ही हैं भगवान से मिलने के लिए, हम उठते ही हैं उससे सर्व खजाने लेने के लिए..! बहुत सुख मिलता है सवेरे-सवेरे। जितना हम आत्माभिमानि होकर बैठते हैं, स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं तो हम बहुत सुख अनुभव करते हैं। यह सुख का खजाना हमारे अंदर भरता जाता है।

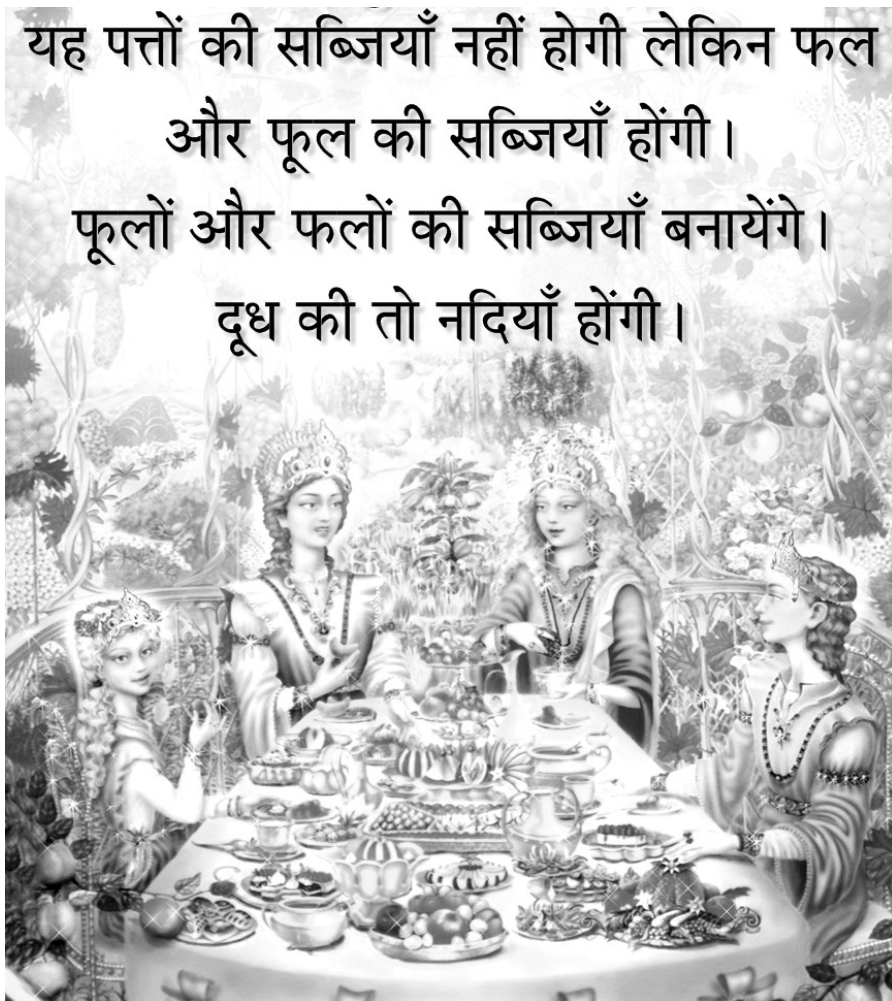
हम अपना सुख बढ़ाये मुरलीयों से । मुरली माना भगवान हमसे बाते करता हैं, वह हमसे रुह्रुहान करता हैं, मुरली माना बाबा हमे अनेक स्मृतियाँ दिलाता हैं, हमारे सुखो के दिनो की याद दिलाता हैं और याद दिलाता हैं कि तुम्हारे सुखो के दिन आये कि आये..! यह सुखो का खज़ाना हम बढ़ाते चले सारा दिन पुण्य कर्म करके, दूसरो को सुख देकर, यज्ञसेवा करके हम यह सुखो की पूंजी अपने में भरते चले । तो जितनी-जितनी हम पूंजी यह भरेंगे उतना ही हम दूसरो को बाँट सकेंगे ।

तो आज सारा दिन इस स्वमान में रहेंगे, "मैं मास्टर सुखकर्ता-दुःखहर्ता हूँ ।" और सारे संसार को वायब्रेशन्स देंगे हर घंटे में एक बार इस संकल्प से कि सभी के दुःख समाप्त हो जाये । विधि :- ग्लोब के उपर हम हैं, सर्वशक्तिवान पर बुद्धि स्थिर हैं । उसकी शक्तियों की किरणे हममें आ रही हैं, और हमसे चारो ओर फैल रही हैं और शक्तियों की किरणे सभी के दुःख हर रही हैं । -यह अभ्यास हर घंटे में एक बार अवश्य करेंगे ।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

यह पत्तों की सब्जियाँ नहीं होगी लेकिन फल
और फूल की सब्जियाँ होंगी ।
फूलों और फलों की सब्जियाँ बनायेंगे ।
दूध की तो नदियाँ होंगी ।



हम यह जानते हैं कि श्रेष्ठ कर्मों का पदमगुणा फ़ल हमें मिलना ही है। जो ईश्वरीय कार्यों में सहयोगी बन गये, जो यज्ञसेवा में तत्पर हैं, जो पुण्यकर्म कर रहे हैं उनको उनका बहुत फ़ल मिलेगा ही लेकिन यदि हमारी यह इच्छा रहती है कि तत्काल फ़ल मिल जाये मतलब हमारा नाम हो जाये, हमें बहुत मान मिले, हमें इस कर्म के बदले में यह सुविधा मिल जाये तो इसको कहेंगे 'कच्चा फ़ल खाना'। वास्तव में कच्चा फ़ल तो नुक़सान ही करता है। हमें प्रत्यक्ष फ़ल अवश्य प्राप्त करना चाहिए और प्रत्यक्ष फ़ल हैं अतिंद्रिय सुख, प्रत्यक्ष फ़ल हैं बहुत सूक्ष्म अंतर की गहराई की संतुष्टता। तो हम कच्चा फ़ल न खाये। कर्म करके प्रभुअर्पण कर दिया करें तो और ज्यादा फ़ल मिलेगा क्योंकि अगर मानशान की हमारी इच्छा रहती है तो यह इच्छा हमें अच्छे कर्म नहीं करने देती। यह कामना हमें कमज़ोर करती है और कहीं-कहीं यदि हमारी यह कामना पूरी भी हो जाये तो यह कामना मनुष्य के अभिमान को बढ़ा देती है, उसके मैं-पन में वृद्धि कर देती है। हम इनसे बचेंगे और यह बहुत सुंदर बात ध्यान रखेंगे, "जो इस नाम, मान, शान की कामना से न्यारे हो जाते हैं उन्हें सारा संसार मान देगा।" जैसे मंदिरो में इष्ट देव, देवीयो को मान देने के लिए भक्त लाइन लगाकर खड़े रहते हैं वैसे ही जो मान, शान की कामना से परे हो जायेंगे वह सच्चे दिल से मान प्राप्त करने के अधिकारी बन जायेंगे, सारा संसार केवल बाहर से नहीं, उन्हें खुश करने के लिए नहीं लेकिन उन्हें मान देकर भी अपने को गौरांवित (प्रसन्न) महसूस करेगा।

तो आइये हम ऐसे कच्चे फ़ल का त्याग करें, पुण्यकर्म निष्काम भाव से करते चले, तृप्त होकर करते चले, इस अनुभूति से करते चले कि, "यह महान कार्य करने की योग्यता या शक्ति हमें मिली है वह परमात्म देन है।" इस परमात्म देन में हम कभी मैं-पन न आने दे। अगर परमात्म देन में मैं-पन आ जाता है तो इससे हमारे पुण्य समाप्त हो जाते हैं। भूल से भी हमें यह मैं-पन नहीं आने देना है अन्यथा याद रखेंगे बाबा के महावाक्य, "मेरापन आना माना खजानो को गवाँना" क्योंकि मैं-पन आने से दूसरे लोग अवश्य ऐसा समझ जाते हैं और उनकी ओर से एक अच्छी दृष्टि नहीं मिल पाती है। तो हम कर्म करने की ऐसी कला को अपनाये कि हमारा हर कर्म निष्काम भाव को लेकर हो रहा हो। जैसे हम कर्म विश्वकल्याण के लिए करते हैं, जैसे बाबा विश्व का कल्याण करते हैं और उसके रिटर्न में उन्हें कुछ भी पाने की इच्छा नहीं, वह यह भी नहीं चाहते कि बच्चे मेरा सम्मान करें, मेरी महिमा करें। ठीक ऐसे ही हमें भी फ़ॉलो करना है और यह अनुभव बढ़ा देना है कि, "मैं विश्व कल्याणकारी हूँ। मुझे हर कर्म निष्काम भाव से करना है बाबा की तरह।" महान कर्म करते चले, दूसरो को मदद करते चले और

बदले में लेने की कोई भी कामना न रहे । सूक्ष्मरूप से चेक करले, 'हमे देने की वृत्ति हैं? या लेने की सूक्ष्म इच्छा रहती हैं?' चाहे स्थूल चीज़े या सूक्ष्म बाते हो लेकिन हम तो दाता हैं, दाता के बच्चे हैं, देते चले, हमारे भण्डारे भरपूर रहेंगे ।

तो आज सारा दिन हम इस स्वमान का अभ्यास करेंगे, "मैं मास्टर क्रियेटर (रचयिता) हूँ, दाता हूँ" और अभ्यास करते रहेंगे कि बाबा की शक्तियों की किरणे एक फ़व्वारे के रूप में मुझपर निरंतर पड़ रही हैं, जैसेकि शक्तियों के फ़व्वारे के नीचे हम स्नान कर रहे हैं ।

ओम शांति...

सभी ब्राह्मणों की, योगी आत्माओं की बहुत उंची स्थिति है कि सभी परिस्थितियों में आपदाओं में मनोरंजन का अनुभव हो। और यह स्थिति है मास्टर क्रियेटर (रचता) की। आपदाएँ तो आयेगी, भुंकें होंगे, गृहयुद्ध होंगे, और भी बहुत सारी आपदाएँ आयेगी। जल सबकुछ अपने में समा लेगा, कहीं अग्नि सबकुछ नष्ट करने लगेगी। लेकिन जिन्हें यह याद रहेगा कि यह सब प्योरीफ़िकेशन (शुद्धिकरण) का समय है, परिवर्तन का समय है, एक चीज़ जायेगी तो दूसरी अच्छी चीज़ आने वाली है। हम मास्टर क्रियेटर हैं और एक तरह से विनाशज्वाला भी इस रुद्रयज्ञ से ही प्रज्वलित होती है अर्थात् विनाश के निमित्त भी हम सबका योगबल ही बनता है। जो शंकर के लिए प्रसिद्ध है कि उसने तिसरा नेत्र खोला या तांडव नृत्य किया तो इस सृष्टि पर महाविनाश होने लगा। तो हम सभी योगी आत्माएँ जब अतिंद्रियसुख में निरंतर नृत्य करते रहेंगे, जब हमारा ज्ञान का तिसरा नेत्र पूरी तरह खुल जायेगा और सदा ही खुला रहेगा। अभी वह कभीकभी बंद हो जाता है लेकिन जब खुलेगा तब इस सृष्टि पर यह विनाशलीला का खेल चलेगा। भगवान के शब्दों में यह खेल है और मनुष्यों के लिए यह महान आपदा का समय होगा। हम भी इसे खेल की तरह देखेंगे।

यह परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। तो अभी से यह अभ्यास करें कि परिस्थितियों में अपने को एकरस और साक्षी स्वरूप में रह सकें। परिस्थिति तो आयेगी लेकिन हमें याद रखना है कि, "वही हो रहा है जो कल्प पहले हुआ था, नथिंग न्यू। वही हो रहा है जो होना ही है।" ऐसी ज्ञानस्वरूप स्थिति हम रखेंगे अर्थात् ज्ञान का तिसरा नेत्र हम खोलकर रखेंगे तो यह सबकुछ हमें मनोरंजन लगेगा।

हम सब जानते हैं, आप भी जानते ही होंगे कि राजाएँ हाथीओं की लड़ाई कराया करते थे और वह उनके लिए मनोरंजन होता था क्योंकि वह उनसे अपने को अधिक पॉवरफ़ुल समझते थे, क्योंकि वह अपने को मालिक समझते थे। हम भी यदि स्वराज्य अधिकारी के नशे में रहेंगे और अपने को मास्टर क्रियेटर समझेंगे तो यह बहुत बड़ा स्वमान है, इसको गहराई से समझना है कि हमारे पास क्रियेटिव (रचनात्मक) एनर्जी है, हम भी मास्टर ब्रह्मा हैं और हम इन सभी परिस्थितियों से बहुत अधिक पॉवरफ़ुल हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, ईश्वरीय शक्तियों से भरपूर हैं। ऐसी खुमारी में रहने वाले ही इन आपदाओं को मनोरंजन के रूप में देखेंगे।

तो हम सभी को अब बहुत कुछ देखना है इस सृष्टि पर। स्वयं को आनेवाली महान आपदाओं के लिए भी तैयार करें जिसमें हमारा मेरापन है वह सबकुछ जायेगा। इसलिए पहले

ही अभ्यास कर ले कि यह मेरा नहीं, तेरा है, प्रभुअर्पित कर दे । तो जब जायेगा तब हमे कोई भी कष्ट होगा नहीं और हम बहुत आनंद की स्थिति में रहेंगे ।

तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे, "जो कुछ इन आँखो से दिखाइ दे रहा है, कुछ ही समय के बाद वह सबकुछ नहीं रहेगा । यह माया के पोंप्स वाली चमकती हुई दुनिया अब समाप्त होकर स्वर्ग की इस नई दुनिया इस वसुंधरा पर आ जायेगी । एक दिन वह भी आयेगा कि यह धरती बहुत ज्यादा खाली हो जायेगी ।" इस तरह का चिंतन करते हुए अभ्यास करेंगे कि, "मुझे तो यह सबकुछ छोड़कर वापस जाना है और फिर देवता बनकर नीचे आना है ।" तो देवता बनकर अपने को उतरते हुए देखेंगे और फ़रिश्ता बनकर घर की ओर जाते हुए । हर घंटे में एक बार यह सुंदर अभ्यास अवश्य करेंगे ।

ओम शांति...

संगमयुग पर हम अपना 21 जन्मो का भाग्य निर्माण कर रहे हैं। भाग्य की कलम हमारे हाथ में हैं, हम अपना जैसा भाग्य चाहे वैसा लिख दे। बाबा ने कर्मों की गुह्य गति, बड़ी रहस्यमय गति हम सबको समझाई हैं।

विचार कर ले, हम अपने लौकिक कार्यों के लिए, थोड़ासा धन कमाने के लिए, एक जीवन में अपना जीवन चलाने के लिए 8-10 घंटे रोज़ मेहनत करते हैं और 21 जन्मो का सर्वश्रेष्ठ भाग्य पाने के लिए केवल एक घंटा..! कितनी बड़ी भूल हैं। हमे लज्जाना चाहिए। ऐसा भाग्य मिल रहा है कि 21 जन्मो तक कुछ भी कमाने की आवश्यकता नहीं रहेगी, प्रारब्ध ही प्रारब्ध होगी।

गुह्य गति की चर्चा बाबा ने इस तरह की हैं, "जो अपने समय को सफल करेंगे वह लम्बा काल राज्यभाग्य प्राप्त करेंगे।" कितनी बड़ी बात हैं! संगमयुग के समय के महत्व को जानना, कलियुगी मनुष्यो के समय का महत्व अलग हैं। उनके लिए भी समय महत्वपूर्ण हैं, किसी भी मनुष्य के लिए समय बहुत महत्व पहलू होता है परंतु हम सबके लिए समय अनमोल खजाना हैं। एकएक सेकण्ड में हम बहुत लंबी-चौड़ी कमाई कर सकते हैं। कितना बड़ा राज़ बताया, "जो अपने एकएक सेकण्ड को ईश्वरीय कार्यों में, योगयुक्त अवस्था में, ज्ञान के चिंतन में व्यतित करते हैं उन्हें सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होगा।" लम्बा काल राज्य, अर्थात कई जन्म उनके सिर पर ताज़ आ जायेगा।

दूसरी गुह्यगति, जिन्होंने अपने सांसो को सफल किया हर श्वास याद में बिताये, हर श्वास दूसरो को सुख देने में बिताये, उनका श्वास कभी बंद नहीं होगा। चारो युगो की गैरेंटी हो जायेगी, उन्हें कभी हार्ट-अटेक नहीं होगा, वह सदा स्वस्थ रहेंगे। श्वासो का बड़ा गहरा नाता हैं हमारे स्वास्थ्य से तो हम एकएक श्वास को पूरी तरह सफल करले यही हमारी बुद्धिमानी हैं।

ज्ञान के अनमोल खजाने को सफल करेंगे अर्थात ज्ञान का उपयोग करेंगे। हमे ज्ञान मिला है और उसकी सफलता है कि हम सबको ज्ञान दे, ज्ञान को महत्व दे, हम ज्ञानधन बाँटते रहे, हम ज्ञान के द्वारा दूसरो को अच्छी सलाह दे, हम ज्ञान के द्वारा दूसरो की समस्याओ का समाधान करें। ऐसा करने वालो को किसी भी जन्म में बुद्धि की कमी नहीं रहेगी और जब राजा होंगे तो उन्हें अपने वज़ीरो की भी आवश्यकता नहीं होगी, वह स्वयं ही सबसे अधिक बुद्धिमान होंगे। और जिसने अपने स्थूल धन को सफल किया होगा वह धनधान से भरपूर रहे

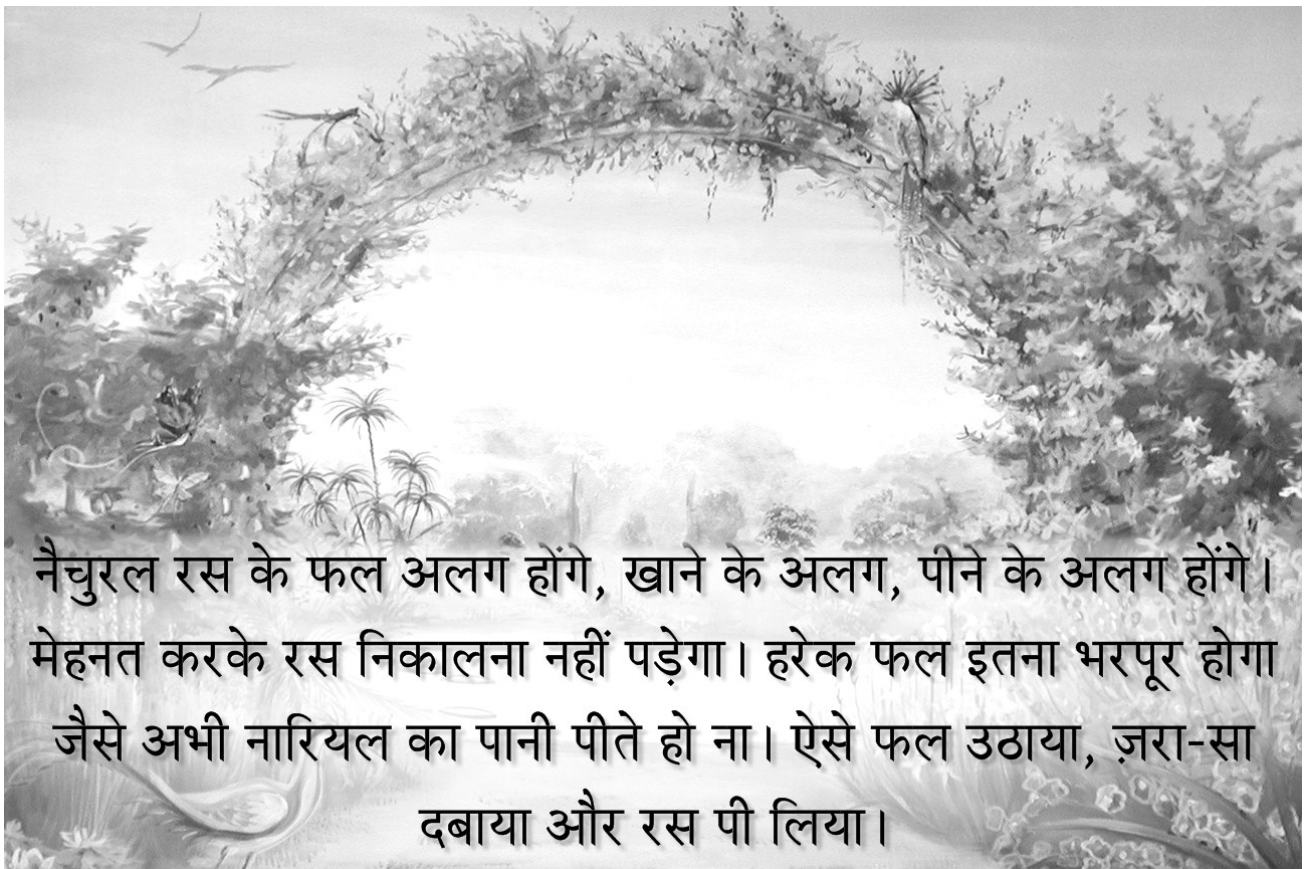
होंगे और जिन्होंने अपने धन को खानेपीने में, व्यर्थ में, दुन्यवी शौक्र पूर्ण करने में लगा दिया तो उनको धन का अभाव रहेगा । भले ही सतयुग, त्रेता में अथाह धनसंपदा हैं परंतु तुलनात्मकरूप से उनके पास बहुत कम होगा ।

तो आइये हम अपने सभी खजानो को सफल करें, शक्तियों को सफल करेंगे तो सदा शक्तिशाली बनकर रहेंगे । उनके राज्य में किसी भी शक्ति की कमी नहीं होगी । प्रकृति भी समय पर सबकुछ करेगी, मर्यादाओ के अनुकूल काम करेगी । तो हम सभी इस बात पर बहुत ध्यान दे कि हम अपने सभी खजानो को पूरी तरह सफल करें ।

तो आज सारा दिन, पाँच स्वरूपो को अभ्यास करेंगे, अपने भाग्य को सामने देखेंगे, "हमारा देवस्वरूप, जिसमे हम बहुत भाग्यवान हैं । हमारा पूज्य स्वरूप जिसमे हमारी जड़ मूर्तियाँ भी दाता हैं । हमारा फ़रिश्ता स्वरूप जिसके द्वारा हम विश्व का कल्याण करेंगे ।" तो इन पाँचो स्वरूपो को हर घंटे में एक बार स्मृति में अवश्य लायेंगे, इससे हम व्यर्थ से मुक्त रह सकेंगे ।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



नैचुरल रस के फल अलग होंगे, खाने के अलग, पीने के अलग होंगे । मेहनत करके रस निकालना नहीं पड़ेगा । हरेक फल इतना भरपूर होगा जैसे अभी नारियल का पानी पीते हो ना । ऐसे फल उठाया, ज़रा-सा दबाया और रस पी लिया ।

हम सभी कितने भाग्यवान हैं कि स्वयं भगवान हमें ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ा रहे हैं, एक सुंदर विद्या हमें प्रदान कर रहे हैं। जो राजयोग उन्होंने कल्प पहले सीखाया था वही पुनः सीखा रहे हैं। ऐसी पढ़ाई संसार में और कोई होती ही नहीं। हम एक महान युनिवर्सिटी के विद्यार्थी और महान सुप्रीम टिचर के स्टूडेंट हैं। ऐसी पढ़ाई जिससे हमें डबल सिरताज़ राजाई प्राप्त होती है। जरा सोचे, ऐसी पढ़ाई पढ़ने के लिए हम कितना ध्यान दे रहे हैं? क्या ऐसी पढ़ाई पर हमारा संपूर्ण अटेंशन है या हमारे पास पढ़ने के लिए समय ही नहीं है? क्या है हमारी स्थिति? हमारे पास और चीज़ों के लिए समय है, टीवी देखने के लिए समय है, इधर-उधर की किताबें, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए बहुत समय हैं परंतु भगवान की पढ़ाई पढ़ने के लिए हमारे पास समय ही नहीं है..!

जो पढ़ाई हमें ज्ञान का बल देती है, दिव्य बुद्धि प्रदान करती है, समस्याओं का समाधान देती है, जिस पढ़ाई से हम सदासदा के लिए ज्ञानधन से भरपूर हो जाते हैं, हमारी सत्य की खोज पूर्ण हो जाती है उस पढ़ाई पर हमें पूरा ध्यान देना चाहिए। हमें अपनी वृत्ति से इस संपूर्ण विश्व को परिवर्तन करना है। हमारी वृत्ति दो विशेषरूप से सदा रहे, "मैं विश्व कल्याणकारी हूँ।" सब आत्माओं को देखो, "मुझे इनका कल्याण करना है।" अपने आसपास, अपने मित्र-संबंधी, साथ में काम करने वाले दोस्तों को, सबको देखकर संकल्प करें, "मुझे इन सबका कल्याण करना है। मुझे इन सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति की राह दिखानी है। मैं तो विश्व कल्याणकारी हूँ।" दूसरा, "मैं तो पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ, प्रकृति का मालिक हूँ।" यह वृत्ति रहे, "मैं तो परमपवित्र हूँ। जहाँ जहाँ मेरी दृष्टि जायेगी, वहाँ वहाँ सभी आत्माएँ पवित्र बनती जायेगी।" हमारी पवित्रता से संसार की अनेक आत्माएँ और यह संपूर्ण प्रकृति दोनों ही पावन बनती रहती हैं। हमारी यह वृत्ति भी विश्व कल्याण का कार्य करती रहेगी। संकल्प करें, "जहाँ-जहाँ हमारे कदम पड़ेंगे, यह वसुंधरा पावन बनती जायेगी, जहाँ जहाँ हमारे हाथ स्पर्श होंगे वह वस्तुएँ पावन बनती जायेगी, हमारे पवित्र संकल्प चारों ओर के वायुमण्डल को पवित्र करते जायेंगे, हमारी फ़रिश्ता स्वरूप की स्थिति, "मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ।" इससे सारा वायुमण्डल बदलेगा और विश्व की आत्माओं को संदेश मिलेगा।

हमारे श्रेष्ठ कर्म सारी दुनिया को श्रेष्ठाचारी बनायेंगे। तो हमें अपने कर्मों पर भी बहुत ध्यान देना है। अब हमें वे कर्म नहीं करने हैं जो कर्म संसार के लोग कर रहे हैं। हम संसार से अलग हैं, उनसे महान हैं, उनके लिए आदर्श हैं, चमकते हुए ज्ञानसूर्य हैं।

तो आज हम स्वमान का अभ्यास करेंगे, "मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ और मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ। मुझसे चारो ओर प्रकाश फैलता है जिससे विश्व का कल्याण होता है।" और ड्रिल करेंगे कि हम सूक्ष्मलोक में हैं, सामने हैं बापदादा। बाबा को देखेंगे, बहुत तेजस्वी स्वरूप, बाबा के अंग-अंग से बहुत तेजस्वी गोल्डन किरणे फैल रही हैं और मस्तक में ज्ञानसूर्य शिवबाबा चमक रहे हैं और उन्होंने अपनी हजार भूजाओ की छत्रछाया मेरे सिर के उपर फैला दी हैं... बहुत अच्छी अनुभूति करेंगे हर घंटे में एक बार और स्वयं को शक्तिशाली बनायेंगे।

ओम शांति...

मन को कंट्रोल (नियंत्रित) करना हमारी एक बहुत ही श्रेष्ठ स्थिति है। संसार में पहले हम सुनते थे कि जो मनुष्य अपने मन को कंट्रोल कर लेता है वह तो हवा को भी रोकने में समर्थ हो जाता है। बाबा ने भी कहा है, हम सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास करें तो अंत में हम कर्मातीत हो जायेंगे। हम इसका निरंतर अभ्यास करें, "मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।" इस स्वमान की सिट पर बैठ जाये और अच्छी अनुभूति करें कि "मैं मन की मालिक हूँ" तो मन हमारे आदेश का पालन करने लगेगा। आखिर इस मन को हमें ठीक दिशा में तो लाना ही है। तो हम अभ्यास करते रहे कि इसकी रुचि व्यर्थ की ओर न हो। व्यर्थ में मन बहुत भागता है, बहुत भटकता है। व्यर्थ में रुचि, व्यर्थ सोचने की आदत, इधर-उधर की तृष्णाये और इच्छाये, देहधारीयो के प्रति लगाव, संसार से बहुत कुछ पाना, मनुष्य से बहुत कुछ कामनायें, विषय-वासनाये यह मनुष्य के मन को भटकाती हैं। ज्यादा भटकाया है विषय-वासनाओ ने, काम ने, क्रोध ने, अहंकार ने, लोभ ने, मोह ने, ईर्ष्या-द्वेष ने, बदले की भावना ने। जितना-जितना हम इनको छोड़ते चलेंगे उतना ही यह मन स्वतः ही धीमी गति से चलता है।

दूसरा अभ्यास करें नेगेटिव को पॉजीटिव (नकारत्मक से सकारत्मक) में बदलने की। कोई ऐसी चिंता वाली बात हमारे सामने आ जाती है तो मनुष्य बहुत नेगेटिव सोचने लगता है, पता नहीं क्या होगा? यह न हो जाये, वह न हो जाये... लेकिन हम सदा यही सोचे कि "स्वयं भगवान मेरे साथ हैं, मेरा श्रेष्ठ भाग्य भी मेरे साथ है, मेरे पुण्य कर्म भी मेरे साथ हैं और मैं स्वयं भी बहुत महान हूँ तो मेरे साथ तो सबकुछ अच्छा ही होगा।" ऐसे संकल्पों से अपने नेगेटिव को पॉजीटिव में बदलते चले और हमारे मन की स्पीड(गति) धीमी होती चले, जितनी संकल्पों की स्पीड हमारी सतयुग में थी, 8-10 thoughts/min (विचार/मिनट), वैसी स्पीड यदि सहजरूप से हमारी रहने लगे तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाना अति सरल हो जायेगा। और इस स्पीड को कम करने के लिए हमें 4 अभ्यास करने पड़ेंगे। उनमें पहला अभ्यास है स्वमान का, दूसरा अभ्यास है अशरीरी होने की, तिसरा अभ्यास है आत्मिक दृष्टि का और चौथा अभ्यास है कि हम एक महान लक्ष्य को जीवन में साथ लेकर चले, एक विशेष पुरुषार्थ में सदा लगे रहें तो नेगेटिव संकल्प स्वतः ही समाप्त होते रहेंगे। स्वमान की कोई न कोई प्रेक्टिस प्रतिदिन, प्रतिसमय चलती ही रहे। आप देखेंगे जब आत्मिक दृष्टि का अभ्यास होगा तो अनेक व्यर्थ संकल्प स्वतः ही नहीं आयेंगे। जैसे-जैसे बीच बीच में हम अशरीरी होने का अभ्यास करेंगे, "मैं आत्मा अलग, यह देह बिलकुल अलग।" जैसे-वैसे संकल्पों की स्पीड

कम होती चली जायेगी । हम यह निरंतर साधना करें क्योंकि मन को साध लेना यह बिना साधनाओ के संभव नहीं होगा और मन को साधे बिना हम सेकण्ड में फुलस्टॉप नहीं लगा सकेंगे और सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने वालो के पास ही अत्यधिक साइलेन्स पॉवर (संकल्प शक्ति) होती हैं और यह साइलेन्स पॉवर आगे चलकर बहुत काम आयेगी ।

अभी तो समय आ रहा हैं महाकाल का । जिन्हों ने बहुत अच्छी साधना की हैं, जो स्वराज्य अधिकारी बने हैं उन्हें पता चलेगा कि उनके पास कितनी शक्तियाँ हैं, जब प्रकृति भी उनका आदेश मानेगी, जब उन्हें ऐसा लगेगा की विनाश की घटनाओ को भी वह अपनी इच्छा अनुसार दिशा दे सकते हैं ।

तो आइये हम मन की स्पीड को स्लॉडाउन (धीरे) करें और एक सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाकर परमधाम में बाबा के साथ स्थित हो जाया करें । तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और स्वराज्य अधिकारी हूँ... मैं आत्मा इस देह से न्यारी हूँ" अपने तेजस्वी स्वरूप को देखते हुए चलेंगे परमधाम की ओर, और बैठ जायेंगे बाबा के किरणो के नीचे । फिर सेकण्ड में अभ्यास करेंगे, "मैं उपर हूँ बाबा के साथ । बाबा के अलावा मुझे कुछ नहीं दिखाइ दे रहा हैं ।" तो इससे मन पर बहुत अच्छा कंट्रोल होता जायेगा ।

ओम शांति...

कर्म तो मनुष्य प्रतिपल कर रहा है परंतु जो मनुष्य अनासक्त भाव से कर्म करता है, जो मनुष्य आत्मिक स्वरूप में और आत्मिक भाव में स्थित रहकर कर्म करता है वो सचमुच एक अलौकिक मनुष्य है और उसमे भी जो मनुष्य योगयुक्त होकर कर्म करें उसमे तो यह सारे गुण स्वतः ही आ जाते हैं। योगयुक्त होकर कर्म करना एक कला है। श्रीमद्भगवत गीता में भी कहा है, "हे अर्जुन, तु अपनी बुद्धि को मेरे स्वरूप पर स्थिर रखते हुए कर्म कर।" यही वास्तव में कर्मयोग है। बाबा ने इसको बहुत सहज बना दिया है, भिन्न-भिन्न अभ्यास सिखा दिये हैं ताकि कर्मयोग हमारे लिए बहुत सहज हो जाये।

संसार में कई लोग कर्मयोग इसको समझते हैं कि हम अच्छे कर्म करें, बड़े कर्म करें। दुनिया में भी कहते हैं, यह व्यक्ति कर्मयोगी है। लेकिन जब तक योगयुक्त नहीं हैं तब तक कोई भी मनुष्य कर्मयोगी नहीं हो सकता। यदि हम कर्मयोगी नहीं हैं तो हर कर्म का गहरा, बुरा और नकारत्मक प्रभाव हम पर पड़ेगा, हर कर्म हमें बाँधेगा और कर्मातीत अवस्था की ओर नहीं जा सकेंगे। लेकिन यदि हम योगयुक्त होकर कर्म करते हैं तो हर कर्म हमें एनर्जी देता है, हर कर्म बहुत बड़ा पुण्य बन जाता है, हर कर्म हमारे लिए संसार में प्रेरणा देने वाला हो जाता है और जब हम योगयुक्त होकर कर्म करते हैं अर्थात् हम यह महसूस करते हैं कि बाबा हमारे साथ हैं तो उसकी शक्तियाँ हमसे जुड़ जाती हैं। डबल फ़ॉर्स (शक्ति) कार्य करता है, हमारी शक्ति और बाबा की शक्ति दोनो जुड़ जाती हैं और बहुत जल्दी कार्य पूर्ण हो जाते हैं। इसलिए सहजभाव से कर्म करना सीखे, कर्मयोगी वही बन सकते हैं जो कर्म कॉन्श्यस न हो, जो टाइम कॉन्श्यस न हो। टाइम पर कर्म करना अच्छी बात है लेकिन टाइम कॉन्श्यस हो जाना, बार-बार घड़ी देखना, दूसरो को भी फटकारते रहना- 'टाइम पर करो, जल्दी करो' यह टाइम कॉन्श्यस टेंशन पैदा करती है और कर्म कॉन्श्यस होने से मनुष्य सबकुछ भूल जाता है यद्यपि कर्म में पूरी तरह से तल्लिन होना भी परम आवश्यक है लेकिन इतनी तल्लिनता नहीं कि हम बाबा को ही भूल जाये..!

तो आइये, सहजभाव से कर्म करने का अभ्यास करें। हम अपने कर्मों को एंजोय करें, उसका आनंद उठाये। कर्म ऐसे करें मानो डान्स कर रहे हो, आनंद ले कर्मों का। ऐसी मानसिकता हम बनाते चले कि हमें अपने कर्म बहुत आनंद पूर्वक, बहुत प्रसन्नता पूर्वक करने हैं। तो कर्म में हम यह अभ्यास करें कि, "मैं इस देह में बैठकर इससे कर्म करा रही हूँ... मैं कराने वाली हूँ... बाबा की शक्तियाँ मेरे साथ जुड़ी हुई हैं... बाबा मेरे साथ हैं।" इसको जरा

बार-बार याद करते रहे । यदि आप विद्यार्थी हैं तो बार-बार यह याद करते रहे, "बाबा मेरे साथ हैं ।" किसी कर्म में स्वमान के अच्छे-अच्छे अभ्यास करें, "मैं पूर्वज हूँ, मैं इष्ट देव/देवी हूँ... मैं जहाँ का नूर हूँ... मैं कल्पवृक्ष की जड़े हूँ ।" जो स्वमान आपको अच्छे लगे उसे चुन ले, उनको याद करते रहे ।

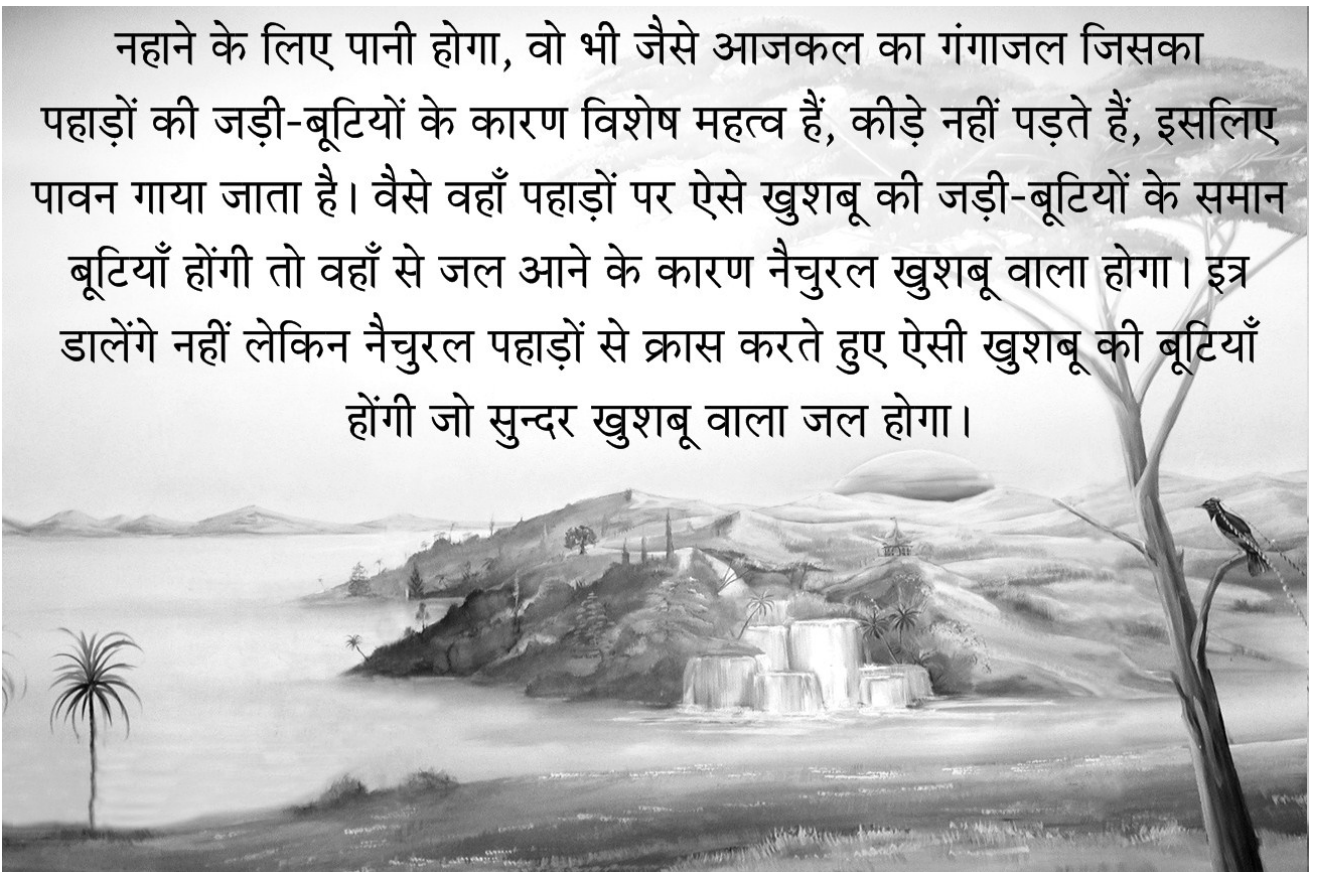
अगला अभ्यास हम करेंगे की हमारी बुद्धि बाबा पर स्थिर हैं और यहाँ हम कर्म कर रहे हैं । यह सब नहीं कर पायेंगे, जिनको बहुत अभ्यास है वह यह अभ्यास करें और कभी अभ्यास करें कि "बाबा की किरणे मुझ पर पड़ रही हैं" तो कभी अभ्यास करें, "मैं फ़रिश्ता कार्य कर रहा हूँ" । इस तरह हम कर्मयोग का अभ्यास करें कर्मातीत अवस्था की ओर चले ।

तो आइये आज सारा दिन हम यह स्वमान का अभ्यास करें, "मैं जहाँ का नूर हूँ... मैं इस जहाँ की शोभा हूँ... मेरा इस संसार में उपस्थित होना ही बहुत महत्वपूर्ण है" और साथ में अभ्यास करें, "बाबा की किरणे निरंतर मुझपर पड़ रही हैं... शक्तियों का फ़ॉउंटेन मुझपर उतर रहा है ।"

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

नहाने के लिए पानी होगा, वो भी जैसे आजकल का गंगाजल जिसका पहाड़ों की जड़ी-बूटियों के कारण विशेष महत्व है, कीड़े नहीं पड़ते हैं, इसलिए पावन गाया जाता है। वैसे वहाँ पहाड़ों पर ऐसे खुशबू की जड़ी-बूटियों के समान बूटियाँ होंगी तो वहाँ से जल आने के कारण नैचुरल खुशबू वाला होगा। इत्र डालेंगे नहीं लेकिन नैचुरल पहाड़ों से क्रास करते हुए ऐसी खुशबू की बूटियाँ होंगी जो सुन्दर खुशबू वाला जल होगा।



बाबा अपना धाम छोड़कर हमारे पास आया हैं हमें संपूर्ण पावन बनाने के लिए । इस माया रावण ने हमें अत्यंत दुःखी कर दिया । इसने हमारा राज्य-भाग्य छिन लिया, हमारा सारा शृंगार बिगाड़ दिया और फिर सुख शांति के लिए हम भटकते रहे भक्तिमार्ग में, तीर्थों पर जहाँ-तहाँ कष्ट पाते रहे ।

बाबा आकर हमें पवित्र बना रहे हैं और जैसे-जैसे हमारी पवित्रता बढ़ती जायेगी, सबकुछ श्रेष्ठ होता जायेगा । धनधान्य भी भरपूर होता जायेगा, सुख, शांति, समृद्धि, परिवारों में प्रेम, निरोगी काया सबको प्राप्त होती जायेगी । तो हम पवित्रता को आगे बढ़ाये । ब्रह्मचर्य धारण करने के साथ देहभान से न्यारे होने के लिए, अशरीरीपन का अभ्यास करते चले ताकि कर्मेन्द्रियों की वासनाये समाप्त होती चले । योग अभ्यास बढ़ाये, कर्मेन्द्रियों की वासनाओ की अग्नि इस अग्नि में जलकर नष्ट हो जाये । यह वासनाये भी बहुत बड़ी अग्नि हैं जो सबकुछ जलाकर नष्ट करती हैं, इन्हें योग अग्नि में ही जलाया जा सकता हैं । हम आगे बढ़े अपनी पवित्रता की यात्रा में, हमारे स्वप्न भी पवित्र होते चले, संकल्प भी पवित्र होते चले, हमारी वाणी भी पवित्र हो जाये और जब हम दूसरों के संबंध में आते हैं तो हमारी दृष्टि भी पूरी तरह पवित्र हो जाये । यह जो देह का आकर्षण हैं, यह जो विकारों का आकर्षण हैं इससे हम स्वयं को उपर करते चले । अपने से बात करें कि, "देह के आकर्षणों में तो हम जन्म-जन्म लिप्त रहे, लेकिन क्या मिला? सबकुछ गवाँ दिया । यह देह हैं भी क्या? यदि बाहर की यह सुंदर त्वचा हटा दी जाये तो अंदर गंदगी के सिवाये कुछ नहीं । यह तो जैसे कीचड़े का डिब्बा हैं, बाहर शोभा हैं और अंदर गंदगी ही गंदगी हैं । इसके प्रति हम आकर्षित क्यों हो..! हम आत्मा की सुंदरता को देखे ।" अभ्यास करते रहे, "यह देह तो विनाशी हैं, यह देह से कुछ नहीं मिलना हैं । आज जो देह सुंदर लग रही हैं वह कल बीमार हो जाने पर, बाल झड़ जाने पर, झुरीया पड़ जाने पर उस देह में कोई आकर्षण नहीं रहेगा । हम तो आत्माये हैं ।" आत्मिक दृष्टि को बढ़ाते चले । देह के आकर्षण को हटाते चले । जब हम दूसरों को आत्मा देखेंगे तो स्वतः ही देह का आकर्षण ढीला पड़ता जायेगा । घर में बैठकर भी चिंतन करते रहे, "सब आत्माये हैं, यह आत्माओ का खेल चल रहा हैं ।" बाबा से बातें करते रहे, "बाबा, हम संपूर्ण पावन बनकर इस प्रकृति को, इस वायुमण्डल को पवित्र करेंगे ।" बाबा को वचन देते चले और बाबा से बात करें, "तुम्हें वचन देकर हम वापस नहीं लेंगे ।" बार-बार यह द्रढ़ता करते चले । परेशान न हो कि वचन दिया था और टूट गया । वचन बारबार दे क्योंकि हम सब जानते हैं बाबा भी जानता हैं कि यह पवित्रता की राह बहुत लंबी हैं, एक दिन में कोई पवित्र नहीं बनेगा । और

अगर आपसे पास्ट में कुछ गलतीयाँ हो गई हैं, अब वो अज्ञान की गलतीयाँ थी। उन्हें विस्मृत कर आगे बढ़ें और सारा दिन बहुत अच्छा अभ्यास करें, "मैं तो पवित्रता का सूर्य हूँ, मैं तो पवित्रता की देवी हूँ, मेरे पास तो पवित्रता की शक्ति है, मुझे तो सबको पवित्र वायब्रेशन्स देने हैं।" जिसको अपनी पवित्रता को बहुत सुंदर बनाना हो वह आत्मिक दृष्टि की धून लगाते हुए सबको पवित्र वायब्रेशन्स देने का अभ्यास किया करें।

तो आज सारा दिन हम यह अभ्यास करेंगे, "मैं पवित्रता की देवी/पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ या पवित्रता का सूर्य हूँ।" और सबको आत्मा देखेंगे और आत्मा देखते हुए सबको पवित्र वायब्रेशन्स देंगे। जो भी हमारे सामने आये उसे हमसे पवित्र वायब्रेशन्स ही मिले। बस, आज यह धून लगा दे और जिन्हें संपूर्ण पवित्र बनना है वह लम्बा काल यह अभ्यास करें।

ओम शांति...

बाबा हमे अपने जैसा, बाप समान बनाने आये हैं। शक्तियों में अपने जैसा, सुख देने में अपने जैसा, पवित्रता में अपने जैसा, परोपकार में अपने जैसा। तो हमे बाप समान बनना हैं, ब्रह्माबाबा के समान भी बनना हैं। बाबा निरंतर योगी बने, संपूर्ण निर्हकारी बने, संपूर्ण पवित्र हो गये, संपूर्ण समर्पण भाव उनके जीवन में आ गया। हमे भी बाप समान बनना हैं। हम यह सोचते हैं कि 'मुझे बाप समान बनना हैं' तो देखो मंजिल बहुत भारी नजर आती हैं। यदि हम यह सोचे कि 'मैं बाप समान हूँ' तो कितनी सहज बात हो जाती हैं। "मैं बाप समान हूँ तो मेरी दृष्टि कैसी होनी चाहिए? मेरी वृत्ति और भावनाये कैसी होनी चाहिए? मेरी पवित्रता कैसी होनी चाहिए? मुझे सदैव कैसे वायब्रेशन्स निकलने चाहिए? मुझे कैसे सबको सकाश देना चाहिए? मैं बाप समान हूँ तो मेरे संकल्प कितने महान होने चाहिए? मेरे बोल कैसे वरदानी होने चाहिए?" हम यह चिंतन करेंगे। तो मैं बाप समान हूँ, इसे स्वीकार कर ले और जरा शांति में बैठकर विचार करें, "बाबा मुझे कैसा देखना चाहता हैं? मैं कैसा बनू जो भगवान मुझे देखकर आनंदित हो जाये?" सब जानते हैं, सुखदायी बच्चो को देखकर बाबा बहुत हर्षित होते हैं। अपनी योगयुक्त आत्माओ को देखकर तो उनके हर्ष का ठिकाना नहीं रहता क्योंकि योगयुक्त आत्माये ही उनके कार्य में सबसे ज्यादा सहयोगी होते हैं और जो सृष्टि पर पवित्र बनकर विचरण करते हैं वो तो मानो भगवान के नैनो में समाये रहते हैं।

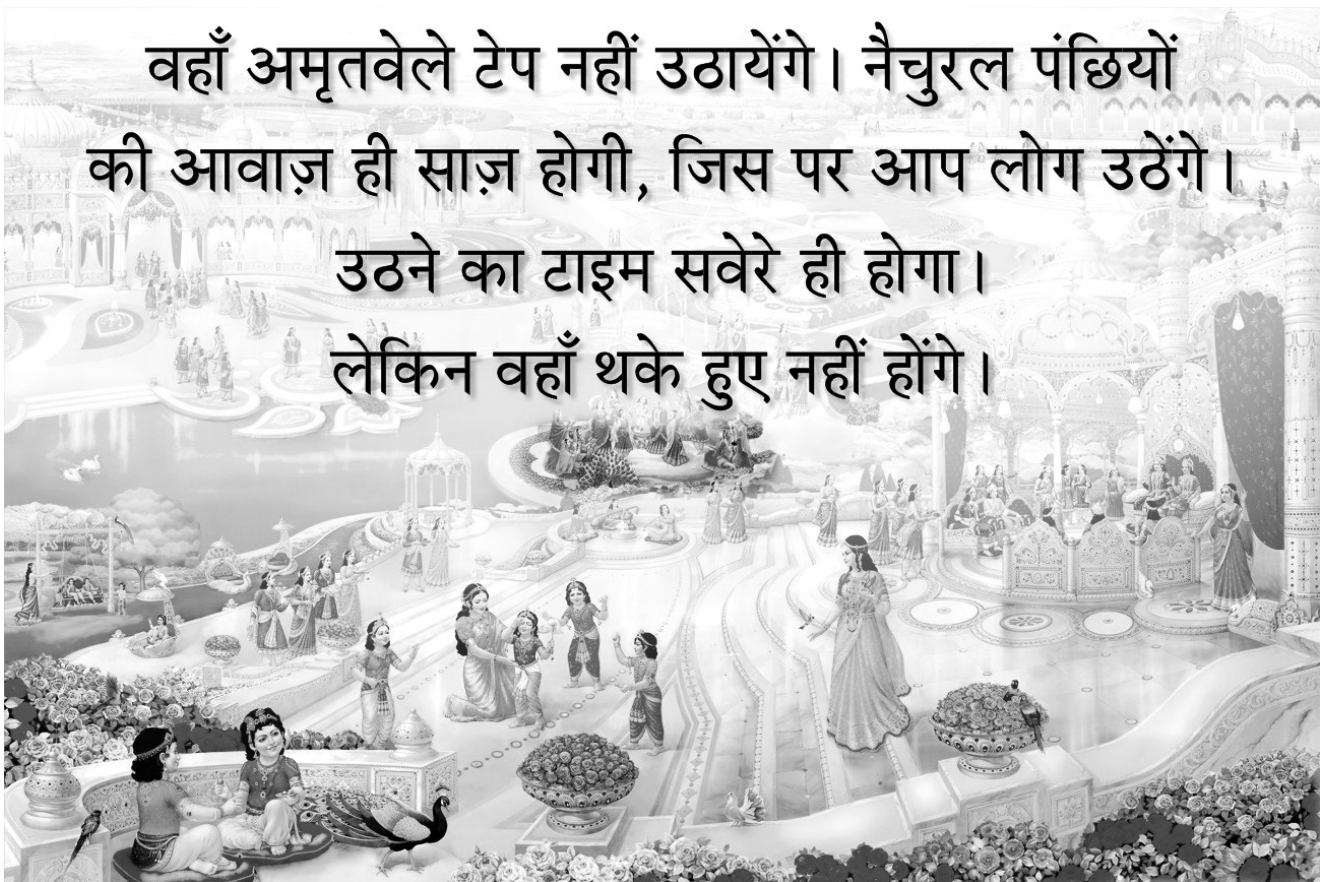
तो हम बाबा को भी प्रसन्न करें ताकि वो प्रसन्न होकर हमे शक्तियाँ और वरदान दे दे और हम स्वयं की स्थिति को भी बहुत महान बनाये ताकि बाप समान बनकर हम संसार को बाबा का स्वरूप दिखा सके। यह बाबा का महावाक्य याद रखना हैं, "साक्षात्कारमूर्त वही बनेंगे जो साक्षात बाप समान बनेंगे।" और अब कुछ ही समय में, बस कुछ ही वर्ष शेष हैं, हमे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। इस धरा पर साक्षात्कारो की धूम मचेगी। जो बाप समान बने होंगे उन्हें जहाँ-तहाँ लोग बहुत महान स्वरूप में देखेंगे। उनके द्वारा सभी की श्रेष्ठ मनोकामनाये पूर्ण होगी और वह बाबा का कार्य संपूर्ण करने वाले हो जायेंगे। बाबा के कार्य को पूर्ण करना हैं, अंतिम आहूति डालनी हैं, इसको समाप्ती की ओर ले चलना हैं, सब धर्मों की आत्माओ को भी बाबा का पैगाम देना हैं और अनेक आत्माओ को पवित्र बनाने में मदद करनी हैं। तो ऐसी जो साक्षात बाप समान आत्माये होगी वह बाबा के इस कार्य को अंतिम स्वरूप देगी। जयजयकार का बहुत सुंदर समय हमारे समिप आ रहा हैं। बस, वह इंतजार कर रहा हैं हमारी संपूर्ण और संपन्न स्थिति का।

तो आइये हम धून लगाये, मुझे बाप समान बनना है। "मैं बाप समान हूँ" यह स्वमान ले और कुछ लक्ष्य रखे कि मुझे बाबा जैसा, ऐसा बनना है। परंतु मैं बाप समान हूँ यह अनुभव ही बहुत महान है और थोड़ी देर के लिए योग का एक सुंदर अभ्यास करेंगे कि जैसे 'मैं बाबा की सिट पर स्थित हूँ परमधाम में और जैसे बाबा वहाँ से सबको किरणे देते हैं मैं भी वहाँ बैठकर सभी को किरणे दे रहा हूँ।' बहुत सुंदर अभ्यास होगा।

तो आज स्वमान याद करेंगे, "मैं बाप समान हूँ" और बार-बार बाबा की सिट पर बैठकर संसार को किरणे देंगे और बहुत पाँवरफुल स्थिति का अनुभव करेंगे।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



वहाँ अमृतवेले टेप नहीं उठायेंगे। नैचुरल पंछियों की आवाज़ ही साज़ होगी, जिस पर आप लोग उठेंगे। उठने का टाइम सवेरे ही होगा। लेकिन वहाँ थके हुए नहीं होंगे।

बाबा हमे संपूर्ण पवित्र बनाने आये हैं। जब हम संपूर्ण पवित्र बन जायेंगे, जब अपवित्रता तनिक भी नहीं रहेगी तब हम घर वापस जायेंगे। अपवित्रता समाप्त होना माना कर्मद्रियों का शीतल होना। संपूर्ण पवित्र स्थिति अर्थात् आत्मिकभाव हो जाना, वृत्ति में यह समा जाये कि सब आत्माये हैं। मन-बुद्धि से, नैनो से क्रिमिनालिटी समाप्त हो जाये और हम अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित होकर महान संकल्पो में रमण करते रहे। ऐसे पवित्रता के वायब्रेशन्स सारे संसार में फैलते हैं। यह वायब्रेशन्स प्रकृति के लिए वरदान होते हैं।

तो आइये हम इश्वरीय कार्यों में सहयोग करने के लिए अपने अंदर संपूर्ण पवित्रता की धारणा करें। विकारो के मार्ग पर चलकर तो हजारो साल से हमने देख लिया। वह क्षणिक सुख आत्मा को पतन की राह पर ले आया, वह क्षणिक सुख सदा के लिए दुःखो के द्वार खोल गया। इससे देहभान बढ़ता गया, दैहिक दृष्टि बढ़ती गई, संसार में पाप बढ़ता गया, समस्याये विकराल रूप लेती गई। अब हम पवित्र बनकर इस दुःखमय संसार को पुनः सुखमय बनायेंगे। स्वयं भगवान की आज्ञा हैं पवित्र बनो, संपूर्ण पवित्र बनो। हजारो साल से अपवित्र बने, अब एक जन्म पवित्रता का सुख लेना हैं और जन्म-जन्म की अपवित्रता को नष्ट कर देना हैं। अपने से दृढ़ संकल्प करें, जिन राहो पर संसार चल रहा हैं, हमे उन राहो पर नहीं चलना हैं। हमे अपनी राहे बदल देनी हैं, पवित्रता का मार्ग हमने अपना लिया हैं। अब इसे संपन्न करना हैं। एक बार जिस राह पर हम चल पड़े, पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे, तब तक नहीं बैठेंगे जब तक मंजिल न मिल जाये।

हम सभी अपनी पवित्रता को नेचुरल और एक बल बनाने के लिए योग अभ्यास बहुत बढ़ाये। बिना योगबल के किसी में भी संपूर्ण पवित्रता आ नहीं सकती। केवल दृढ़ता रखने से हमारी कर्मद्रियाँ तो शीतल नहीं हो जायेंगी न..! इसलिए दृढ़ता के साथ, प्रतिज्ञा के साथ हम देही अभिमानी बनने की साधना करें, आत्मिक दृष्टि रखने की साधना करें, देहो को भूलते जाये, देखते हुए भी न देखने की साधना करें।

पवित्रता तो हमारा नेचुरल संस्कार हैं। यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं। दो युग तक हम संपूर्ण पवित्र रहे थे, इसलिए हमे पवित्र बनना कठिन नहीं होगा। देही अभिमानी आत्माये ही बहुत ज्यादा सेवा कर पायेगी। यह भगवानुवाच हैं, सेवाओ में सफलता का आधार भी हमारी आत्म-अभिमानी स्थिति ही हैं, हमारी स्वमान की स्थिति ही हैं, हमारी आत्मिक दृष्टि हैं। तो हम धून लगा दे इन तीनो चीजो पर, "मैं आत्मा भ्रुकुटी सिंहासन पर हूँ, इस देह से न्यारी

हूँ। और सभी शरीरो में अलग-अलग चमकती हुई मणियाँ हैं और मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। मैं विजयरत्न हूँ, माया पर मेरी विजय निश्चित है।" यह हम धून लगायेंगे और अभ्यास करते जायेंगे अब तिव्र गति से कि किसी को भी देह देखकर हमारे मन में बुरे विचार न चले। देह ही तो सुंदर हैं, आत्मा तो सबकी पतित हैं, हमे आत्मा को सुंदर बनाने में सबको मदद करना है और सबको पवित्र वायब्रेशन्स देकर उन्हें उनकी मूल स्थिति तक ले जाना है, मुक्ति का वरदान देना है।

तो आज सारा दिन पाँच स्वरूपो का अभ्यास बहुत करेंगे। हर घंटे में एक बार अवश्य करेंगे अच्छे अनुभव के साथ कि, "मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। देवस्वरूप में परमपवित्र थी, मेरा पूज्य स्वरूप भी परमपवित्र है, अब मैं ब्राह्मण भी परमपवित्र हूँ... और मुझे परमपवित्र फ़रिश्ता बनना है।" इसका अभ्यास पुनः पुनः करेंगे।

ओम शांति...

बाबा ने हमें विश्व ड्रामा का अति गुह्य ज्ञान दिया है। इसी ज्ञान की संसार में संपूर्णरूप से कमी थी। सारे रहस्य स्पष्ट कर दिये, बिलकुल सरल भाषा में खोल दिये। आत्मा-परमात्मा का ज्ञान भी दिया, माया का ज्ञान भी दिया, कर्मों की गुह्य गति का भी ज्ञान दिया, राजयोग का ज्ञान भी दिया और इस विश्व नाटक का, इस संपूर्ण सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान भी दिया। हमें ज्ञान से भरपूर कर दिया। हम कितने महान बन गये की भगवान का संपूर्ण ज्ञान स्वयं समाकर मास्टर ज्ञानसागर बन जाते हैं और जैसे कि उनको भी खाली कर देते हैं। वह भी फिर साइलेंट हो जाते हैं।

हमें स्वयं में ज्ञान के भण्डार को भरते चलना है। इसके लिए मननचिंतन बहुत-बहुत आवश्यक है। मनन की शक्ति हमारी आत्मिक शक्ति को बहुत बढ़ा देती है। मनन के बिना हमें ज्ञान एक बल के रूप में अनुभव नहीं होता। इसलिए मनन किया करें रोज एक टाइम निश्चित कर ले और कुछ न कुछ लिखने की प्रेक्टिस करें। टाइम निश्चित करने से दिमाग उस समय बहुत सुंदर कार्य करने लगेगा। टोपिक (विषय) ले ले पहले ही दिन, ड्रामा पर मुझे दस पॉइंट लिखनी हैं, दूसरे दिन ले आत्मा पर बीस पॉइंट, परमात्मा की महिमा में मुझे पच्चीस पॉइंट लिखनी हैं, कर्म कैसे करें? अच्छे कर्म क्या हैं? मुझे पच्चीस अच्छे कर्मों की लिस्ट बनानी है, दुःख क्या हैं? मुझे पच्चीस दुःख लिखने हैं... इस तरह हम अपनी मननशक्ति को बढ़ाते चले।

यह ड्रामा बहुत ही सुंदर चल रहा है और हमारा जीवन भी एक सुंदर यात्रा ही है। इस यात्रा में उतार, चढ़ाव, ठहराव, पड़ाव सब आते हैं। हमें इस यात्रा का आनंद लेना है। हमें यह नहीं सोचना है कि साइड में यह सिन क्यों आ रहे हैं। यात्रा में जब हम चलते हैं तो साइड में अनेक सिन आते रहते हैं, उन्हें देखकर हम क्या, क्यों का क्वेश्चन नहीं उठाते हैं। "यह किसने बनाया? यह क्यों बनाया?" , हम तो बस आगे बढ़ते जाते हैं और जो सुंदर सिन होते हैं उनको एंजोय करते हैं और जो हमारे मनपसंद सिन नहीं होते उन्हें हम छोड़ते चलते हैं।

तो ड्रामा का बहुत सुंदर ज्ञान हमें प्राप्त है। आज अपनी दिनचर्या में ड्रामा को याद करते हुए, संपूर्ण साक्षीभाव का अभ्यास करेंगे और ड्रामा की 10-12 पॉइंट्स अपने पास लिखेंगे। जैसे कि,

1. नथिंग न्यू। वही हो रहा है जो कल्प पहले हुआ था।

2. इस ड्रामा में मैं हीरो एक्टर हूँ। मैंने पूरे चक्र में हीरो पार्ट बजाये हैं। अब मुझे अपने हर एक्ट पर बहुत ध्यान देना है। मेरी हर एक्टिंग को सारा संसार फॉलो करेगा। मुझे सब देख रहे हैं।

3. इस ड्रामा में भविष्य पूर्वनिश्चित है। हम केवल पुरुषार्थ कर रहे हैं। होना वही है जो पहले से ही निश्चित है। इसलिए निश्चित हो जाये।

इस तरह ड्रामा की 12 पॉइंट्स आप निकालेंगे और उन पर मननचिंतन करते रहेंगे तो लगेगा की जीवन बहुत सहज है। हम तो केवल एक्टर्स हैं, प्लेयर्स (खिलाड़ी) हैं। हमें तो अपने जीवन का आनंद लेना है।

तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे, "मैं मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ... और ज्ञानसूर्य शिवबाबा बहुत तेजस्वी स्वरूप में मेरी आँखों के सामने हैं। उसकी रंगबेरंगी किरणें चारों ओर फैल रही हैं और सामने से मुझपर पड़ रही हैं।" बहुत पॉवरफुल एकाग्रता हो जायेगी और इससे माया के किटाणु नष्ट होने लगेंगे, हमारे विकर्म दग्ध होने लगेंगे और हमें बहुत सुखद अनुभूति होगी।

ओम शांति...

हम सभी सत्य के मार्ग पर चल दिये हैं। हमने प्रभु का हाथ थाम लिया हैं, निरंतर आगे बढ़ने का संकल्प कर लिया हैं और माया को चेलेंज (चुनौती) भी कर दिया हैं। साथ-साथ अनेक जन्मों का बोझ भी हमारे सिर पर हैं। जब हमने चेलेंज कर दिया हैं तो अनेक समस्याये तो आयेंगी ही। चेलेंज करना माना समस्याओ का आह्वान करना। एक सेना दूसरी सेना को चेलेंज करें तो दूसरी सेना चाहे कमजोर ही क्यों न हो, वह बहुत शक्तिशाली रूप से वार तो करेगी ही। एक पहलवान जब दूसरे को ललकारता हैं तो दूसरा भी तो कुशती लड़ने आयेगा ना। हम भी जब माया को ललाकारा हैं तो माया भी तो फूल फ़ॉर्स (पूरी शक्ति के साथ) से आयेगी ही। अपनी शक्तियों को बढ़ा दे। माया जब फूल फ़ॉर्स से आक्रमण कर रही हो तो हम यह न भूल जाये चेलेंज तो हमारा हैं इसलिए हमे भी बहुत शक्तिशाली बनकर माया का और समस्याओ का सामना करना हैं। हम अकेले नहीं हैं। सोचो, माया तो अकेली हैं। भले ही उसके सेनापति अनेक हो पर हम तो अकेले नहीं हैं। हमारे साथ सर्वसमर्थ हैं और हमारी सेना भी कोई छोटी नहीं हैं, सर्वशक्तियाँ हमारे पास हैं जिनका नाम सुनते ही माया के सारे सेनापति ध्वस्त हो जाते हैं।

तो हम समस्याओ से डरेंगे नहीं, उन्हें एंजोय करेंगे। कभी थोड़ी-बहुत हार भी हो जाये माया से या समस्याओ से तो घबराना नहीं। अपने मनोबल को कमजोर नहीं कर देना हैं, स्वयं को निराशा के गर्त में नहीं डाल देना हैं। विजय हमारी ही हैं, भगवानने निश्चित कर दिया हैं कि विजय तुम्हारी ही होगी लेकिन क्योंकि शत्रु भी प्रबल हैं इसलिए उतार चढ़ाव तो आयेंगे ही, हार-जीत का खेल तो चलता ही रहेगा।

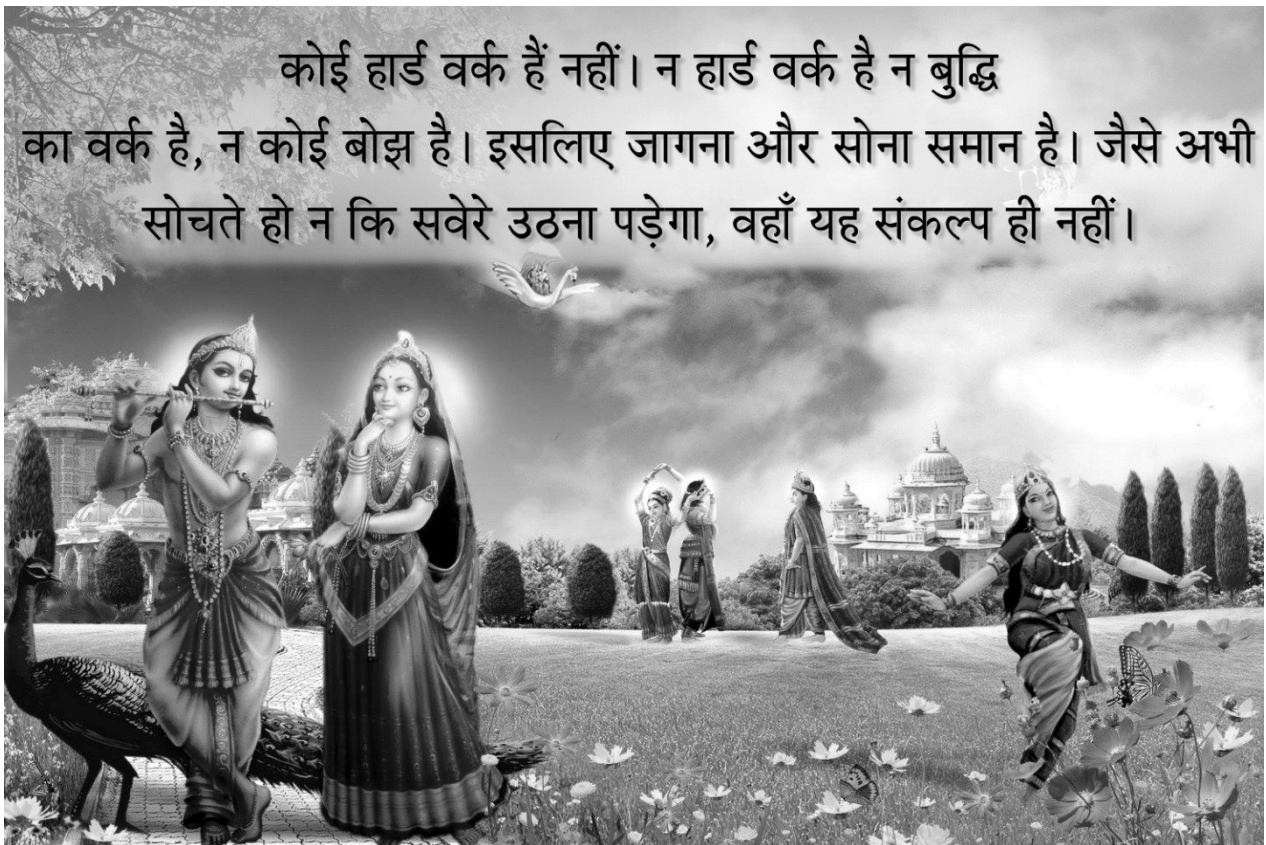
हम यह सोच सोचकर कि, "समस्याये क्यों आती हैं? बाबा का बन गये फिर भी समस्याये आती हैं..! हमने तो सोचा था बाबा के बन गये तो हमारा मार्ग बहुत सहज हो जायेगा, यह मार्ग तो काँटों से भरा हो गया! यह सहज मार्ग न होकर सहन करने का मार्ग हो गया! कदम-कदम पर बहुत सहन करना पड़ रहा हैं।" यह सोचकर अपने आत्मबल को क्षीण नहीं कर देना हैं। सवेरे उठते ही याद करेंगे, "समस्याओ और माया से अधिक शक्तिशाली मैं हूँ... मेरे साथ तो स्वयं भगवान हैं, उनके दिये हुए दिव्य अस्त्र-शस्त्र भी हैं। माया के अस्त्र-शस्त्र भी पॉवरफ़ुल हैं, सूक्ष्म हैं। उन्हें पहचानकर, वह कैसे वार करती हैं उसे जानकर हमे अपने दिव्य शस्त्रों का उपयोग करना हैं।" उसमे एकाग्रता हमारी सबसे बड़ी और प्रथम दिव्यता हैं। तो ज्ञान के अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग करते हुए हमे माया को परास्त करना हैं और समस्याओ

को भी हरा देना हैं ताकि समस्याये वार कर-करके, हार-हारकर सदा के लिए हार जाये और वार करना ही भूल जाये। याद रखेंगे, यह शक्तियाँ हमारे पास ही हैं। यह बात केवल कहने की नहीं हैं क्योंकि कल्प-कल्प हमने माया का यही हाल किया हैं, कल्प-कल्प हम समस्याओ को पार करके बहुत शक्तिशाली बने हैं।

तो हम सभी पुनः स्मृतियों को जागृत करें, हमारे अंदर बहुत शक्तियाँ हैं और स्वयं सर्वशक्तिवान का शक्तिशाली हाथ हमारे सिर पर हैं अर्थात उसकी शक्तियाँ हमे निरंतर मदद कर रही हैं। तो आज सारा दिन हम बहुत अच्छा अभ्यास करेंगे, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, माया और समस्याओ से अधिक शक्तिशाली हूँ। सर्वशक्तियो का मालिक हूँ।" बहुत अच्छी अनुभूति करेंगे, "यह सर्वशक्तियाँ मेरे पास हैं। इन पर मेरा अधिकार हैं।" इस स्वमान में रहेंगे तो सारी शक्तियाँ अक्टिव (जागृत) रहेगी और फिर "परमधाम में सर्वशक्तिवान चमक रहा हैं... उसकी शक्तियो से समग्र ब्रह्मलोक जगमगा रहा हैं। और उसकी शक्तियो की किरणे नीचे मुझमें समा रही हैं। निरंतर शक्तियो का फ़ॉउंटैन (फ़व्वारा) मुझ पर उतर रहा हैं..."

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



हम सभी भगवान के बच्चे हैं, बहुत महान हैं और बहुत ही भाग्यवान हैं। हमे निरंतर आगे बढ़ते चलना हैं। अपने पर ध्यान दे, हमारे कदम निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो। एक भी कदम पीछे न हटे। जहाँ तक पहुँच गये उसके आगे ही चलते चलना हैं। स्वयं भगवान ने हमारा हाथ पकड़ा हैं, मंज़िल दिखाई हैं और केवल दिखाई ही नहीं लेकिन हमे अपने साथ ले चल रहा हैं। इस मंज़िल पर कहीं काँटे चुभते हैं, कहीं वह आत्माये हमारे सम्मुख आ जाती हैं जिनके साथ हमारे कर्मों का नेगेटिव, कड़ा खाता हैं। जब वह आत्माये हमारे सामने आ जाती हैं तो क्योंकि पूर्वजन्मो में हमने उनको रोका था तो वह हमारा मार्ग रोकने लगती हैं। हमने उनकी सुख, शांति नष्ट की थी, वह हमारी शांति नष्ट करने लगती हैं, हमने उनको धोखा दिया था वह हमे देने लगते हैं।

तो ऐसे में हमे अब संपूर्णरूप से सहनशीलता का अवतार बनना हैं। यह हमारा मार्ग ही सहन करने का हैं और सहज भी हैं। क्योंकि रास्ता सहज दिखाया हैं, हरेक रहस्य सहज शब्दो में स्पष्ट कर दिया हैं। तो यदि हमे कुछ सहन करना पड़ता हैं तो हम आनंदपूर्वक सहन करें। इस तरह सहन करें कि मानो हम कुछ सहन कर ही नहीं रहे हैं। जैसे जब सर्दी बहुत बढ़ती हैं और जो लोग ठंडे प्रदेशो में रहते हैं उनके लिए वह सर्दी कुछ भी नहीं होती हैं। सहजरूप से उसे वह पार कर लेते हैं। हम भी कलियुग के अंत में हैं। माया के साम्राज्य में हैं। काँटो के जंगल में हैं जहाँ अनेक विषैले सर्प आपको डसते रहेंगे परंतु यही हमारा मार्ग हैं, यही तो जीवन हैं, इसी से तो हमे आगे निकलना हैं इसलिए कोई कुछ बोले, कोई अपमान करें, कहीं हार-जीत हो, सर्दी-गरमी हो, सुख-दुःख हो, लोगो का गलत व्यवहार हो, अपनो से ही बहुत कुछ गलत मिल रहा हो तो हमे सहन करना हैं। लेकिन यह 'सहन करना' हमारी शक्तियों को नष्ट न करें। सहन करें हसते-हसते, सहन करें बाबा के लिए, सहन करें एक महान लक्ष्य को पाने के लिए, सहन करें अपने को बहुत पॉवरफुल बनाने के लिए। अगर हसते-हसते सहन करेंगे तो हमारी सहनशक्ति बहुत बढ़ जायेगी और हमे यह भी आभास नहीं होगा कि कोई हमे कुछ कह रहा हैं। हम याद रखेंगे, अपमान की हमे ज्यादा फ़िलींग न हो, हम बहुत सेन्सेटीव (संवेदनशील) न बन जाये कि हर बात हमारे अंदर प्रवेश करने लगे, हमारी खुशी को नष्ट करने लगे, हमे भारी करने लगे, कोई बात जब भारी करें तो जल्दी से जल्दी ज्ञान की कोई बात याद करके अपने को बहुत हल्का कर देना चाहिए।

तो सहनशीलता हमारे श्रेष्ठ चरित्र की पहचान भी हैं और इस से ही हमारी शक्तियाँ भी बढ़ती हैं और जितना हम सहन करेंगे, भविष्य में सहनशाह बन जायेंगे। अब सहन करके आगे बढ़ जायेंगे तो किसी भी जन्म में हमें ज्यादा सहन नहीं करना पड़ेगा।

तो आइये, आज हम इस स्वमान को याद रखे, "मैं सहनशीलता की देवी हूँ, मेरे पास संपूर्ण सहनशक्ति हैं। मैं सहनशीलता का अवतार हूँ। सबकुछ मैं हसते हुए सहन कर सकता हूँ। कितनी भी बीमारीयाँ हो, देह में दुःख-पीड़ाये हो। लेकिन यह सब तो जैसे देह को हैं, मुझे नहीं।" और जितना-जितना हम देह से न्यारे होते चलेंगे उतनी ही सहनशक्ति बहुत बढ़ती जायेगी। जितना-जितना मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान में रहेंगे और यह संकल्प करेंगे कि मेरे पास संपूर्ण सहनशक्ति हैं तो सहनशक्ति इमर्ज होकर अपना कार्य करती रहेगी।

तो आज सारा दिन यह स्वमान याद रखते हुए मास्टर सर्वशक्तिवान के साथ मैं सहनशीलता की देवी हूँ। इसे अनुभव करते हुए सर्वशक्तिवान हमारे सिर के उपर छत्रछाया हैं जैसे कि बाबा ने सारे संसार के उपर एक विशाल छत्रछाया लगा दी हैं और हम उसमें सुरक्षित हैं।

ओम शांति...

हर पल हम कर्म में प्रवृत्त हैं। देख भी रहे हैं, सुन रहे हैं, सोच रहे हैं, व्यवहार कर रहे हैं, स्थूल कार्य कर रहे हैं, बिजनेस-नौकरी कर रहे हैं। कर्म हमे निरंतर करना हैं लेकिन हमारे कर्म श्रेष्ठ हो, दिव्य हो। हमारे कर्म निष्कामभाव से चलते हो ताकि यही कर्म हमे कर्मातित अवस्था की ओर ले चले। आवश्यक हैं कर्म से पहले अपनी वृत्ति को श्रेष्ठ बनाये। बहुत महत्वपूर्ण बात हैं, सधारण स्थिति में स्थित होकर कर्म करना और श्रेष्ठ स्मृति में रहकर कर्म करना इसमे महान अंतर हैं।

हमारे भारत में, हिंदु धर्म में यह प्रथा हैं कि जब भी कोई बड़ा कार्य या शुभ कार्य करना होता हैं तो पंडित को बुलाकर कुछ भी अनुष्ठान अवश्य कराते हैं, पूजापाठ कराते हैं, कुछ हवन कराते हैं ताकि जब हम गृहप्रवेश कर रहे हो तब शुभ वायब्रेशन्स, शुभ मुहूर्त में घर में प्रवेश करें। तो ऐसे ही हमे यह सीख लेना चाहिए। वास्तव में यह प्रथा संगमयुग से ही प्रारंभ हुई हैं कि श्रेष्ठ कर्म वही हैं, कर्मों में सफलता तभी होगी, कर्म सुखदायी तभी होंगे जब हर कर्म से पूर्व हम श्रेष्ठ स्मृति में रहेंगे। स्मृति वृत्ति का निर्माण करती हैं। मान लो, आप अपने बिजनेस के लिए घर से निकल रहे हैं, तो ऐसी स्मृति रख लो, "बाबा मेरे साथ हैं, उसने मुझे सफलता का वरदान दिया हैं। यह कर्म में बाबा के लिए और विश्व की सेवा के लिए करने जा रहा हूँ।" तो यह श्रेष्ठ वृत्ति कर्मक्षेत्र पर आपको अतिसुंदर अनुभव करायेगी। आप कोई सेवा करने जा रहे हैं, सेवा से पूर्व संकल्प कर ले, "मैं विश्व कल्याणकारी हूँ, बाबा ने मुझे यह सेवा का महान सौभाग्य प्रदान किया हैं। मुझे सेवा के द्वारा सबको प्रभु से मिलाना हैं, देवकूल की आत्माओ से मेरा मिलन होगा। मैं सभी को सुख दूंगी, सभी को प्रभु-पैगाम दूंगी, सबका कल्याण करूंगी। मैं तो विश्व कल्याणकारी हूँ। इष्ट देवी हूँ।" कर्म की शुरूआत में ऐसी स्मृति और वृत्ति बनाने से इसका प्रभाव कर्म पर बहुत ही श्रेष्ठ होगा। हम भिन्न-भिन्न कर्मों में इसका अभ्यास करें। यदि आप स्टुडेंट हैं और अपने स्कूल, कॉलेज जा रहे हैं तो स्कूल जाते हुए आप यह स्मृति रखे, "मैं गॉडली स्टुडेंट हूँ। स्वयं भगवान मुझे पढ़ाते हैं, मैं विद्या प्राप्त करने जा रहा हूँ। यह विद्या मुझे महान चरित्रवान बनायेगी। यह विद्या मेरी बुद्धि को बहुत स्वच्छ दिव्य बनायेगी, मैं इस विद्या को प्राप्त करके संसार का कल्याण करूंगा। मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ, मन-बुद्धि का मालिक हूँ। जो भी आज पढ़ाया जायेगा, हे मेरी बुद्धि, तु सहज ही ग्रहण कर लेना।" ऐसी स्मृतिओ के साथ अपने कार्य प्रारंभ करें, तो देखेंगे कि कर्मों में कितने सुंदर अनुभव होते हैं।

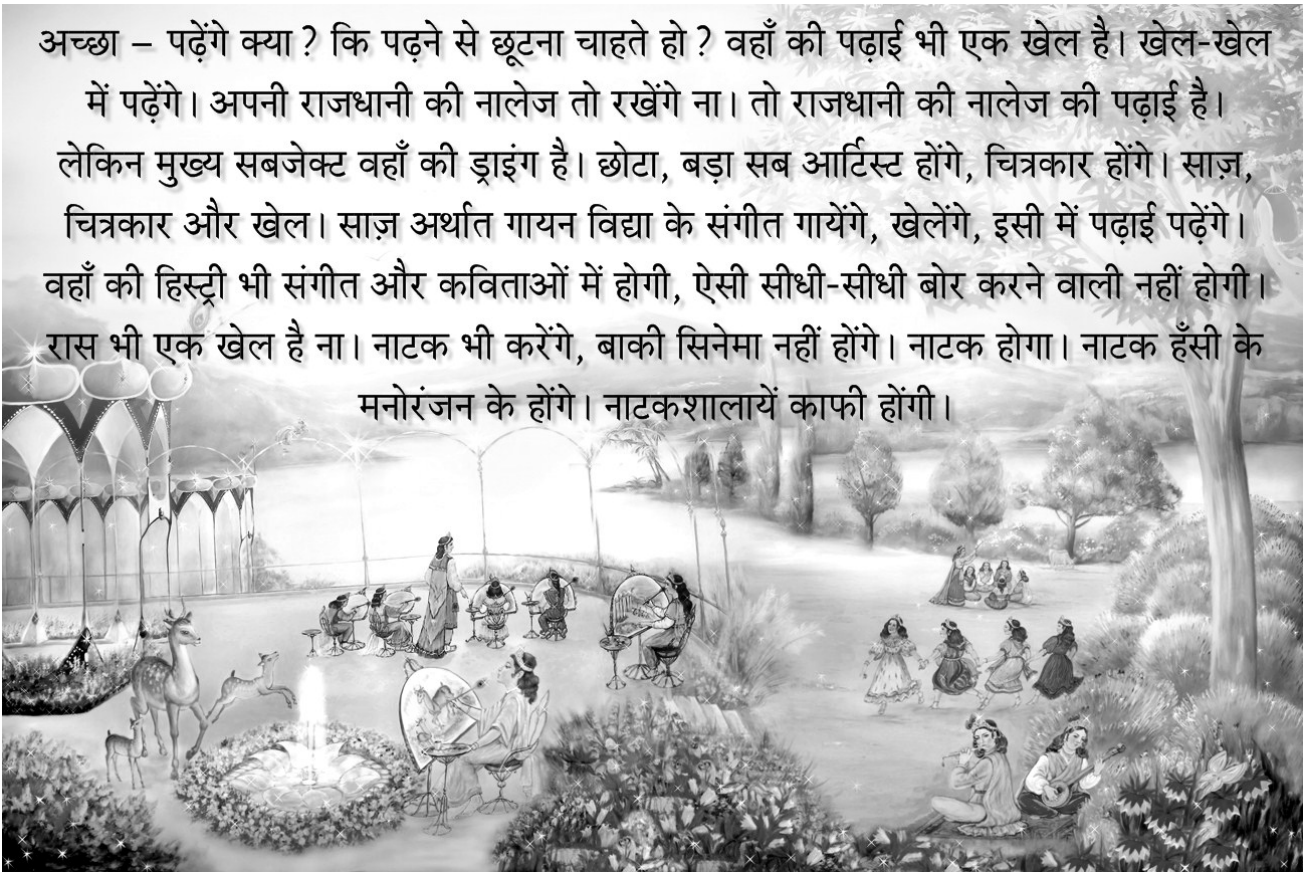
याद रखेंगे, हम जिस स्मृति से कार्य प्रारंभ करते हैं उसके वायब्रेशन्स निरंतर कर्मक्षेत्र पर हमारे साथ काम करते हैं। यदि हमने संकल्प कर लिया कि बाबा मेरे साथ हैं और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, तो यह दोनो चीज़ हमारे साथ काम करती रहेगी। इस सूक्ष्म गति को समझते हुए हम अपने कर्मों की शुरुआत बहुत श्रेष्ठ स्मृति से करें ताकि हमारी वृत्ति के वायब्रेशन्स कर्म को सहज सफल करें, दिव्य बनाये, निर्विघ्न बनाये।

आज सारा दिन हम यह स्वमान याद रखेंगे, "मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ और इस जहाँ का नूर हूँ, इस जहाँ की ब्यूटी (सुंदरता) हूँ।" और "परमधाम से शांति की किरणे बाबा से मुझ पर पड़ रही हैं।" आज हम इस तरह बहुत अच्छे साइलेन्स का अनुभव करेंगे, "मैं पिसहाउस हूँ और शांति के सागर की किरणे मुझ पर पड़ रही हैं।"

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

अच्छा – पढ़ेंगे क्या? कि पढ़ने से छूटना चाहते हो? वहाँ की पढ़ाई भी एक खेल है। खेल-खेल में पढ़ेंगे। अपनी राजधानी की नालेज तो रखेंगे ना। तो राजधानी की नालेज की पढ़ाई है। लेकिन मुख्य सबजेक्ट वहाँ की ड्राइंग है। छोटा, बड़ा सब आर्टिस्ट होंगे, चित्रकार होंगे। साज़, चित्रकार और खेल। साज़ अर्थात् गायन विद्या के संगीत गायेंगे, खेलेंगे, इसी में पढ़ाई पढ़ेंगे। वहाँ की हिस्ट्री भी संगीत और कविताओं में होगी, ऐसी सीधी-सीधी बोर करने वाली नहीं होगी। रास भी एक खेल है ना। नाटक भी करेंगे, बाकी सिनेमा नहीं होंगे। नाटक होगा। नाटक हँसी के मनोरंजन के होंगे। नाटकशालायें काफी होंगी।



मनुष्य आत्मा बुद्धिमान हैं। उसके पास मन जैसी शक्ति और बुद्धि जैसा एक दिव्य अस्त्र हैं। संसार में किसी मनुष्य के पास बहुत धन-संपदा हो, किसी सेना के पास बहुत अस्त्र-शस्त्र हो, किसी सैनिक के पास बहुत साधन हो परंतु यदि उसके पास मन की शक्ति नहीं, यदि उसके पास बुद्धि का संतुलन नहीं तो वह अपने को भी नष्ट कर सकता है और दूसरो को भी। बहुत बड़ी शक्ति है हमारे हाथ में और वह है हमारी मन की शक्ति, हमारी संकल्प शक्ति। सभी इसे अनुभव करें और हम सभी जो बाबा की महान आत्माये हैं, जिन्हें बाबा से सर्व शक्तियाँ वसें में मिल गई हैं, जिनके सिर पर हाथ रख के स्वयं सर्वशक्तिवान ने कहा, "मेरी सारी शक्तियाँ तुम्हारी।" ऐसी मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माये बहुत अधिक शक्तिशाली हैं अर्थात् उनका मन बहुत शक्तिशाली हैं अर्थात् उनके मन के हर संकल्प से शक्तिशाली एनर्जी चारो ओर फैलती है जो सारे संसार में पहुँचती है, प्रकृति में पहुँचती है, जो वायुमण्डल को चार्ज करती है, जो दूसरे मनुष्यो पर बहुत गहरा गहरा प्रभाव डालती है। इसलिए मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहकर जो आत्माये दूसरो के कल्याण का संकल्प करते हैं उनके वह पॉवरफुल वायब्रेशन्स दूसरी आत्माओ का कल्याण करने लगते हैं।

तो हमारे पास जितनी आंतरिक शक्ति होगी, जितना हम योगयुक्त होंगे उतना ही परमात्मा शक्तियाँ हममें प्रवेश करती रहेगी, जितनी हम मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान में स्थित रहेंगे उतना ही यह शक्तियाँ जागृत रहेंगी, वृद्धि को पाती रहेंगी और उतने ही पॉवरफुल वायब्रेशन्स हमारे मन से चारो ओर फैलते रहेंगे।

याद रखेंगे, जो मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहते हैं, वह संकल्प शक्ति से ही सबकुछ कर सकते हैं। एक बहुत सुंदर बाबा का महावाक्य है, "संसार में लोग बड़े-बड़े कार्य मनोबल के आधार से, विलपॉवर (इच्छाशक्ति) से करते हैं, तुम्हारे पास है परमात्म विलपॉवर!" स्वीकार करले हम सभी। हमारे पास है परमात्म विलपॉवर। तुम संकल्प से ही जो चाहे कर सकते हो। मन में केवल एक ही संकल्प हो कि यही होना है। नेगेटिव संकल्प मार्ग में दिवार का काम करते हैं।

तो हम सभी अपनी संकल्प शक्ति का उपयोग करेंगे। बहुत बड़ा शस्त्र, एटम बॉम से भी बड़ा शस्त्र हमारे पास है, हम इसका प्रयोग करेंगे, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, परमात्म शक्तियाँ मेरे पास हैं।" इसे अच्छे से अनुभव करें। "वह मुझसे कंबाइण्ड है" फिर वह संकल्प करें जो हम चाहते हैं और रोज इसके छोटे-छोटे प्रयोग करें। जैसे कि, आपका कुछ खो गया उसे पाने

का प्रयोग, आपको किसी से मिलना हैं वहाँ सफलता का प्रयोग, आप चाहते हैं कि आपके बच्चे आपकी सब बात माने, यहाँ संकल्प शक्ति का प्रयोग, अपनी शुभ भावनाओ के द्वारा हम दूसरो को बदले ऐसे प्रयोग, आपस में संबंधो को स्वीट बनाने के प्रयोग । यह करेंगे रोज सहजरूप से तो अपने में विश्वास बहुत बढ़ता जायेगा, यह समझ में आता जायेगा कि हम संकल्प शक्ति से बहुत कुछ कर सकते हैं, हमे परेशान होने की जरूरत नहीं । धीरे-धीरे संकल्प आता जायेगा कि जो हम चाहेंगे वही होगा ।

तो आज सारा दिन इस सुंदर स्वमान का अभ्यास करेंगे, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मास्टर क्रियेटर (रचता, स्रष्टा) हूँ ।" और अनुभव करेंगे, "मैं ग्लोब के उपर हूँ । बाबा से शक्तियों की किरणे लेकर सारे संसार में फैला रहा हूँ/रही हूँ ।"

ओम शांति...

हम सभी अकालमूर्त आत्माये हैं। अजर, अमर, अविनाशी हैं और महाकाल के बच्चे हैं। उसकी छत्रछायाँ हमारे सिर पर हैं। तो महाकाल के बच्चो को काल से भयभीत नहीं होना चाहिए, अपनी मृत्यु से भयभीत नहीं होना चाहिए। हमारी मृत्यु तो वैसी ही होगी जैसा हम चाहते हैं। अपने सबकोन्श्यस माइंड (अवचेतन मन) में अभी से संकल्प कर दो, हम कैसे देह को त्याग करना चाहेंगे? हॉस्पिटल में या योग में बैठे-बैठे स्व-इच्छा से? बाबा की मुरली सुनते हुए या सुनाते हुए? बाबा के कक्ष में योग करते हुए या सेवाओ के फ़िल्ड में सबको महादान देते हुए?

हम महाकाल की संतान हैं। महाकाल के बच्चे यदि डरेंगे तो संसार में निर्भय कौन बनेगा? जिन्हें विनाश का भयंकर खेल देखना है उन्हें भयभीत नहीं होना चाहिए। न स्वयं से भयभीत, न बिना कारण भयभीत, न मृत्यु से भयभीत, न किसी दूसरे व्यक्ति से भयभीत, न भटकती हुई आत्माओ से भयभीत, न मंत्र-तंत्र से भयभीत, भविष्य में क्या होगा इसका भी भय नहीं, लोग क्या कहेंगे इसका भी भय नहीं, कोई मेरी निंदा न कर दे इसका भी भय नहीं।

तो आइये हम सब मास्टर सर्वशक्तिवान, इस संसार में काँटो के जंगल में, इस भयानक वन में शेर की तरह निर्भय होकर विचरण करें। जिन्हें कोई भी भय नहीं, जिन्हें कोई भी चिंता नहीं। हमें चिंतित होने की जरूरत नहीं। जब भगवान हमारे सामने खड़ा होकर स्वयं कह रहा है, "सारी चिंताये मुझे दे दो। बेफ़िक्र बादशाह बन जाओ।" तो जब भगवान हमारी चिंताये लेने को तैयार हैं तो हम इस चिंता से भयभीत क्यों? की "मेरे बच्चो का क्या होगा? कहीं ऐसा न हो जाये, कहीं वेसा न हो जाये?"

हम अपनी शक्तियों को पहचाने और याद करें, भक्ति में हमारे नाम का स्मरण करते ही भक्त निर्भय हो जाते हैं, चिंताओ से मुक्त हो जाते हैं, उनकी समस्याए हल हो जाती हैं। याद करें, जिनके नाम के स्मरण से ही लोगो के डर खतम हो जाते हैं वह स्वयं भयभीत क्यों? तो अपने सारे डर अपने परमपिता को अर्पित कर दो, अपने मनोबल को इतना अधिक बढ़ा दो कि कोई भी चीज़ आपको डरा न सके। ऐसे नहीं कि कहीं आवाज़ हो और डर जाये, बम गिरने लगे और डर जाये, पुलिस आ जाये और डर जाये, कुछ अनहोनी घटनाये होने लगे और डर जाये..! अपने को बार-बार यह पढ़ा दे कि "मैं निर्भय हूँ।" विशेषरूप से आपको यदि किसी भी प्रकार का भय अंतर्मन में समाया हुआ है तो सवेरे उठकर रोज़ सात बार अभ्यास कर दे, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, निर्भय हूँ। मेरे साथ सबकुछ अच्छा होगा, मेरे वायब्रेशन्स

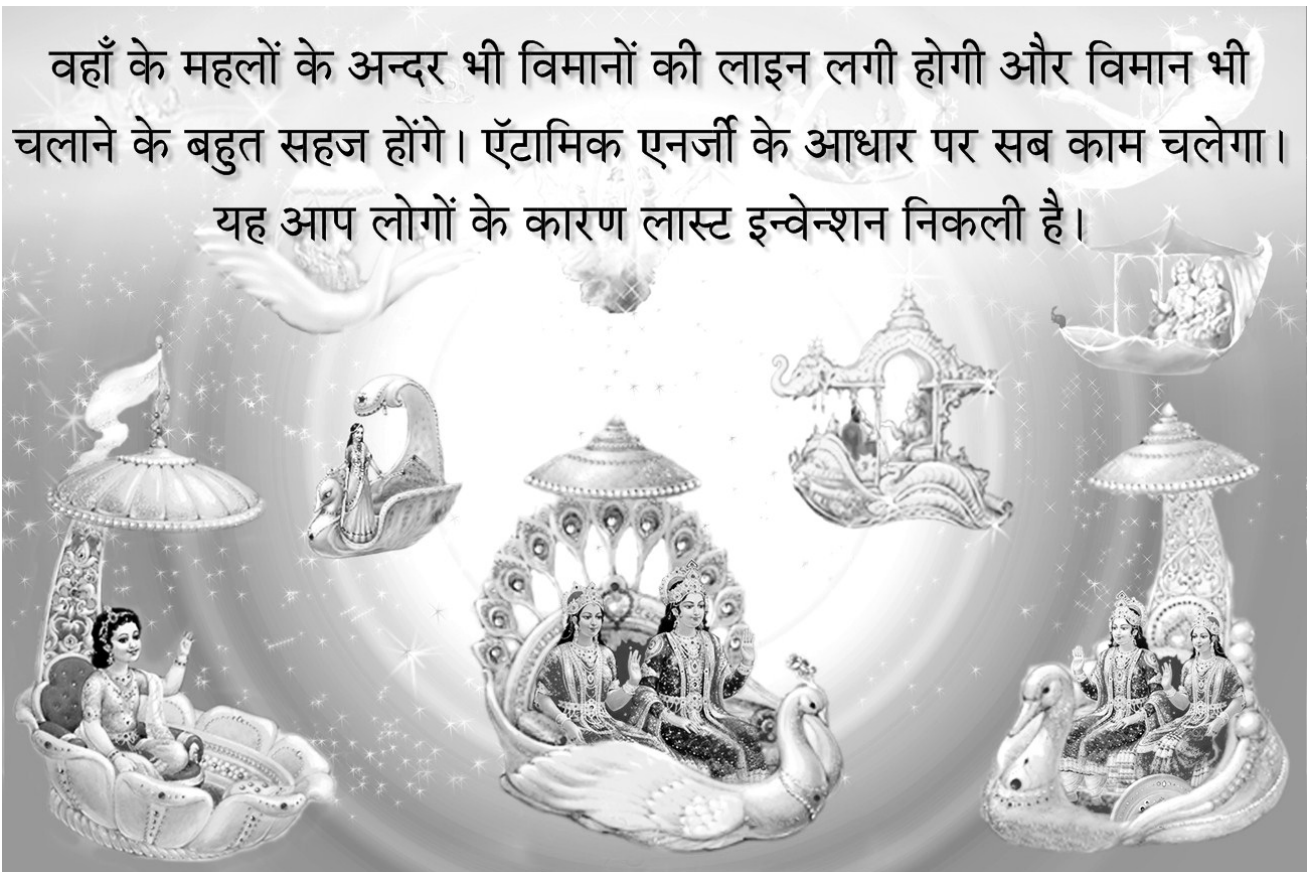
से तो दूसरो के भी भय समाप्त हो जायेंगे ।" अगर हम मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहते हैं तो हमसे चारो ओर शक्तियों की लाल किरणे फैलती रहती हैं और वह लाल किरणे दिखाई देती हैं भटकती आत्माओ को क्योंकि वह भी बोडीलेस (अशरीरी) हैं । वह हमसे भयभीत होते हैं । उन्हें लगता है हमारे चारो ओर तो अग्नि जल रही है जिसमे वह जलकर नष्ट हो जायेंगे । इसलिए हमे उनसे भी डरने की जरूरत नहीं ।

तो आइये आज सारा दिन हम यह संकल्प करें, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, महाकाल की संतान मास्टर महाकाल अकालमूर्त आत्मा हूँ ।" और अपने को भ्रुकुटी के मध्य में चमकती हुई बहुत-बहुत तेजस्वी आत्मा अनुभव करें । "मरता तो यह देह है... मैं तो मरती ही नहीं... मैं तो यह वस्त्र बदलती हूँ... मैं तो मास्टर महाकाल हूँ ।" और अनुभव करें, "बापदादा महाकाल के रूप में सामने खड़े हुए मुझे दृष्टि दे रहे हैं ।"

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

वहाँ के महलों के अन्दर भी विमानों की लाइन लगी होगी और विमान भी चलाने के बहुत सहज होंगे । ऍटामिक एनर्जी के आधार पर सब काम चलेगा । यह आप लोगों के कारण लास्ट इन्वेन्शन निकली है ।



"हमे बाप समान बनना हैं" यह सोचकर कईयो को यह बहुत उंची मंज़िल नज़र आती हैं । कहाँ बाबा संपूर्ण, कहाँ हम! लेकिन यदि हम कुछ श्रेष्ठ स्वमानो का अभ्यास करें और अपने योग के चार्ट को बढ़ाये तो बाप समान बनना हमारे लिए सहज हो जायेगा । पहले तो, हम इस स्वमान को स्वीकार करें की "मैं बाप समान हूँ" जो भी इस पर कार्य करना चाहे वह यह न सोचे कि मुझे बाप समान बनना हैं बल्कि यह संकल्प करें, "मैं बाप समान हूँ" ।

दूसरी बात, "मैं विश्व कल्याणकारी हूँ ।" तिसरा "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ" और चौथा "मैं पूर्वज हूँ ।" यह चार स्वमान हैं, इनका बहुत गहराई से अनुभव करें और अभ्यास करेंगे । यह श्रेष्ठ स्मृतियाँ हैं, इनसे हमारा स्वरूप बाप समान बनता जायेगा । बेशक, बाप समान बनना सर्वोच्च स्थिति हैं क्योंकि जो साक्षात बाप समान बनेंगे वही साक्षात्कारमूर्त बनेंगे । उन्हीं के द्वारा संसार में बाबा की जयजयकार होगी, अनेक तरह के साक्षात्कार होंगे संसार को, सारा संसार पीछे आ जायेगा, सबको बाबा का ज्ञान मिल जायेगा, सभी धर्मों की आत्माओ को मुक्ति का वरदान मिल जायेगा ।

बहुत-बहुत उंची स्थिति हैं बाप समान बनना । इसकी ओर तेज़ी से कदम बढ़ाये और जब संसार को देखे, जब दूसरो को देखे, जब किसी सभा में भाषण के लिए जाये तो इस स्वमान में स्वयं को स्थित कर दे कि "मैं बाप समान हूँ" । तो देखने वालो को हमसे यही महसूसता होगी और हमसे बहुत सुंदर वायब्रेशन्स सभी को जाते रहेंगे । साथ-साथ बाबा की तीन बातें अवश्य याद करेंगे जिनको ऐसे महान लक्ष्य तक पहुँचना हैं- "संपूर्ण निर्विकारी, संपूर्ण निराकारी और संपूर्ण निरहंकारी" । इन तीनों का अंदर से बहुत गहरा कनेक्शन हैं । जो निराकार बनते हैं वही संपूर्ण निर्विकारी बन जाते हैं और जो निर्विकारी बनते हैं वही संपूर्ण निरहंकारी भी बन जाते हैं अर्थात् मैं-पन से पूरी तरह मुक्त हो जाते हैं, उनका चित्त पूरी तरह निर्मल हो जाता हैं और सभी के लिए निर्मल प्यार और शुभ भावनाओ से भर जाता हैं ।

तो हम इन तीन महान धारणाओ पर भी बहुत ज्यादा ध्यान दे । हम ऐसा महसूस करते रहे जैसे यह शरीर हैं ही नहीं, मैं निराकार आत्मा हूँ... इससे हमारी पवित्रता बहुत बढ़ती जायेगी । परंतु हम यह लक्ष्य भी बना ले कि मुझे संपूर्ण पवित्र बनना हैं । जिसे भी देखे, आत्मा देखे । हमारी आत्मिक दृष्टि हमें संपूर्ण पवित्र स्थिति की ओर ले चलती हैं । साथ में "मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ" यह भी बहुत अभ्यास करते रहे और मैं-पन की संपूर्णरूप से अविद्या हो जाये । मैं और मेरा हमारे पास तनिक भी न रहे ऐसा बहुत ध्यान हमें देना हैं ।

तो आज सारा दिन हम अभ्यास करेंगे, "मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ। निराकार आत्मा हूँ और परमधाम में बाबा के पास हूँ, बाप समान हूँ। जैसे बाबा की किरणे संसार में फैल रही हैं वैसे मुझसे भी यह किरणे संसार में फैल रही हैं।" साथ-साथ बाबा का महावाक्य याद कर ले, "बच्चे, यदि तुम्हें बाप समान बनना है तो जैसे मैं संसार के खेल को साक्षी होकर देखता हूँ वैसे ही तुम भी देखो और सबको सकाश दो।"

ओम शांति...

बाबा ने आकर हमे अधिकारी बच्चे बनाया हैं और सब तरह की अधिनता से छुड़ा दिया हैं। विशेषरूप से प्रकृति की अधिनता, माया की अधिनता। यह देह भी प्रकृति हैं, इसकी भी अधिनता से हमे छुड़ा रहे हैं और मायाजीत बना रहे हैं। ऐसा सुख हमे देने आये हैं कि सतयुग में प्रकृति की ओर से हमे कोई भी कष्ट नहीं होगा। प्रकृति हमारी सच्ची मित्र होगी, सहायक होगी, हमारे अधिकार में होगी। सोचे, इतना बड़ा हमारा स्टेटस (रुतबा) हमे दे देते हैं कि प्रकृति जिस पर आज किसी मनुष्य का अधिकार नहीं हैं उस पर भी हमारा अधिकार हो जाता हैं..! सोच ले, प्रकृति पर तो वैज्ञानिको का भी अधिकार नहीं हैं, साइन्स की शक्ति भी जहाँ फैल होती हैं वहाँ हमारी यह साइलेन्स की शक्ति कितनी सफल हो रही हैं..!

तो हम प्रकृति की अधिनता से स्वयं को मुक्त करते चले और माया की अधिनता से भी स्वयं को मुक्त करते चले तब हम बहुत शक्तिशाली बन जायेंगे। प्रकृति की अधिनता का अर्थ हैं कि यह जो हमारा देह हैं, इसमे जो कर्मेन्द्रियाँ हैं इनकी अधिनता से परे। देह हमे आकर्षित न करें, कर्मेन्द्रियों में चंचलता न हो, कर्मेन्द्रियाँ हमे अपने वश न कर ले, किसी भी तरह का रस हमे अपने अधिन न बना ले, ऐसी आत्माये प्रकृति की मालिक बन जायेंगी। प्रकृति की हर तरह की अधिनता से उपर चली जायेंगी।

तो आइये हम गहराई से विचार करें। पहला अभ्यास करना हैं, "मैं आत्मा इस देह की, इन कर्मेन्द्रियों की, इन संपूर्ण प्रकृति की मालिक हूँ।" यह मालिकपन की अनुभूति हम अपने अंदर में बढ़ाते चले। और जो जितना ज्यादा देह से न्यारे होने की प्रेक्टिस करते हैं उसका अर्थ हैं कि वह देह के आकर्षण से परे हो गये हैं, वह देह की अधिनता से मुक्त हो गये हैं। तो जो जितना देह से न्यारे होने का अच्छा अभ्यास करते रहेंगे वही मानो प्रकृति की अधिनता से मुक्त होते रहेंगे और समय पर यह प्रकृति भी उन्हें बहुत मदद करेगी। यह देह के रोग-शोक उन्हें ज्यादा कष्ट नहीं पहुँचायेंगे।

तो आइये हम सभी प्रकृति को अपने अधिन कर ले और इसी तरह माया की अधिनता, माया के भिन्न-भिन्न तरह के संकल्प, माया जिनको विचलीत करती हैं, माया जिनको अपनी ओर आकर्षित करती हैं वह तो माया के गुलाम हो गये, वह भगवान के बच्चे भी कहाँ ठहरे! भगवान के बच्चे तो बहुत शक्तिशाली होते हैं, माया उनकी गुलाम बन जाती हैं। हमे इस माया को अपना गुलाम बना लेना हैं ताकि यह माया के पाँचो विषेले सर्प हमारी छत्रछायाँ बन जाये जो हमारी यादगार विष्णु स्वरूप में दिखाया गया हैं कि पाँचो सर्प विषेले साँप छत्रछायाँ

बन गये हैं। तो ऐसा बहुत सुंदर अभ्यास हम करते रहेंगे और लक्ष्य बनायेंगे "मैं इस प्रकृति का मालिक हूँ"। स्वमान रहे आज "मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ और इस संपूर्ण प्रकृति का मालिक हूँ... मैं मायाजीत हूँ" यह नशा रखना है सारा दिन, "मैं मायाजीत हूँ, मैं माया से बहुत अधिक पॉवरफ़ुल हूँ और प्रकृति को मुझे वायब्रेशन्स देते रहना है।" बार-बार एक सेकण्ड में देह से न्यारे होने का अभ्यास करते रहेंगे। कभी-कभी अनुभव करेंगे कि यह देह मानो है ही नहीं, देह हमें आकर्षित नहीं कर रही है, "मैं अलग, यह देह अलग।" इस तरह का अभ्यास करते-करते हम इस देह के मालिक बन जायेंगे।

तो आज सारा दिन यह बहुत सुंदर प्रेक्टिस चलती रहे और हम माया को और प्रकृति को अपना गुलाम बना ले।

ओम शांति...

हमारे पास हैं साइलेन्स पॉवर, हमारे पास हैं परमात्म विल पॉवर (इच्छा शक्ति) । हम यदि यह याद रखे कि "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और परमात्म विल पॉवर मेरे पास हैं ।" तो हमारा स्वरूप इस संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली होगा । हमसे चारो ओर बहुत पॉवरफुल वायब्रेशन्स फैलेंगे जो संसार का कल्याण करेंगे ।

हम याद रखेंगे, संसार के लोग बड़े-बड़े काम जो भी करते हैं वह विल पॉवर के आधार से करते हैं । बाबा ने कहा है कि "तुम्हारे पास हैं परमात्म विल पॉवर । तुम संकल्पो से सबकुछ कर सकते हो । मन में केवल एक वही संकल्प हो जो करना है तो वही हो जायेगा ।" नेगेटिव संकल्प मार्ग में दीवार का काम करते हैं ।

तो हम अपनी शक्तियों को पहचाने, साइलेन्स पॉवर को पहचाने । साइलेन्स पॉवर का अर्थ है मन जब साइलेंट (शांत) हो जाता है तब वह बहुत पॉवरफुल होता है, तब उससे बहुत शक्तिशाली वायब्रेशन्स चारो ओर फैलते हैं । इसको ही विल पॉवर, साइलेन्स पॉवर, मनोबल कहते हैं ।

हम अपनी साइलेन्स पॉवर को बढ़ाते चले और इसके लिए आवश्यक हैं कि हम अपने संकल्पो की गति को कम करें । संकल्प यदि व्यर्थ हैं, संकल्प यदि नेगेटिव हैं तो उनकी गति बहुत बढ़ जाती है और तब हमारी शक्तियाँ जो हमारे मन में होती हैं वह नष्ट होने लगती हैं, हम कमजोर पड़ने लगते हैं । तो एक तो हमे बचत करनी है, दूसरा, साइलेन्स पॉवर को बढ़ाने के लिए "मैं आत्मा इस देह से अलग हूँ । मैं अलग, यह देह अलग" यह बहुत अच्छी अनुभूति करें । दूसरा अनुभव करें अपने महान स्वमान की । इन दोनो अभ्यास से हमारे संकल्पो की गति बहुत धीमी होती जायेगी, हमारा मनोबल बढ़ता जायेगा और हम पॉवरफुल बनकर हर समस्या का सहज सामना कर सकेंगे, उनका समाधान कर सकेंगे । समस्याये और चुनौतियाँ हमे परेशान नहीं करेगी बल्कि जितनी चुनौतियाँ जीवन में आयेगी उतना ही हम अधिक पॉवरफुल बनते जायेंगे । और शक्तिशाली, विवेकशील मनुष्य वही होता है जो हर परिस्थिति या हर चुनौती मे स्वयं को और पॉवरफुल बनाये, अपनी विवेकशक्ति को और ज्यादा बढ़ाये ।

तो आइए हम साइलेन्स पॉवर पर ध्यान दे । विनाशकाल में जिनके पास यह साइलेन्स पॉवर होगी, प्रकृति उनकी दासी होगी, प्रकृति उनकी सुरक्षा करेगी, प्रकृति उनके आदेश का

पालन करेगी । यदि प्रकृति बहुत तूफ़ान मचा रही हो, बिलकुल सबकुछ समाप्त कर देना चाहती हो तो ऐसी महान आत्माये संकल्प करेंगे, "मैं प्रकृति का मालिक, स्वराज्य अधिकारी हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ" और प्रकृति को आदेश देंगे "शांत हो जाओ ।" इससे प्रकृति शांत होने लगेगी, उसके तूफ़ान शांत होने लगेंगे ।

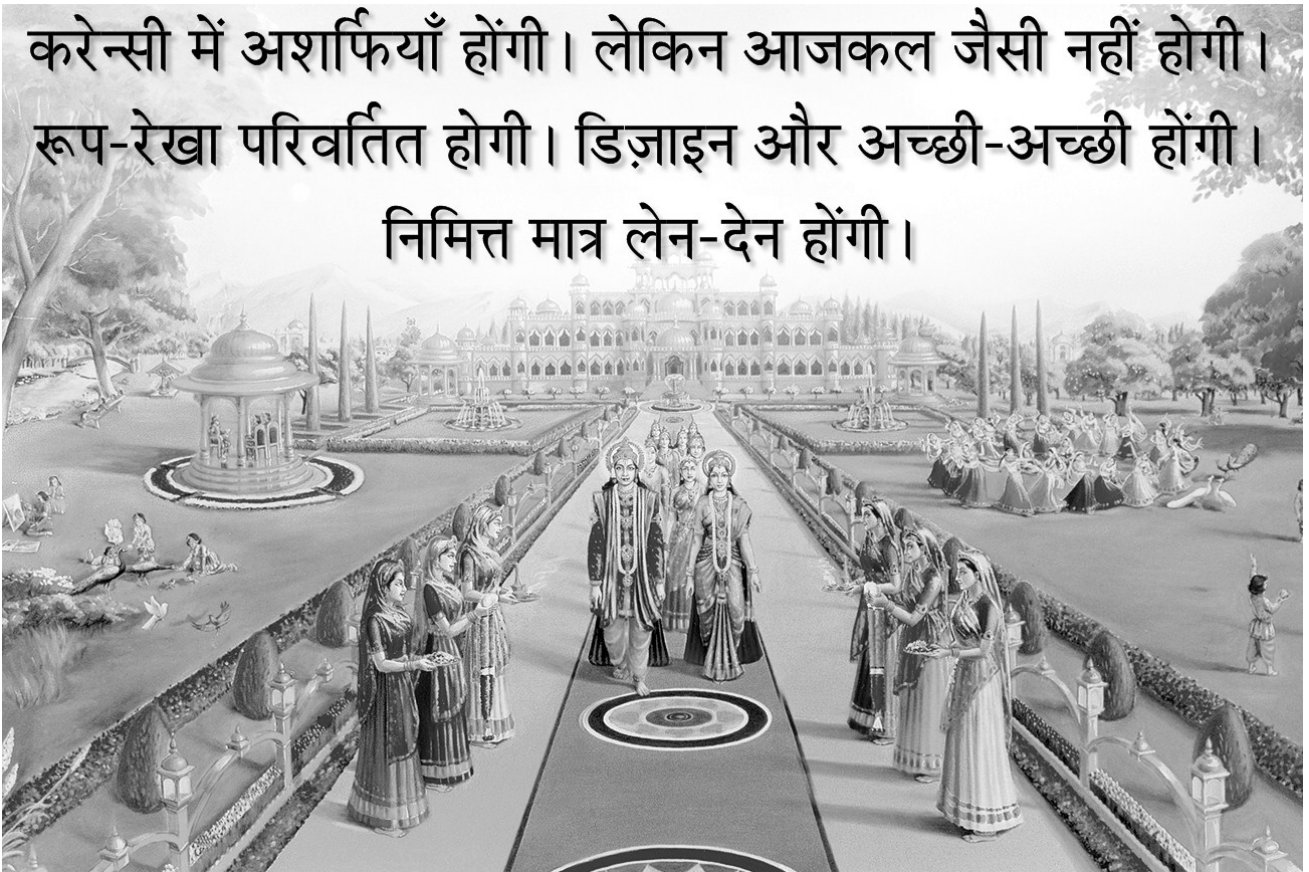
यह बहुत बड़ी शक्ति हैं, इससे हमारा वर्तमान जीवन भी खुशीयो से भरपूर, सफलताओ से संपन्न हो जायेगा और आने वाला भविष्य भी हम निश्चिंतता पूर्वक बाबा के छत्रछायाँ में व्यतित करेंगे ।

तो आज सारा दिन यही स्वमान अभ्यास करेंगे, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान स्वराज्य अधिकारी हूँ ।" और अभ्यास करते रहेंगे चलते फ़िरते कि "सर्वशक्तिवान की शक्तियो का फ़ॉउंटेन (फ़व्वारा) मेरे उपर पड़ रहा हैं, मानो मेरे उपर शक्तियो की बरसात हो रही हैं ।"

ओम शांति...

ऋषर्ण युग की जीवन् शैली

करेन्सी में अशार्फियाँ होंगी । लेकिन आजकल जैसी नहीं होगी ।
रूप-रेखा परिवर्तित होगी । डिज़ाइन और अच्छी-अच्छी होंगी ।
निमित्त मात्र लेन-देन होंगी ।



हम इस संसार में पदमापदम भाग्यवान हैं, जो भगवान हमारे घर मेहमान बनकर आये। और केवल आये नहीं, बल्कि बहुत कुछ देने आये। ताज, तिलक और तख्त साथ में लेकर आये। ताज दिखाकर कहते हैं, "आओ बच्चे, मेरे इस ताज को स्वीकार करो।" और केवल इतना ही नहीं, वह स्वयं भी हमारे हो गये। हमने तो कभी सोचा भी नहीं था कि स्वयं भगवान हमें मिल जायेंगे और परमपिता, परमशिक्षक और परमसद्गुरु के रूप में हमारी पालना करेंगे। हम इन तीनों की पालना में पल रहे हैं। जरा अपने भाग्य को देखकर मुस्कुराओ, स्वयं भगवान हमारी पालना कर रहे हैं। बाप बनकर प्यार से पालना करते हैं, परमशिक्षक बनकर हमें संपूर्ण रहस्य सुना देते हैं, आदि-मध्य-अंत का ज्ञान दे देते हैं। अपना भी संपूर्ण ज्ञान दे देते हैं ताकि हमारे चित्त का अज्ञान अंधकार पूरी तरह से नष्ट हो जाये, हम प्रकाशित हो जाये। कोई ऐसा रहस्य न रह जाये जिसको हम न जानते हो। और परमसद्गुरु बनकर हमें गाइड कर रहे हैं, हमारी जीवन नैया के खिवैया बन गये हैं, हमें घर ले जा रहे हैं, हमें शक्तियाँ और वरदान दे रहे हैं, अपने आशिर्वाद का हाथ हमारे सिर पर रखते हैं। तो जरा सोच ले, कितने अधिक भाग्यवान हैं हम।

लेकिन यह भी साथ-साथ सोच ले कि हमें फिर क्या-क्या करना है? यदि वह बाप बनकर प्यार से हमारी पालना कर रहे हैं तो हमें उसके प्यार का रिटर्न भी देना है। बाप सदा ही बच्चों को प्यार नहीं करता, सदा ही उनकी पालना नहीं करता परंतु उनको योग्य बनाकर दूसरों की पालना कराता है। हम ऐसा ही करेंगे। वह हमारा टिचर बनकर आया है..! तो क्या हमें यह नशा है कि इस सृष्टि का संपूर्ण ज्ञान हमारे पास है? क्या हमें यह नशा है कि स्वयं भगवान हमें रोज पढ़ाने आते हैं? हम गॉडली स्टुडेंट हैं, सबसे बड़े विश्वविद्यालय के स्टुडेंट हैं तो क्या इतना ही ध्यान हमारा उसकी पढ़ाई पर भी है? क्या हम उसकी पढ़ाई को एंजोय करते हैं? क्या उसका ज्ञान हमारे लिए बल बनता जा रहा है? वह हमारा परमसद्गुरु है और सद्गुरु के रूप में जो कुछ हमें दे रहा है, क्या हमें भी नशा है कि हमें यह-यह मिल रहा है? क्या हमें नशा है कि उनकी छत्रछायाँ में हम जीते हैं? जिनका सद्गुरु स्वयं भगवान हो उनकी नैया तो मानो पार हो ही गई। सोचने की, चिंता करने की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं है।

तो हम परमसद्गुरु की छत्रछायाँ में स्वयं को महसूस करेंगे, उनका वरदानी हाथ सिर पर अनुभव करेंगे और इस जीवन की यात्रा को एंजोय करेंगे। आज सारा दिन याद रखेंगे, जो स्वयं भगवान हैं वही हमारा पिता हैं, वह हमारा परमशिक्षक और परमसद्गुरु भी हैं, उसके

साथ हमारा जीवन चल रहा है, हम उसकी पालना में पल रहे हैं। अपने भाग्य पर एक दृष्टि डालते हुए आज सारा दिन आनंद पूर्वक व्यतित करेंगे और बापदादा का हर घंटे में एक बार आह्वान करेंगे। उसको देखेंगे सामने, बाबा परमधाम छोड़कर नीचे आ रहे हैं, उनको उतरते हुए देखे... अपनी तेजस्वी किरणे चारो ओर फैलाते हुए वह नीचे आ रहे हैं... और आ गये हमारे सिर के उपर, दिव्य छत्रछायाँ बन गये।

तो आज परमसद्गुरु के छाया में उनके वरदानी हाथ के नीचे रहने का अनुभव करेंगे।

ओम शांति...

हमने बाबा को संपूर्ण पवित्र बनने का वचन दिया है। भगवान इस धरा पर आये, उसने हम सभी से विकारो का विष माँग लिया। जिन विकारो ने जन्म-जन्म हमे कष्ट दिया, उसने आकर हमे अहसास कराया कि, "बच्चे, अब इन्हें छोड़ दो, मुझे दे दो। मैं तुम्हारा यह विषपान करने आया हूँ।" और जो देवकूल की महान आत्माये हैं उन्होंने भगवान की इस आज्ञा को स्वीकार किया और पवित्र बनना प्रारंभ कर दिया। एक-एक विकार को छोड़ दिया।

एक-एक विकार से आप बात करें, "हे काम महाशत्रु, अब तुमसे मेरा कोई नाता नहीं। हे क्रोध, तुमने मुझे अपनी अग्नि में बहुत जलाया, अब तो मुझे शीतल होना है। हे लोभ, तुम मुझे नचाते रहे। कभी धन के पीछे, कभी वैभवो के पीछे। अब तो मुझे भगवान मिल गया है, मैं तृप्त आत्मा बन गया हूँ। हे मोह, अब तो मुझे ज्ञान हो गया कि सब आत्माये हैं, यह देह तो विनाशी है, आज के नाते (रिश्ते) कल नहीं रहेंगे, पिछले जन्म के नाते अब नहीं हैं, अब के नाते अगले जन्म में नहीं होंगे, मुझे अब तुमसे मुक्त हो जाना है। हे अहंकार, तुम तो बड़े सूक्ष्म हो, तुमने मुझे अंधकार में रखा था। अब मैं प्रकाशित हो चुका हूँ, तुम भी भाग जाओ। हे ईर्ष्या-द्वेष, मैं तो महान हूँ, सबको आगे बढ़ाने वाला, मुझे किससे ईर्ष्या करनी है? मुझे किससे बदला लेना है? सब तो मेरे अपने हैं।" इस तरह के चिंतन से स्वयं को निर्विकारी बनाते चले और एक बार जो चीज छोड़ दी उसे दोबारा ग्रहण नहीं करना है। यह श्रेष्ठ संकल्प कर ले, बस जो छोड़ दिया सो सदा के लिए छोड़ दिया। जैसे अच्छे लोग जमीन पर गिरी हुई चीज को स्वीकार नहीं करते, उसको उठाते नहीं हैं, जो दान दे दिया जाता है उसको वापस नहीं ले सकते, इसको बहुत गलत माना जाता है। वैसे ही हमने इन विकारो को फेंक दिया है, थूंक दिये हैं विकार, दोबारा इनको ग्रहण नहीं कर सकते। दान कर दिया है भगवान को, वापस नहीं ले सकते। यह चिंतन हमे बहुत बल देता है।

पवित्र बनने के लिए यद्यपि योग की साधना की परम आवश्यकता है। बिना योग की साधना के, बिना स्वमान की साधना के, अशरीरीपन और आत्मिक दृष्टि के साधना के बिना पवित्रता का बल बढ़ेगा नहीं, कर्मेन्द्रियाँ शीतल नहीं होंगी। परंतु हमे तो अंग-अंग को शीतल करना है। इसलिए अशरीरी होने का अभ्यास बार-बार करते रहना है, "मैं आत्मा अलग, यह देह अलग।" साथ-साथ स्वराज्य अधिकारी की स्थिति को बढ़ाते चलना है। "मैं आत्मा हूँ, कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ, मन की मालिक हूँ। हे मेरे मन, अब तुम इन विकारो की तरह

बिलकुल न दौड़ो। मुझे तो पवित्र बनकर अब 21 जन्मों का राज्य-भाग्य प्राप्त करना है, मुझे तो पवित्र बनकर प्रकृति को पावन बनाना है, मुझे तो अब भगवान की बात माननी है। मैंने माया की बात जन्म-जन्म मानी। अब भगवान की बात माननी है।" इस तरह का चिंतन करेंगे और स्वयं को पवित्रता की ओर आगे ले चलेंगे।

पवित्रता एक सुंदर साधना है। किसी-किसी को इसमें थोड़ा कष्ट भी होता है क्योंकि वासनाओं के संस्कार प्रकोप बनकर मनुष्य को हराने लगते हैं। परंतु यदि यह याद करेंगे, "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ और मेरे साथ भगवान का बल है। उसने माया को जितने के लिए ही तो मुझे यह बल दिया है।" तो हमारी विजय होती चलेगी हम निरंतर आगे बढ़ते ही चलेंगे।

तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे, "मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ और उपर से बाबा की पवित्र किरणें मुझमें समाकर चारों ओर फैल रही हैं।" साथ ही साथ जिसे भी देखेंगे उसे आत्मिक दृष्टि से देखेंगे और संकल्प करेंगे, "मुझे इन सबको वायब्रेशन्स देने हैं, जिधर भी दृष्टि जाये, प्रकृति को भी पवित्र वायब्रेशन्स देने हैं।" इस तरह के अभ्यास से प्युरिटी बहुत ही स्ट्रोंग हो जायेगी।

ओम शांति...

पवित्रता हमारे जीवन का सर्वश्रेष्ठ शृंगार हैं। यह इस ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़ी पर्सनालिटी हैं और यही बाबा को बहुत प्रिय हैं। बाबा हमें पावन बनाने आये हैं क्योंकि अब हम सभी को घर चलना हैं। यदि आत्मा को हम पावन नहीं बनायेंगे तो हमें यहाँ काफ़ी कष्टों का अनुभव होगा क्योंकि यह देह छोड़कर सभी को वापस जाना होगा। इसलिए सभी विकारों से मुक्त होना परम आवश्यक हैं तभी आत्मा एक सेकण्ड में देह को छोड़कर घर जायेगी। अन्यथा जो भी विकार होगा वह आत्मा को नीचे की ओर खिंचता रहेगा। चाहे वह मोह हो, चाहे लोभ हो। यह दोनों विकार भी बहुत तंग करेंगे। इसलिए संपूर्ण पवित्रता को अपना लक्ष्य बनाना हैं और बाबा से प्रतिज्ञा करनी हैं कि हम पवित्र बनेंगे, संपूर्ण पवित्र बनेंगे। आपके साथी का अगर आपको साथ नहीं मिलता हैं तो यह बात बाबा तो स्वीकार नहीं करेगा। यदि कोई कहे कि मेरा साथी मुझे पवित्र रहने नहीं देता तो बाबा इसमें कुछ नहीं करेगा। जितनी अपवित्रता आत्मा में रह जायेगी उसकी सज़ाये बहुत ज्यादा होगी। इसलिए स्वयं को पवित्र बनाने की युक्तियाँ, विधियाँ स्वयं निकालनी हैं और यह काम कठिन नहीं हैं। अपने साथी को साथी बनाया जा सकता हैं, उसे सहज बनाया जा सकता हैं लेकिन अपने ही मन में यदि मोह होगा और यदि विकारों की इच्छा होगी तो फिर यह काम बहुत कठिन हो जायेगा।

तो पहले अपने मन को दृढ़ करें कि मुझे तो पवित्र बनना हैं। ऐसी अनेक आत्माये हैं, माताये हैं, भाई हैं जो पवित्र बनने के लिए कुछ भी सहन करने के लिए तैयार रहते हैं। सिर्फ तैयार ही नहीं रहते बल्कि वे करते हैं। बड़ीबड़ी कहानीया हैं, हजारों, लाखों कहानीया हैं माताओं की जिन्होंने पवित्रता को अपनाने के लिए अनेक कष्ट सहे, उन्हें मार पड़ी, जिन्हें बाहर गाड़ीयो में सोना पड़ा, जिन्हें बहुत गालीया सुनी पड़ी, जिन्हें समाज में बहुत अपमानित किया गया। लेकिन उन्होंने अपनी पवित्रता की प्रतिज्ञा को छोड़ा नहीं। आज वह बहुत शक्तिशाली हैं, भगवान के काम आ रही हैं।

जो मनुष्य विध्वंस से डर जाये, जो परिस्थितियों से घबराकर पवित्रता को छोड़ने लगे, "क्या होगा परिवार का? पति का क्या होगा?" यह सोचसोचकर जो पवित्रता के मार्ग से विमुख हो जाये उसे तो इस जीवन में कुछ भी मिलने वाला नहीं हैं।

तो आइये, हम बाबा को वचन दे कि, जब तक यह जीवन हैं तब तक पवित्रता ही हमारा शृंगार होगा, संसार की कोई शक्ति, कोई आकर्षण, कोई मायावी आकर्षण हमें इस पथ से विचलीत नहीं कर पायेगा।" और साथसाथ बहुत अच्छी प्रेक्टिस करेंगे, "मैं आत्मा जो

परमपवित्र हूँ, इस देह में अवतरीत हूँ। यह देह अलग है और मैं आत्मा अलग हूँ। मैं कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ। मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ।" अपने मन को, बुद्धि को, कर्मेन्द्रियों को, संस्कारों को आदेश देंगे कि "अब तुम पवित्र बन जाओ। तुम्हें संपूर्ण पवित्र बनना है। तुम बहुत आकर्षणों में भटके हो। अब तुम इधर-उधर भटकना छोड़ दो।"

ओम शांति...

ऋष्य युग की जीवन शैली

वहाँ भी फैमिली सिस्टम होगा। दुकानदार और ग्राहक का भाव नहीं होगा। मालिकपन का ही भाव होगा। सिर्फ आपस में एक्सचेन्ज करेंगे। कुछ देंगे, कुछ लेंगे, कमी तो किसी को भी नहीं होगी। प्रजा को भी कमी नहीं होगी। प्रजा भी अपने शरीर निर्वाह से पद्मगुणा भरपूर होगी। इसलिए मैं ग्राहक हूँ, यह मालिक है – यह भाव नहीं रहेगा। स्नेह की लेन-देन होगी। हिसाब-किताब की खींच-तान नहीं होगी। रजिस्टर नहीं होंगे।



यह सत्य है कि जो व्यर्थ और नेगेटिव से मुक्त रहते हैं उन्हें ही परमात्म अवॉर्ड मिलता है और परमात्म अवॉर्ड है विश्व की बादशाही! यह भविष्य का इनाम है और वर्तमान का इनाम होगा संपूर्ण सुख, संपूर्ण शांति, परमात्म प्रेम, सर्व खजाने, आत्मा पूरी तरह तृप्त और भरपूर हो जायेगी। बाबा अनेक वरदानों से ऐसी आत्माओं को संपन्न कर देगे।

तो आइये हम सभी योग अभ्यास बढ़ाकर व्यर्थ और नेगेटिव से मुक्त हो जाये। हमें बहुत ध्यान देना है अपने योग के चार्ट पर। ऐसा नहीं कि केवल 'मेरा बाबा, मेरा बाबा' कहा और संतुष्ट हो गये। हमें बाबा से नाता जोड़ना है, वह हमारा खुदादोस्त है इस स्मृति में रहना है। वह हमारा साथी है इस स्मृति में रहना है। साथ-साथ पॉवरफुल योग के द्वारा, अनेक ड्रिल के द्वारा हमें अपने को लाइट रखना है और अपने विकर्म विनाश भी करने हैं। योग से, पाँच स्वरूपों के अभ्यास से न केवल विकर्म विनाश होते हैं बल्कि सारे सदगुण, संपूर्ण पवित्रता, निर्भयता, रॉयल्टी और अनेक सुंदर जो धारणाये हैं वह जीवन में आ जाती हैं। हम न्यारे और प्यारे रहने लगते हैं, मन सब चीजों से उपराम होने लगता है, सर्व कर्मेन्द्रियों के रस पीछे छुटने लगते हैं क्योंकि ईश्वरीय रस का अनुभव बहुत ज्यादा होने लगता है। बहुत ध्यान दे अपने योग के पुरुषार्थ पर, अपनी दिनचर्या में कुछ प्लान (योजना) बनाये ताकि हम कर्म करते हुए या घरों में रहते हुए, भोजन बनाते हुए हम भिन्न-भिन्न तरह के सुंदर अभ्यास कर सकें। स्वमान में रहना, अशरीरी होना, बाबा से बातें करते रहना यह सब भी योग के अंतर्गत आता है। और इन सब भिन्न-भिन्न अभ्यासों के द्वारा अलग-अलग प्राप्ति होती है। विशेषरूप से इस स्वमान पर ध्यान देंगे, "मैं विजयरत्न हूँ।" इस स्वमान के अभ्यास करने से जो माया को जीतने की हमारे अंदर शक्ति है वह इमर्ज रहेगी। इसके साथ यदि यह भी करेंगे कि, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विजयरत्न हूँ और मायाजीत हूँ।" फिर यदि कोई विकार जीतना है तो उसके लिए याद करेंगे, "कामजीत हूँ, क्रोधमुक्त हूँ..." यह संकल्प सवेरे-सवेरे करने से माया को जीतने का बल हमें प्राप्त होता रहेगा लेकिन विशेष बल हमें मिलेगा जब हम सर्वशक्तिवान की शक्तियों को प्राप्त करेंगे। और यह शक्तियों की प्राप्ति परमधाम में जाकर या नीचे बाबा की किरणें प्राप्त करके की जा सकती है। इसका अभ्यास सारा दिन बढ़ाना है।

कोई यह नहीं कहे की हमारे पास तो टाइम नहीं है। टाइम मैनेज (आयोजन) करना पड़ता है। अगर आप सारा दिन काम करते हैं कंप्यूटर के साथ तो बीचबीच में एक-दो मिनट अपने कार्य को रोककर अच्छे अभ्यास किये जा सकते हैं। एक दिन के लिए एक अभ्यास

अपनी बुद्धि में लेकर चलो की आज मुझे यह अभ्यास करना है। या भिन्नभिन्न कर्म में अलग-अलग अभ्यास करने हैं। तो ऐसी कोई बात नहीं कि सारा दिन अच्छे से अच्छा योग का अभ्यास न हो सके। योगी बनेंगे तो बाबा की निरंतर मदद मिलेगी, उसकी छत्रछाया के सुंदर अनुभव होंगे और लगेगा कि बाबा ही आपका जिम्मेदार हैं। वह हमारी जिम्मेदारी सँभाल रहा है।

तो आज सारा दिन हम बापदादा का आह्वान करेंगे, अनुभव करेंगे बाबा हमारे पास आ जाता है, उसकी उपस्थिति अनुभव करेंगे। इसको आदत बना ले और फिर पॉवरफुल योग अभ्यास करेंगे कि, "मैं आत्मा परमधाम में सर्वशक्तिवान के साथ हूँ। हम दोनो साथ हैं। सर्वशक्तिवान की शक्तियाँ मुझमें समाती जा रही हैं।" यह अभ्यास बारबार करने से हम बहुत शक्तिशाली बन जायेंगे और स्वयं को बहुत लाइट महसूस करेंगे।

तो आइये आज योग के सुंदर अनुभव करें और योग की शक्ति स्वयं में भरकर विश्व को दान करें।

ओम शांति...

जरा गहराई से विचार करें, हम ज्ञान और योग के बल से अपनी राजाई स्थापित कर रहे हैं। इस नशे में स्थित हो जाये। हम केवल अपने लिए साधना नहीं कर रहे हैं, परंतु अपना राज्य भी स्थापित कर रहे हैं। तो हमें अपनी प्रजा में बल भरते चलना है। बहुत महत्वपूर्ण बात है, यदि हमसे प्रजा को बल ही प्राप्त नहीं होगा तो हम राजाई कैसे प्राप्त करेंगे? इसलिए योगयुक्त रहकर, "मैं पूर्वज हूँ" इस स्मृति से हमें चारों ओर वायब्रेशन्स देकर अपनी अनेक आत्माओं में जो हमारे राज्य में रहेगी, उन्हें पवित्रता का बल भी भरना है, उन्हें मदद भी करनी है। राजा का काम है अपनी प्रजा को मदद करना। वैसे हमारा भी यह मुख्य काम है कि हम अपनी प्रजा को पूर्णतः मदद करते चले।

तो इस नशे में स्थित हो जाये कि हम अपना राज्य स्थापित कर रहे हैं। तन, मन, धन से श्रीमत पर चलकर, ज्ञान और योग के बल से राज्य स्थापित करने में जैसे हमें सबकी पालना करनी है। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे राज्य में अनेक विभिन्न तरह की आत्माएँ होंगी। कोई बहुत उच्च पद पायेगा, कोई छोटा, कोई साधारण काम करेंगे, कोई बड़े काम करेंगे। लेकिन सब सुखी होंगे और बहुत शाहुकार और धनवान होंगे। राज्य स्थापना के लिए उसमें भिन्नभिन्न प्रकार की अनेक आत्माएँ चाहिए। इसलिए हमें सबके पुरुषार्थ को साक्षी होकर देखना है।

दूसरी बात, हम राज्य स्थापित कर रहे हैं तो हमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इतिहास इस बात का गवाह है कि अनेक बार अनेक मनुष्यों को राज्य स्थापित करना पड़ा। चंद्रगुप्त मौर्य से यह कहानी शुरू होती है और बाद में भी बहुतों ने अपना राज्य स्थापित किया। तो कितनी मेहनत की, कितना सहन करना पड़ा, कितनी बातें सुनी पड़ी, कितनी आशाओं और निराशाओं का दौर चलता रहा लेकिन वह हिम्मत नहीं हारे और अपना राज्य स्थापित कर दिया। अभी-अभी महात्मा गांधी के नेतृत्व में अपना राज्य स्थापित करने में कितनी मेहनत करनी पड़ी, कितने साल लग गये, कितना सहन करना पड़ा। हम यह सब अच्छी तरह जानते हैं।

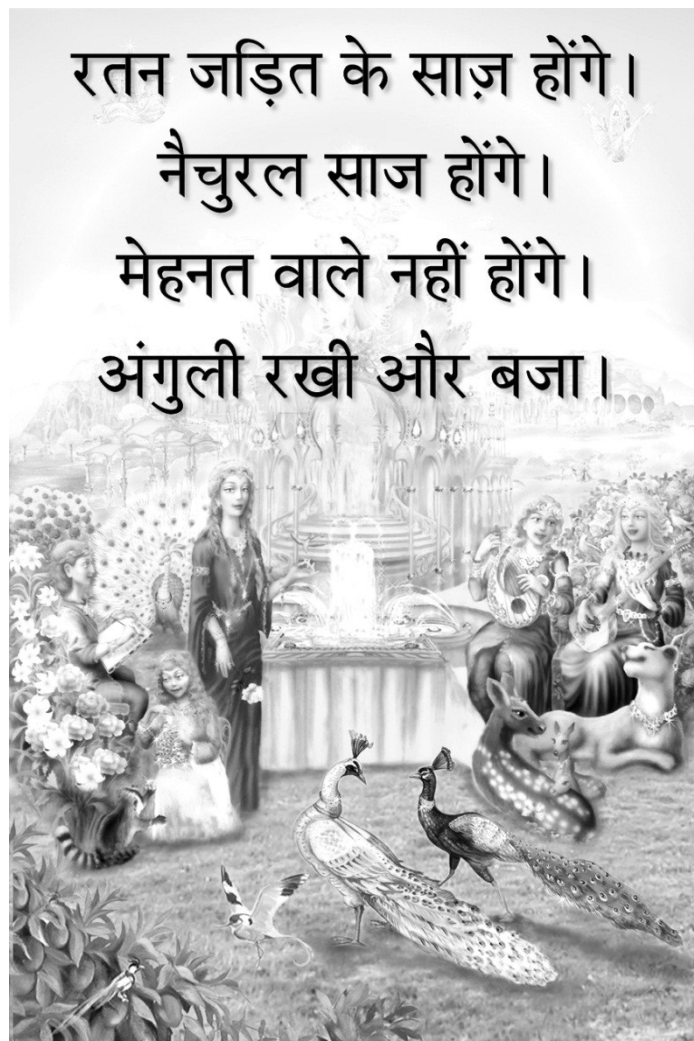
तो जिनको राज्य स्थापित करना है वह घबरायेंगे नहीं। राज्य स्थापित करने वाले निर्बल नहीं हो सकते। राज्य स्थापना में हमें माया से युद्ध करके उसको परास्त करना है ताकि वह हमारी अधिनता स्वीकार करले। यही वह मार्ग है जिसमें अनेक लोग हार खाकर पीछे हट जाते हैं, जिसमें अनेक लोगों के जीवन में निराशा का अंधकार आ जाता है। जो हिम्मत हार

जाते हैं वह अपनी शक्तियों को भूल जाते हैं। लेकिन हमें याद रखना है कि इस युद्ध के मैदान में हमारा साथी और हमारा परम सद्गुरु स्वयं सर्वशक्तिवान हैं, उसकी छत्रछाया होते हुए, उसका साथ होते हुए, उसके द्वारा दिये गये अस्त्रशस्त्र होते हुए हम माया को अवश्य जीत लेंगे। माया हमें हरा नहीं सकती क्योंकि हम माया से बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। ऐसी स्मृतियों के साथ अपनी शक्तियों को बढ़ाते चलेंगे।

आज सारा दिन यही याद रखेंगे कि, "हम अपना राज्य स्थापित कर रहे हैं, हम बहुत शक्तिशाली हैं और हमारा परमसद्गुरु छत्रछाया बनकर हमारे सिर के उपर स्थित हैं।" यह स्वरूप देखेंगे, "मैं भी बहुत शक्तिशाली मास्टर सर्वशक्तिवान और सिर के उपर सर्वशक्तिवान की छत्रछाया हूँ।" और सारा दिन अपनी प्रजा की पालना करते रहेंगे। सबको शक्तियों के और पवित्रता के वायब्रेशन्स देते रहेंगे। इस अभ्यास के द्वारा आज सारे दिन को एंजोय करेंगे।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



हमे संपूर्ण फ़रिश्ता बनना हैं । इसके लिए बहुत आवश्यक हैं निराकारी बनना, निर्विकारी बनना और निर्हकारी बनना । हम प्रेक्टिकल में शुरु करें निर्हकारी बनने से । अपने अंदर छूपे हुए अहंकार को पहचाने । गीता में तीन शब्द आये, घमंड, अभीमान और अहंकार । तीनों की अलग-अलग व्याख्या कर दी गई ।

घमंड:- बड़ा मगरूर जिस व्यक्ति में होता हैं, 'यह व्यक्ती बड़ा घमंडी हैं, किसी से बात ही नहीं करता ।'

अभीमान:- 'इसे अपने धन का अभीमान बहुत हैं', 'इसे अपनी बुद्धि का अभीमान बहुत हैं', 'इसे अपनी सुंदरता का अभीमान बहुत हैं ।'

और तीसरा हैं,

अहंकार:- जो बहुत सूक्ष्म हैं, जो मैं-पन से जुड़ा हुआ हैं । सूक्ष्मरूप से मनुष्य को रहता हैं, 'मैं बड़ा हूँ, मैं घर का मालिक हूँ, 'मैं इनचार्ज हूँ, मेरी आज्ञा के बिना कुछ नहीं होना चाहिए' ।

अहम, अहंकार यानी अपने को 'कार' (देह) समझना, देहभान में रहना यह अहंकार के अंतर्गत आता हैं ।

तो हमे घमंड भी छोड़ना हैं, अभीमान भी छोड़ना हैं और अहंकार से भी मुक्त होना हैं । हमे निरभिमानी बनना हैं, निर्हकारी बनना हैं । सोचे, भगवान जो सबसे बड़ा हैं लेकिन सबसे अधिक निर्हकारी । ब्रह्मा जो इस संसार में पहले नंबर की आत्मा हैं वह भी पहले नंबर का निर्हकारी । तो हम छोटे में अहंकार क्यों? हम भी अपने से बात करें, यदि हमारे पास बुद्धि हैं तो बड़ी अच्छी बात हैं हम अपनी बुद्धि का सदुपयोग करें । उसका अहंकार होने से तो मान लो बुद्धि में आग लगती रहेगी और बुद्धि की शक्तियाँ नष्ट होती रहेगी । हमारे पास यदि बहुत धन हैं तो धन का अभीमान क्यों? धन हैं तो उसका सदुपयोग करें, परोपकार में लगाये, अपने परिवार को भी सुखी करें, स्वयं को भी सुखी करें, अच्छे कार्यों में उसका उपयोग करें, जनकल्याण करें । आपके पास सुंदरता हैं तो उसका भी अभीमान क्यों? ठीक हैं, सुंदर तो देह हैं, मैं तो इससे अलग चैतन्य आत्मा हूँ, देह तो अलग हैं । सुंदर देह मिली हैं यह मेरे अच्छे भाग्य की निशानी हैं । मैं इसको दिव्यगुणो से इसकी सुंदरता को चार चाँद लगाउ । 'मैं घर में

बड़ा हूँ, मैं इनचार्ज हूँ, मैं मालिक हूँ यह तो छोटीसी बात है, कार्यों की जिम्मेदारी हमे मिली है । आज हम इनचार्ज हैं, कल कोई और था और कल कोई और होगा । इन सब बातों का भी अहंकार नहीं । हमें जो पद पॉजिशन भी मिला है उसे हम दूसरों को सुख देने में लगाये तो वह पद हमारा अविनाशी बन जायेगा । इस सृष्टिचक्र में बारबार हमें श्रेष्ठ पद मिलेगा क्योंकि अपने श्रेष्ठ पद को पाकर हम दूसरों की सेवा करेंगे उनका कल्याण करेंगे ।

तो संकल्प करें हमें अपने अहम को भी सूक्ष्मरूप में पहचानकर उससे सदा के लिए मुक्त हो जाना है क्योंकि इसीसे बुद्धि में दिव्यता आती है, इसीसे जीवन तेजस्वी बनता है और इसीसे हम अत्यधिक योगयुक्त होने में सफल होते हैं, यही तो हमारा लक्ष्य है । अगर छोटी छोटी चीजों का अभीमान हम रखेंगे तो बड़ी प्राप्ति से तो वंचित ही रह जायेंगे और यह छोटीछोटी चीजें तो विनाशी हैं, यह सदा हमें सुख भी नहीं देती हैं । आज धन का सुख है, कल संभव है वह न रहे लेकिन ईश्वरीय सुख, बड़ी प्राप्ति, बड़ी स्थिति, सर्वशक्तियों की प्राप्ति, वरदानों की प्राप्ति परम सद्गुरु से । इसको प्राप्त करना हमें ध्येय बनाये । तो छोटे अभीमान को छोड़कर रुहानी रुहाव अपने अंदर धारण करें ।

तो आज सारा दिन यह अभ्यास करेंगे । "मैं इस सृष्टि पर महान आत्मा हूँ, पूर्वज हूँ, मेरा जन्म ही दूसरों की पालना के लिए हुआ है, मेरा जन्म ही महान कार्यों के लिए हुआ है" और बाबा से सकाश लेकर बारबार सारे संसार में फैलाते रहे । पाँच-पाँच सेकण्ड भी, दस-दस सेकण्ड भी इससे बहुत बड़ा पुण्य जमा होता रहेगा ।

ओम शांति...

बाबा हम पर मेहरबान हुआ हैं और हमे ऐसा ज्ञान देता हैं, ऐसी पढ़ाई पढ़ाता हैं, ऐसा कोर्स कराता हैं कि हमारी 21 जन्मो की कमाई का प्रबंध कर देता हैं कि, "मेरे बच्चो को 21 जन्मो तक कुछ भी कमाना न पड़े। घर बैठे आराम से सबकुछ मिलता रहे, प्रकृति सबकुछ प्रदान करें, प्रकृति का सौंदर्य मन को आनंदित करता रहे, मेरे बच्चे सोने, हीरो के महलो में रहे, अथाह धन-संपदा के मालिक बने।" और इतनी शक्तियाँ दे देता है कि दो युग तक उसके बनाये हुए स्वर्ग को सँभालते रहे। कोई शत्रु आँख उठाकर भी न देख सके, माया भी तनिक भी वार करने का साहस न कर सके।

सोचो, कितना बड़ा भाग्य हमे मिल रहा हैं, 21 जन्मो तक कुछ भी कमाना नहीं पड़ेगा, प्रारब्ध मिलेगी, नौकरी नहीं करनी पड़ेगी! विचार कर ले, अपने परिवार की पालना में आप सभी को कितनी मेहनत करनी पड़ती हैं, बिजनस-धंधो में कितना कितना कष्ट और कितना टेंशन होता हैं। खाने-पीने का भी ठीक समय नहीं मिलता। कितना समय लगाते हैं आप सभी, कितनी सच्चे मन से मेहनत करते हैं फिर भी परिवार का सुख नहीं मिलता, जिनके कारण सबकुछ करते हैं वह गाली देते हैं, ठुकराते हैं, कष्ट देते हैं, टेंशन देते हैं और बाबा हमे इतना श्रेष्ठ भाग्य दे रहा हैं!

विचार करो, राजाई सामने खड़ी हैं। उसके लिए हम क्या कर रहे हैं? या हमे इस चीज़ का अहसास ही नहीं हैं कि कितना बड़ा भाग्य हमे प्राप्त होने जा रहा हैं। ऐसा महान भाग्य को प्राप्त करने के लिए तो हमे बीसो नाखूनो का जोर लगा देना चाहिए, अपनी संपूर्ण शक्ति लगा देनी चाहिए, अपने को समय देना चाहिए। इधर-उधर व्यर्थ में जो समय जाता हैं उसको बचाकर इस कमाई में तत्पर हो जाना चाहिए। यह कमाई मुरली सुनने से होती हैं, ज्ञान चिंतन से होती हैं, दूसरो को ज्ञान दान करने से होती हैं, योग अभ्यास करने से होती हैं इसलिए स्वयं के लिए योग अभ्यास करने का समय अवश्य निकाले। ऐसा न हो कि कर्मों में इतने व्यस्त हो गये हो, काम-धंधो में इतने फँस गये हो, लौकिक संबंधो में इतने उलझ गये हो की अपने लिए भी समय नहीं मिल रहा हैं। यदि अपने लिए ही समय नहीं होगा तो समय आपको बड़ा कष्ट देगा। इसलिए समय निकाले और घर में बैठकर ही थोड़ाथोड़ा समय भी अच्छा योग अभ्यास अवश्य करें। ज्यादा टाइम न हो तो 15-15 मिनट बैठकर तीन बार सारे दिन में सुंदर अभ्यास कर ले। इससे एकाग्रता भी बहुत बढ़ेगी और योग करने में रुचि पैदा होगी, योग के लिए मन लगेगा। एक बार शांति की अनुभूति, "मैं आत्मा शांत स्वरूप, बाबा शांति के सागर, उनकी

शांति की किरणे मुझपर पड़ रही हैं ।" दूसरी बार पवित्रता की अनुभूति, "मैं परम पवित्र आत्मा, बाबा पवित्रता के सागर, उनकी पवित्र किरणे मुझमें समा रही हैं ।" तीसरी बार शक्तियों की अनुभूति, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, बाबा सर्वशक्तिवान, उनकी शक्तियों का फ़ाउण्टेन मुझपर पड़ रहा है ।" 15-15, 20-20 मिनट तीन बार यह करने से सहज योगी जीवन बन जायेगा, आपके घरों की सारी समस्याएँ समाप्त हो जायेगी और पुरुषार्थ में आपको बहुत आनंद प्राप्त होगा ।

तो आज सारा दिन यही अभ्यास करेंगे, "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सर्वशक्तिवान का फ़ाउण्टेन (फ़व्वारा) मुझपर पड़ रहा है, यह सुखद झरणा उपर से मुझपर बह रहा है ।"

ओम शांति...

हमे अपने चित्त को इतना शीतल करना है कि हमसे चारो ओर शांति के वायब्रेशन्स फैलते रहे। परिस्थिति कैसी भी आती रहे, लोग कुछ भी करते रहे लेकिन हमारे अंदर क्रोध की ज्वाला उत्पन्न न हो। अंशमात्र भी क्रोध न रह जाये। जब अंशमात्र भी क्रोध से हम मुक्त हो जायेंगे तब समझ ले हम काम से भी मुक्त हैं क्योंकि काम ही क्रोध को जन्म देता है।

किसी भी परिस्थिति में आने पर अभ्यास करें कि पहले बाह्य क्रोध समाप्त होने लगे फिर अभ्यास करें मन में उठने वाला क्रोध समाप्त होने लगे। फिर अभ्यास करें कि किसी के प्रति बदले की भावना, लोभ यह भी समाप्त होने लगे। इस तरह जैसेजैसे हमारा क्रोध शांत होगा, हमारी आंतरिक शक्ति बहुत बढ़ती जायेगी और यही सब चारो ओर फैलकर दूसरो की मदद भी करेगी और हमारे जीवन को निर्विघ्न, समस्याओ से मुक्त रखेगी।

कुछकुछ लोग ऐसे होते हैं कि जल्दी ही क्रोधित हो जाते हैं। उनकी स्थिति भी बहुत ही निम्न कोटी की है। अपनी भावनाओ पर नियंत्रण रखना, शांत रखना, तुरंत उत्तेजित न हो जाना यह भी एक अच्छी कंट्रोलिंग पावर (नियंत्रण शक्ति) है। तो इसको भी हमे धारण करना है और इसके लिए रोज सवेरे कमसे कम सात बार अवश्य अभ्यास करना है, "मैं शांत स्वरूप हूँ। शांति तो मेरा शृंगार है, मैं शांत हूँ।" इसकी अच्छी तरह प्रेक्टिस करनी है, No immediate reaction (तुरंत प्रतिक्रिया नहीं)। कोई भी बात आई, किसीने कुछ भी कहा, आज्ञा न मानी, काम बिगाड़ दिये या और जो भी हम दूसरो से आशा रखते हैं वह उन्होंने नहीं किया तो तुरंत प्रतिक्रिया नहीं। यह बहुत अच्छी प्रेक्टिस करेंगे तो क्रोध की अग्नि शांत होती जायेगी क्योंकि यह ऐसी अग्नि है जो आत्मा को जलाती है, तपाती है, हमारी शांति को भी जलाकर नष्ट कर देती है, हमारे सुखो को भी हमसे छिन लेती है और हमारा मन एक विशेष तरह की खिन्नता और आत्मग्लानि से भर जाता है।

तो संकल्प कर ले कि, मुझे पूर्णरूप से क्रोधमुक्त बनना ही है। अगर हम ज्ञानी आत्माये, भगवान के बच्चे और वह आत्माये जिन्हें संसार का कल्याण करना है, जिनका अवतरण ही यहाँ शांति स्थापना के लिए है, वे ही यदि क्रोध की अग्नि में जलेंगे तो संसार की अग्नि को कौन बुझायेगा? सबके लिए एक सुंदर दृष्टि अपना ले कि, 'सब आत्माये हैं, सबका अपनाअपना पार्ट है, सबकी अपनी-अपनी बुद्धि है, कोई बहुत बुद्धिमान कोई कम बुद्धिमान, यह वेरायटी वाली आत्माये ही संसार की ब्यूटी है। मुझे सबको सहयोग देना है, सिखाना है

।" सिखाने की भावना होती हैं तो क्रोध की फ़िलींग्स कम होने लगती हैं। इस तरह के चिंतन से हम इस अग्नि को शांत करेंगे।

तो आज सारा दिन यह ध्यान रखेंगे कि क्रोध जरा भी न आये, "मैं क्रोधमुक्त हूँ, शांतस्वरूप हूँ, मैं तो पीसहाउस हूँ... मुझसे तो चारो ओर शांति के वायब्रेशन्स फैलते हैं।" और फिर बीचबीच में चलेंगे अपने धाम, शांति के सागर के पास, उसकी शांति की तरंगों के नीचे बैठ जायेंगे और शांति के सागर की स्वीट साईलेन्स के वायब्रेशन्स को अनुभव करेंगे अपने में समाते हुए।

ओम शांति...

ऋष्य युग की जीवन शैली



हम सभी गॉडली स्टुडेंट हैं, और हमारी यह गॉडली स्टुडेंट लाइफ़ (ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन) विश्व में सबसे बेहतरीन लाइफ़ हैं। पूरे कल्प में हम सचमूच बहुत महान और भाग्यवान हैं, इतने महान हैं कि हमें पढ़ाने के लिए स्वयं भगवान चाहिए..! कोई और तो हमें पढ़ा ही नहीं सकता। इसलिए हमें पढ़ाने के लिए उसे स्वयं आना पड़ा और उसने हमें चार सब्जेक्ट (विषय) और चारों में परफ़ेक्ट होने की प्रेरणा दी। अंत में जब हमारी रिज़ल्ट निकलेगी, उसके बाद विनाश होगा। विनाश के कुछ पहले रिज़ल्ट निकलेगी और फिर होगा इस संसार में महाविनाश का तांडव नृत्य। कोई अष्ट रत्न बनकर उभरेंगे, तो कोई विजयरत्न बनकर इस संसार की शोभा बढ़ायेंगे। कोई त्रेता के विश्व महाराजन बनेंगे उनका भी अपना महत्व होगा क्योंकि वह भी विश्व महाराजन हैं, उनकी प्रजा भी बहुत ज्यादा हैं। किसीने अपनी झोली ज्ञानरत्नो से भर ली होगी, किसी को ज्ञान के सब्जेक्ट में बहुत मार्क्स मिलेंगे तो किसी दूसरे को योग के सब्जेक्ट में बहुत मार्क्स मिलेंगे, कोई धारणा संपन्न स्थिति से अच्छा पद प्राप्त करेंगे तो किसी ने सेवा को अपना जीवन बनाया है, अपना सर्वस्व लगाया है उनको भी बहुत मार्क्स प्राप्त होंगे। लेकिन सबसे आगे वह होंगे जिन्होंने चारों ही सब्जेक्ट में सर्वश्रेष्ठ मार्क्स प्राप्त किये, जो चारों ही सब्जेक्ट में 'पास विथ ऑनर' हुए, जिन्होंने 90% से ज्यादा मार्क्स लिए, उनकी शक्तियाँ भी हर समय 90% से ज्यादा कार्य करती रही।

जिसके पास ज्ञान का बल बहुत होता है वही श्रेष्ठ योगी बनते हैं। जिनके पास ज्ञान की धारणा संपूर्ण होती है, जिन्होंने संपूर्ण सूक्ष्म ज्ञान जान लिया होता है वह इस संसार से डिटेच्ड (अलग) होकर निरंतर योगयुक्त हो जाते हैं और जिनके पास योग की शक्ति बहुत आ जाती है उनमें सभी स्थूल और सूक्ष्म धारणाये परफ़ेक्ट आ जाती हैं और जिनमें यह तीनों चीज़ें हैं वही सच्चे सेवाधारी हैं, वही निष्काम भाव से सेवा कर सकते हैं, उनकी ही सेवा का बल सबसे बड़ा पुण्य बनकर उनको बहुत ही बड़ी मदद करता है, उनको हर जगह से तारने के लिए नैया का काम करता है।

ज़रा ध्यान दे, हम फ़ाइनल में कितने मार्क्स लेना चाहते हैं? हमारा कोई लक्ष्य भी है या नहीं? या 'ठीक है, जो कुछ मिलना होगा वह मिल जायेगा। इस टेंशन में भी क्यों रहे?' - लेकिन नहीं, जब भगवान टिचर बनकर आया है, जब वह हमें सदविवेक प्रदान कर रहा है, जब हमारी डिवाइन (दैवीय) बुद्धि का निर्माण हो रहा है तब इस स्टुडेंट लाइफ़ को सफल और संपन्न बनाने के लिए हमें अपना सर्वस्व लगा देना चाहिए। यह अलबेलाई नहीं है। यह

केवल धंधो और उलझनो में स्वयं को उलझाने का समय भी नहीं है। यह समय है इस ईश्वरीय पढ़ाई में परफेक्ट बनकर महान स्थिति को प्राप्त करने का।

तो इस पर चिंतन करें, अपने से बात करें, "जब भगवान पढ़ाने आया है तो कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरे पास पढ़ने के लिए समय ही नहीं है! मैं तो बहुत देर से उठता हूँ/उठती हूँ, मेरी तो नींद नहीं खुलती, मुझे तो बहुत समस्याये हैं, मैं तो बहुत परेशान हूँ, मेरे पास समय ही नहीं है, गृहस्थ के यह-यह झंजट हैं" -अरे, इनमे तो सारा संसार उलझा हुआ है। निकलो इनसे और महानता का पथ स्वीकार करो।"

तो आज सारा दिन हम सभी बहुत अच्छे अभ्यास करेंगे, "मैं एक महान आत्मा हूँ... और गॉडली स्टुडेंट हूँ, मुझे स्वयं भगवान पढ़ाने आये हैं।" इस नशे में रहेंगे और विज्ञान (दृय) बनायेंगे कि सामने वह स्वयं बैठकर मुझे पढ़ा रहे हैं, मेरा शृंगार कर रहे हैं, मुझे दृष्टि दे रहे हैं। इसी नशे से आज की दिनचर्या को संपन्न और सफल करेंगे।

ओम शांति...

भाग्यवान आत्माओ को यह सुंदर संगमयुग प्राप्त हुआ हैं जिसमें भगवान सामने हैं, भाग्य ले कर हमारे द्वार खड़ा हैं, हमारा आह्वान कर रहा हैं, हमे प्यार दे रहा हैं, अपनापन दे रहा हैं। जिसको हम ढूँढ़ते थे, जिसके क्षणिक दर्शनो के लिए तरसते थे, जिससे छोटीछोटी चीज़े माँगते रहते थे और हमे पता भी नहीं होता था कि जो कुछ हम माँग रहे हैं वह हमे मिलेगा?

अब वह हमे भरपूर करने के लिए जन्म-जन्म सुखी बनाने के लिए हमारे सामने आ गया हैं, अपनी ओर से दे रहा हैं, हमे माँगने की भी जरूरत नहीं। यहाँ शक्तियाँ भी दे रहा हैं, संपूर्ण सुख-शांति भी दे रहा हैं, सर्व खजाने दे रहा हैं, वरदान दे रहा हैं और भविष्य के लिए तो न जाने क्या-क्या लेकर आ गया हैं उसकी आप लिस्ट बना सकते हैं। इतना अथाह धन-संपदा हमारे पास होगी की वेश्य वंशी और शुद्र वंशी भी उससे पलते रहेंगे। सारा संसार पलेगा। आप जानते हैं कि विदेशी आक्रमणकारी यहाँ आये, भारत से धन-संपदा लूटने के लिए। और लेते ही गये लेकिन भारत भरपूर ही रहा!

इतनी अथाह धन, संपदा देने स्वयं भगवान हमारे द्वार पर स्थित हैं, तो हम क्या कर रहे हैं? कहाँ उलझे हैं? क्या अपने मन को शांत किया हैं? क्या भगवान को पाकर ईश्वरीय सुखो से स्वयं को भरपूर किया हैं? कहाँ उलझे हैं आप? जहाँ आप उलझे हैं वहाँ तो आपको उलझना शोभा ही नहीं देता! वहाँ तो बहुत निम्न कोटी की आत्माये उलझा करती हैं। निकलो वहाँ से, और अपने महान कर्तव्यो को पहचानो! तुम्हें संसार को जगाना हैं, तुम्हें संसार में सुख-शांति की लहरे फैलानी हैं। अनेक मनुष्य संसार में दुःखी होकर चिल्ला रहे हैं, रो रहे हैं। तुम्हें उनके आँसू पोछने हैं, तुम्हारा जीवन रोने के लिए नहीं, तुम्हारा जीवन आँसू बहाने के लिए नहीं। तुम्हें तो रोते हुए को हँसाना हैं, सबको बल देना हैं। अपने को पहचानो, अपनी शक्तियो को पहचानो।

तुम महान कूल के वंशज हो, तुम भगवान की संतान हो, तुम अपने परम कर्तव्यो को पहचानो। चिंतन करो, मेरा यह जन्म किसकिस महान कार्यों के लिए हुआ हैं, स्वयं भगवान ने जन्म दिया, जन्म देते ही उसने शक्तियाँ, वरदान दिये, जन्म देते ही श्रेष्ठ भाग्य लिख दिया, ईश्वरीय ज्ञान का खजाना दिया। भगवान ने जन्म दिया और उसने ही पूरा जीवन पालना की। अब जिस कार्य के लिए उसने हमारा शृंगार किया हैं, हमे महानताओ से भरा हैं। हमे बस वही करना हैं, बाक्री व्यर्थ की चीज़ो की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देना हैं। हे बुद्धिमान रुहो, कहीं

भी आपस में उलझना उचित नहीं हैं। इसलिए छोटीछोटी बातों में यदि आप उलझते हैं, टकराते हैं, घबराते हैं और अपनी आंतरिक शक्तियों को नष्ट करते हैं तो यह समझदारी नहीं है। इनसे बाहर निकल जाओ, आ जाओ स्वमान की महान स्टेज पर और संसार को बहुत कुछ देने के लिए स्वयं को तैयार करो।

तो आज सारा दिन, सभी झंझटों से मुक्त, साक्षीभाव में स्थित, स्वमान में रहेंगे, "मैं पूर्वज हूँ, संसार की पालना करने वाली महान आत्मा हूँ। मेरा जन्म ही महान कार्यों के लिए हुआ है।" इस ग्रेट (महान) और गूड फ़िलींग में रहते हुए ग्लॉब के उपर बैठेंगे और अभ्यास करेंगे कि बाबा से रंगबेरंगी किरणें मुझपर पड़ रही हैं और यह चारों ओर फैल रही हैं, पूरे कल्पवृक्ष में जा रही हैं। मेरे सिर के उपर ही कल्पवृक्ष हैं और सबकी पालना कर रही हैं।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



भिन्न-भिन्न प्रकार के ताज होंगे, गहने होंगे। लेकिन बोझ वाले नहीं होंगे। रूई से भी हल्के होंगे। रीयल गोल्ड होगा और उसमें हीरे ऐसे होंगे जो भिन्नभिन्न रंग की लाइट्स हर हीरे से नज़र आयेगी। एक हीरे से ७ रंग दिखाई देंगे।

हमे बाबा ने ज्ञान और योग के अस्त्र-शस्त्र देकर बहुत शक्तिशाली योद्धा बना दिया हैं। महाभारत में, रामायण में स्पष्ट दिखाया हैं कि जिनके पास दिव्य अस्त्र हैं वही बहुत शक्तिशाली हैं। बाबा ने भी हमें दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। सर्वशक्तियों के, ज्ञान के पॉवरफुल बाण दिये, जैसे वहाँ दिखाया हैं कि किसके पास सर्पबाण हैं, किसके अग्नि बाण हैं, जल बाण हैं, मन को मोहित करने वाले बाण हैं। यह सब ज्ञान के बाण हैं। हमें बाबा ने ड्रामा की ढाल देकर उतारा हैं क्योंकि युद्ध माया से हैं। स्थूल लड़ाई में भी जब सैनिकों को युद्धक्षेत्र में जाना होता हैं तो वह अपने सभी अस्त्र-शस्त्र, गोलाबारूद, खानपान की सामग्री जो भी उन्हें ले जाना हैं वह अच्छी तरह साथ ले जाते हैं ताकि युद्ध के मैदान में इन सब की कमी न पड़ जाये और अच्छी तरह चेक करते रहते हैं कि यह सब हमारे पास हैं? वैसे ही हम भी यदि माया पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने इन अस्त्रों-शस्त्रों को जरा रोज़ सवेरे इसको एक बार स्मृति में ले आया करें। जैसे कि, "मेरे पास ड्रामा की पॉवरफुल ढाल हैं। शत्रु के हर वार को रोकने में यह ढाल समर्थ हैं, यह मेरे सदा मेरे पास हैं और बहुत हलकी हैं, इसमें जरा भी वजन नहीं हैं।" दूसरी बात, "इस माया दुश्मन पर मेरी जीत निश्चित हैं क्योंकि मेरा सुप्रिम कमांडर स्वयं भगवान हैं, सर्वशक्तिवान हैं, उसके निर्देशन पर हम युद्ध कर रहे हैं।" अब तक हम इस युद्ध को जीत नहीं पाये थे क्योंकि गाइड (निर्देशन) करने वाला कोई नहीं था। गुरु जो कि छोटेमोटे कमांडर थे उन्होंने भी हथियार ढाल दिये थे।

तो याद रखेंगे, सवेरे ही याद दिला देंगे कि, "हमारा सुप्रिम कमांडर स्वयं सर्वशक्तिवान, नोलेजफुल जिसे माया के सब दाँवपेच का ख्याल हैं, जिसे विपरीत सेना की हर चाल का पता हैं वही हमारा डायरेक्टर हैं, गाइड (निर्देशक) हैं। उसकी ही गाइडन्स में हमें युद्ध करना हैं।

हमारे पास योग की बहुत बड़ी शक्ति हैं, आठ शक्तियाँ हैं, यह आठ शक्तियाँ माया से इस युद्ध में हर तरह से विजय बनाने में सक्षम हैं। तो एक-एक शक्ति को जरा याद कर लिया करें, "मेरे पास संपूर्ण सहनशक्ति हैं, मेरे पास हर परिस्थिति को सामना करने की शक्ति हैं, मेरे पास स्वमान की भी बहुत बड़ी शक्ति हैं, मेरे पास परखने की और निर्णय करने की शक्तियाँ हैं।" इन्हें याद कर लेंगे तो यह इमर्ज रहेगी, एक्टिव (सक्रिय) रहेगी और समय पर ऑटोमेटिकली काम करती रहेगी।

हमारे पास जो ज्ञान के विभिन्न तरह के बाण हैं, दिव्य अस्त्र-शस्त्र हैं वह बहुत सुंदर हैं। एक-एक ज्ञान की बात को याद करके हममें बल आ जाता हैं, हमारी खोई हुई एनर्जी वापस

लोट आती हैं, यदि हम कहीं हिम्मत हार चूके हैं, युद्ध भारी चल रहा हो तो ज्ञान की स्मृति हमें पुनः हिम्मत दिला देती हैं। इसलिए अपने पास 10-12 ज्ञान के सुंदर पॉइंट्स अवश्य रखने चाहिए जैसेकि, "तुम हिम्मत का एक कदम बढ़ाओगे तो मैं हजार कदम तुम्हारी ओर चलुंगा। तुम सिर्फ हिम्मत रखो, मेरी मदद तुम्हारे साथ हैं।" इस तरह के बहुत से ज्ञान के तीखे-तीखे बाण हमारे पास हैं। जरूरत है समय पर उनकी स्मृति हो जाये और यह स्मृति तभी होगी जब हम उन्हें लिखेंगे, पढ़ेंगे और उनका अभ्यास करते रहेंगे। देखिए बाणों का यदि अभ्यास न हो तो समय पर हम कैसे चलायेंगे? हमारा निशाना ही चुक जायेगा! तो मारना होगा दूसरे को लेकिन लग जायेगा अपने को!

तो आज सारा दिन याद रखेंगे, "मैं विजयरत्न हूँ। इस माया से अधिक पॉवरफुल हूँ और मेरा सुप्रीम कमांडर स्वयं भगवान हैं जो हर समय मेरे साथ हैं, छत्रछाया बनकर सिर के उपर हैं।"

ओम शांति...

भाग्यवान हैं वह आत्माये जिन पर भगवान राजी हुआ हैं और राजी होकर उन्होंने ऐसी आत्माओ को सर्व खजानो से भरपूर कर दिया हैं, खुशी के खजाने से भरपूर, दुआओ के खजाने से भरपूर, श्रेष्ठ संकल्पो के खजाने से भरपूर, स्वमान से भरपूर। ऐसी आत्माये ही आगे चलकर, दाता बनकर निरंतर अखण्ड दान करेंगी। वह दिन आ रहा हैं जब हम सब यह नजारा देखेंगे कि भरपूर आत्माओ के पास आकर लोग खुशी के खजानो से भरपूर होकर लौटेंगे, समस्याओ से मुक्त होकर लौटेंगे। वह कहेंगे कि हमारे सिर पर हाथ रख दो, हम पर दृष्टि डाल दो और आत्माये निहाल होकर वापस जायेगी।

तो क्या हम स्वयं को सर्व खजानो से भरपूर करते जा रहे हैं? चिंतन करें। इसके लिए स्मृति स्वरूप होना, योगयुक्त होना, स्वमानधारी बनना, संपूर्ण पवित्रता की राह पर चलना परम आवश्यक हैं। स्वयं में सेवाओ का भी बल भरना होगा। और याद रहे, जहाँ सेवाओ में निमित्तभाव नहीं हैं वहाँ सेवाओ का फ़ल जमा नहीं होता। कई लोग निमित्तभाव को बहुत कम समझते हैं, कई लोग केवल स्वयं सेवा करना चाहते हैं और दूसरो को नहीं करने देते या आगे नहीं बढ़ने देते या दूसरो का विरोध करते हैं। ऐसी आत्माओ को सेवा का कोई फ़ल और कोई बल नहीं मिलता। जिन्होंने चारो सब्जेक्ट में अपने खजाने भरपूर किए होंगे वह महादानी बनकर संसार के काम आयेंगे। बहुत बड़ी सेवा हमारा इंतज़ार कर रही हैं। वह दिन आ गये बस, पहुँच गये हैं उनके किनारे पर जब इस संसार में बाबा की जयजयकार होगी। परंतु उससे पहले एक बार यह महान यज्ञ पुनः अनेक विघ्नो से गुजरेगा, अग्निपरीक्षाओ से गुजरेगा और फिर निखरकर बाहर निकलेगा। अनेक आत्माये उस परीक्षा के दौर में इस यज्ञ से बाहर हो जायेगी। यह कल्पवृक्ष, यह ब्राह्मणो का झाड़ फिर से हीलेगा! कमज़ोर आत्माओ को तो जाना ही चाहिए। जो अपवित्र वायब्रेशन्स फैला रहे हैं उनको तो चले ही जाना चाहिए क्योंकि वह बहुत पाप कर रहे हैं।

तो आइये, हम सभी अखण्ड महादानी बने। चलते फिरते संसार को हमसे श्रेष्ठ वायब्रेशन्स का दान मिलता रहे, ब्राह्मणो को शक्तियों का दान मिलता रहे क्योंकि अनेक कमज़ोर ब्राह्मण, असहाय आत्माये अब बाबा के बच्चे बन रहे हैं। उन्हें हमारी मदद की बहुत जरूरत हैं। तो हम ऐसी श्रेष्ठ स्थिति में रहे जो चलते फिरते, काम करते, नेचरल लाइफ़ में हमसे श्रेष्ठ वायब्रेशन्स का दान सबको मिले। मुख के द्वारा ज्ञानरत्नो का दान मिले, मुख के द्वारा हम दूसरो के उमंग-उत्साह को बढ़ाते रहे, हिम्मतहीन आत्माओ में हिम्मत भरते चले। जो निराश

हो गई हैं, उनके जीवन में आशाओं के दिप जलाते चले । दूसरो को वाचा की सेवा के द्वारा आगे बढ़ाने का श्रेष्ठ कर्म होता रहे । और कर्म के द्वारा प्रेक्टिकल लोग सीखते रहे कि योगी जीवन क्या होता है? सरल जीवन क्या होता है? तनावमुक्त जीवन क्या होता है? मस्त-मौला (बेफ़िक्र) जीवन क्या होता है?

तो ऐसे हम निरंतर सेवा के फ़िल्ड में रहे और आज सारा दिन अभ्यास करेंगे, "मैं चलता फिरता लाइट हाउस हूँ । मुझसे निरंतर लाइट, माइट चारो ओर फैल रही हैं । अपने अंग-अंग से रंगबेरंगी किरणे चारो ओर फैलती हुई देखेंगे । जिधर भी दृष्टि जा रही है उधर किरणे फैल रही हैं । जिधर भी कदम पड़ रहे हैं, किरणे फैल रही हैं । जिनसे बात हो रही है उन्हें किरणे मिल रही हैं । संपर्क-संबंध में आनेवाले श्रेष्ठ वायब्रेशन्स लेकर जा रहे हैं ।" आज सारा दिन यह अभ्यास करेंगे ।

ओम शांति...

योग की सर्वश्रेष्ठ स्थिति हैं वाणी से परे परमात्म स्वरूप पर स्थित हो जाना । परमधाम में सर्वशक्तिवान के स्वरूप पर जितना अधिक समय हम बुद्धि को स्थित करेंगे उतने ही हम शक्तिशाली बनते जायेंगे । यही स्थिति विश्व कल्याण के निमित्त बनती हैं । महादानी बनना, विश्व कल्याणकारी बनना, वरदानी बनना, सर्व की मनोकामनाये पूर्ण करा देना यह सब इसी वाणी के परे स्थिति के द्वारा ही संभव होगा । वाणी में तो सभी रहते हैं और वाणी में रहने का आनंद भी सहज मिलता है । लेकिन वाणी से परे रहना, परमधाम में बुद्धि को स्थिर रखना यही सर्वश्रेष्ठ स्थिति है । इसके लिए हमे बारबार अशरीरी होने का अभ्यास करना होगा और अपनी वाणी को भी नियंत्रित, संयमीत करना होगा । जो मनुष्य अपनी वाणी को ही कंट्रोल न कर सके वह भला विश्व को क्या कंट्रोल करेगा?

हमे वाणी के परे की स्थिति में चलना है । इसमे बहुत अभ्यास की भी जरूरत है । बारबार अभ्यास करने से कोई भी कठीन चीज़ सरल हो जाती है । हम बारबार परमधाम में शिवबाबा के उस तेजस्वी महाज्योती स्तरूप को निहारा करें । बिलकुल स्पष्ट वह हमे दिखाइ दे जैसे और कुछ भी हमे दिख नहीं रहा है । साथसाथ अंतर्मुखी रहना । अगर कुछ समय मौन का अभ्यास कर लिया जाये और किसी के लिए संभव हो तो कुछ दिन मौन रख लिया जाये और इस अभ्यास में तत्पर रहा जाये तो यह अभ्यास बिलकुल सरल हो जाता है ।

तो आइये हम वाणी से परे की स्थिति का पुनःपुनः अभ्यास करें । वाणी में आना, दूसरो को ज्ञान सुनाना, वाणी के आनंद में रहना यह तो हम सबको भाता है । परंतु अब हमारी मुख्य रुची हो जाये वाणी से परे रहना ।

बहुतो को ऐसा अनुभव होता है कि जब वह परमधाम में स्थित होते हैं तो उनका सिर भारी होने लगता है या उनको तनाव महसूस होता है या सिर में दर्द होने लगता है । इसका कारण है कि जो बहुत व्यर्थ में रहे हैं उनके मस्तिष्क की शक्तियाँ काफ़ी नष्ट हो चुकी हैं । अब वह एकाग्र होने नहीं देती क्योंकि एकाग्र होने में भी मस्तिष्क को शक्तियाँ चाहिए । अगर मस्तिष्क बहुत निर्बल है तो एकाग्रता वह ज्यादा समय नहीं होगी । इसलिए मनोवैज्ञानिको ने मनुष्यो पर सर्वे करके यह कहा कि कोई भी मनुष्य दस मिनट से ज्यादा एकाग्र नहीं हो सकता । परंतु श्रेष्ठ योगी जो बहुत पवित्र हैं वह लम्बा काल भी एकाग्र हो सकते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि पवित्रता के कारण काफ़ी केपेबल (सक्षम), काफ़ी एनर्जेटिक (ओजस्वी) और प्रबल हो गई होती है ।

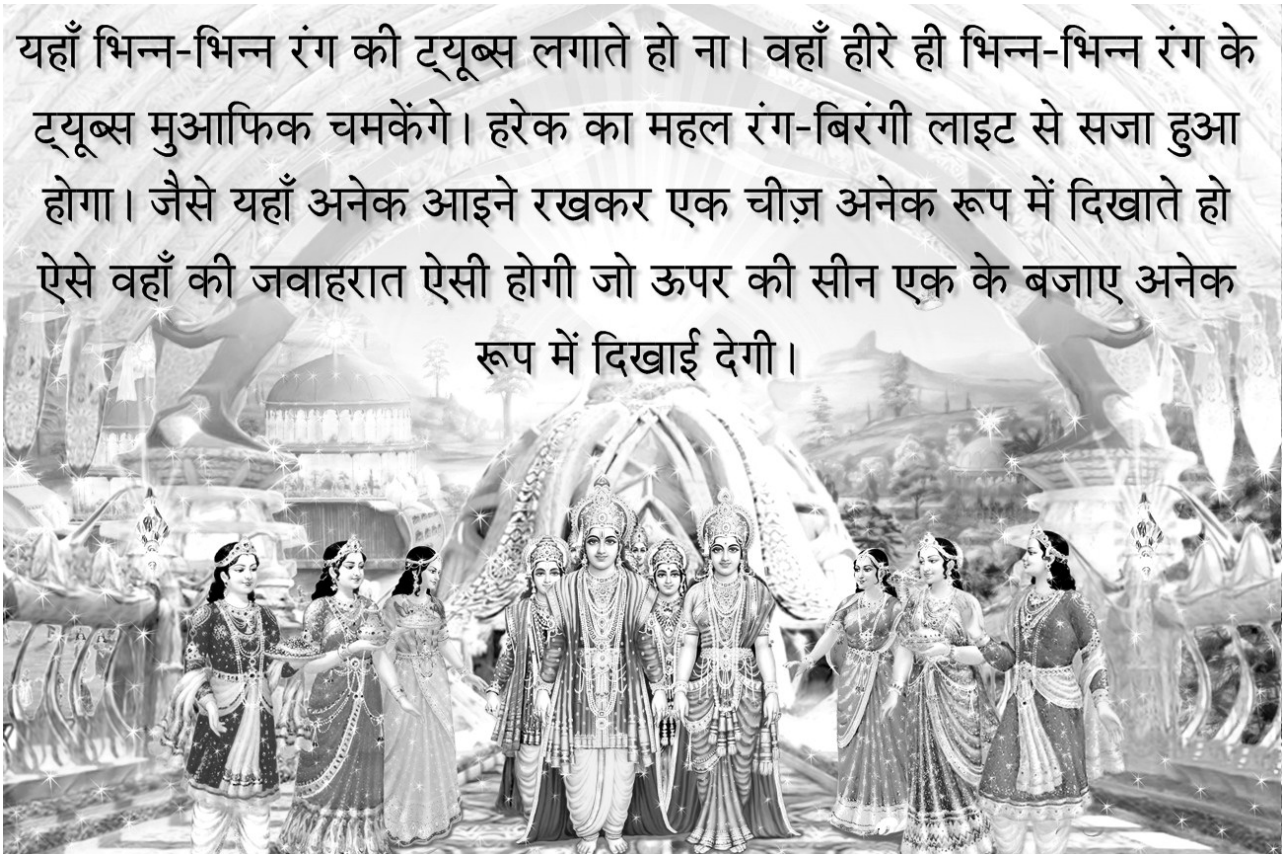
तो हम अपनी प्योरिटी को भी बहुत बढ़ाये ताकि हम वाणी से परे रह सके क्योंकि वह धाम संपूर्ण पवित्र धाम हैं। बाबा भी पवित्रता के सागर हैं और वहाँ वही आत्मा स्थित हो सकती हैं जिनकी प्योरिटी बहुत सुंदर हैं। हम प्योरिटी पर तो चर्चा करते ही आये हैं। लेकिन बहुत ज्यादा ध्यान दे कि व्यर्थ संकल्पों में भी हमारी प्योरिटी की शक्ति नष्ट न हो रही हो। साधारण संकल्प भी हमारी आध्यात्मिक शक्ति को कमजोर न कर रहे हो।

तो आज सारा दिन बारबार एक ही अभ्यास करेंगे, "यह देह अलग मैं आत्मा अलग।" आत्मा का स्वरूप बिलकुल स्पष्ट दिखाइ दे और यह जितना अभ्यास करेंगे उतना ही दूसरा अभ्यास सहज होगा, "परमधाम में बाबा के स्वरूप पर बुद्धि लग जाये।" तो बारबार अशरीरी होकर परमधाम में सर्वशक्तिवान के स्वरूप को निहारेंगे। चाहे एक बार यह अभ्यास दस सेकण्ड करें लेकिन पचास बार करले सारे दिन में तो शाम तक हम अनुभवो की खान बन जायेंगे।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

यहाँ भिन्न-भिन्न रंग की ट्यूब्स लगाते हो ना। वहाँ हीरे ही भिन्न-भिन्न रंग के ट्यूब्स मुआफिक चमकेंगे। हरेक का महल रंग-बिरंगी लाइट से सजा हुआ होगा। जैसे यहाँ अनेक आइने रखकर एक चीज़ अनेक रूप में दिखाते हो ऐसे वहाँ की जवाहरात ऐसी होगी जो ऊपर की सीन एक के बजाए अनेक रूप में दिखाई देगी।



हमे अपनी संपूर्ण स्थिति को प्राप्त करने के लिए और बाप समान बनने के लिए बेहद के वैराग्य की बहुत आवश्यकता होती है। बेहद का वैराग्य अर्थात् अपने लिए कुछ भी उपयोग न करने की इच्छा। मन कहीं भी आसक्त न हो। चारो ओर से निकला हुआ हो जैसे कि हमारा लंगर इस संसार से उठा हुआ है, जैसे कि यह संसार तो हमारे लिए बना ही नहीं है। जैसे ब्रह्माबाबा को वैराग्य रहा, अपना सबकुछ समर्पित कर दिया लेकिन वैराग्य के साथ चेहरे पर ईश्वरीय रुहाव भी सदा ही चमकता रहा। वैराग्य हमारे जीवन को सुखा न बना दे बल्कि हराभरा कर दे, सब ईश्वरीय रसो से भरपूर करें। बाबा ने अपने लिए कुछ भी उपयोग नहीं किया। मकान बने तो बाबा कहते थे यह मकान बच्चो के लिए है, साधन आये तो भी बच्चो के लिए।

जैसे बाबा ने बेहद के वैराग्य के द्वारा बाप समान स्थिति को प्राप्त किया वैसे हम भी बेहद का वैराग्य धारण करें। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो एक समय आयेगा जो हमसे सबकुछ छुड़ायेगा, हमे वैराग्य दिलाएगा लेकिन तब समय हमारा शिक्षक बनेगा और उससे हमे ईश्वरीय सुखो की अनुभूति नहीं हो पायेगी। हम संपूर्ण तो बन जायेंगे लेकिन संपूर्ण बनने की यात्रा का सुख नहीं ले पायेंगे। यह एक बहुत सुंदर यात्रा है, सुखो से भरी है, ईश्वरीय आनंदो से भरी हुई है और इसका सुख लेना भी परम आवश्यक है।

तो अपने मन में सुंदर-सुंदर संकल्प करें, "मुझे क्या करना है और क्या नहीं करना है? क्या हम उस बाबा की इच्छाओ को पूर्ण नहीं करेंगे जो जन्म-जन्म हमारी इच्छायें पूर्ण करता आया है! या हम छोटीछोटी इच्छाओ को पूर्ण करने में ही लगे रहेंगे।"

तो जिन्हें महान बनना है, जिनकी ओर सारा संसार प्यासी नज़रो से देख रहा है, वह सभी आत्माये जो अपने को महान अनुभव करते हैं वह बेहद के वैराग्य को अपने जीवन में सहजरूप से धारण कर ले। कहीं भी हमारा लगाव-झुकाव न हो। यह खेल पूरा हो रहा है। अब देखते हुए भी कुछ नहीं देखना है। यह पाप की दुनिया, यह गंदी दुनिया, यह विकारो से भरपूर दुनिया जहाँ काम की आग लगी हुई है, जहाँ छोटे बच्चो में ही काम वासना जल रही है और उन्हें जला रही है ऐसी दुनिया को पावन बनाने का महान कार्य हमारी जिम्मेदारी है।

तो हम कहीं भी अटकेंगे नहीं और वायब्रेशन्स बाबा से लेकर संसार को प्योरिटी की शक्तियों की सकाश देंगे। यदि हमने बेहद का वैराग्य धारण नहीं किया तो सकाश देने की

सेवा नहीं कर पायेंगे । जहाँ हमारा लगाव है, जहाँ हम बंधे हुए हैं, हमारे वायब्रेशन्स केवल वहीं तक जाकर रुक जायेंगे । हम सदा योगयुक्त भी नहीं रह पायेंगे । लेकिन हमे यह नहीं भुलना है कि हमारा तो जन्म ही महान कार्यों के लिए हुआ है । दुनिया में गंदगी बढ़ती जा रही है, समस्याये बढ़ती जा रही हैं लेकिन हमे सकाश देकर अपनी वंशावली को मदद करनी है ।

तो आज सारा दिन अपने को चेक भी करेंगे की हम कहीं आसक्त तो नहीं हैं? कोई हद की इच्छायें हमारी बुद्धि को अपने में आकर्षित तो नहीं करती हैं? हम बाबा से योग लगाकर संसार में पवित्रता के वायब्रेशन्स फैलायेंगे । तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे, "मैं पवित्रता का सूर्य हूँ ।" बहुत सुंदर यह अनुभव होगा । "प्रकृति का मालिक हूँ... बाबा से पवित्रता की सफेद रंग की किरणे मुझमें समाकर चारो ओर फैल रही हैं और इस गंदी दुनिया को पावन कर रही हैं ।"

ओम शांति...

सुखो का सागर हमारे लिए सुखो की सौगात लेकर आया है। हम सुखो के दाता के बच्चे हैं तो संपूर्ण सुख पर भी हमारा अधिकार है। हम रोज उठते ही याद किया करें, "मैं बहुत सुखी हूँ... मेरे दुःखो के दिन समाप्त हो गये हैं। स्वयं भगवान सुख बाँटने के लिए मेरे पास आये हुए हैं। तो मुझे सुख भरा जीवन जीना है। दुःख की छायाँ से, दुःखो के स्पर्श से हमे मुक्त रहना है।" दुःखो की बाते तो आती हैं। देह में रोग-शोक भी आते हैं। परिवारो में भी समस्याए आती हैं और सबसे बड़ी बात तो कोई आपका बारबार अपमान करता है, कोई आपको कष्ट पहुँचाता है, कोई आपको धोका देता है, अपनो से आपको अपनापन नहीं मिलता, धोका मिलता है तो दुःख तो हो सकता है परंतु हम सुखस्वरूप हैं। हम दुःखहर्ता हैं, हम भगवान के बच्चे हैं इसी स्मृति से हमे अपने को बहुत सुखी बनाकर रखना है। और याद रखना है कि जो लम्बा काल स्वयं को ईश्वरीय सुखो से भरेंगे, जो सुखी रहेंगे वह दूसरो के दुःखहर्ता बन जायेंगे। एक बहुत बड़ा चेलेंज (चुनौती) हमारे सामने आता जा रहा है। विनाश की लंबीचौड़ी प्रक्रिया से हम सबको गुजरना है।

तो विभिन्न परिस्थितियों में हम दुःख से मुक्त रहे और दुःखी आत्माओ को निरंतर मदद करते चले। सबसे उठकर स्वयं को ईश्वरीय सुखो से भरपूर कर दे। प्रभुमिलन का सुख प्राप्त करें फिर ईश्वरीय महावाक्यो का सुख प्राप्त करें। बाबा से रुहरुहान करें और सुखी जीवन जीने की कला सीख ले। यह भी एक कला है। सरलता, मुस्कुराते रहना, हमेशा पॉज़ीटिव रहना, दूसरो को सुख देते चलना और सबके प्रति अपनी दृष्टि को, अपने दृष्टिकोण को भी श्रेष्ठ रखना, इनसे हमारा जीवन सदा सुख के, खुशीयो के झुलो में झुलता रहेगा। तो बाबा तो हमारे लिए खुशीयो का झुला लेकर आया है। उसकी गोद का झुला भी हमारे लिए बहुत सुखद है। यदि हम छोटे बच्चे बन जाये और बाबा की गोद में झुलने लगे तो उससे बड़ा सुख तो चारो युगो में होगा ही नहीं।

तो आइये हम छोटे बन जाये। हम जो बड़े बन गये हैं, बहुत जिम्मेदारीयो का बोझ अपने उपर ले लिया है उसको उतारकर बाबा की गोद में आ जाये। छोटे बच्चे बन जाये जैसे छोटे बच्चो को कोई चिंता नहीं होती, उनका जीवन बिलकुल निश्चिंत होता है, उनकी चिंता माँ-बाप करें, वह क्यों करें! सबको इसका अनुभव है। तो हम भी बाबा के हाथो में स्वयं को सौंप दे और निश्चिंत जीवन जीये। हमे ऐसा सुंदर भविष्य मिलने जा रहा है कि दो युग तक हमे कमाई की कोई चिंता नहीं होगी। कमाई करनी ही नहीं पड़ेगी। हम बेफ़िक्र बादशाह रहेंगे

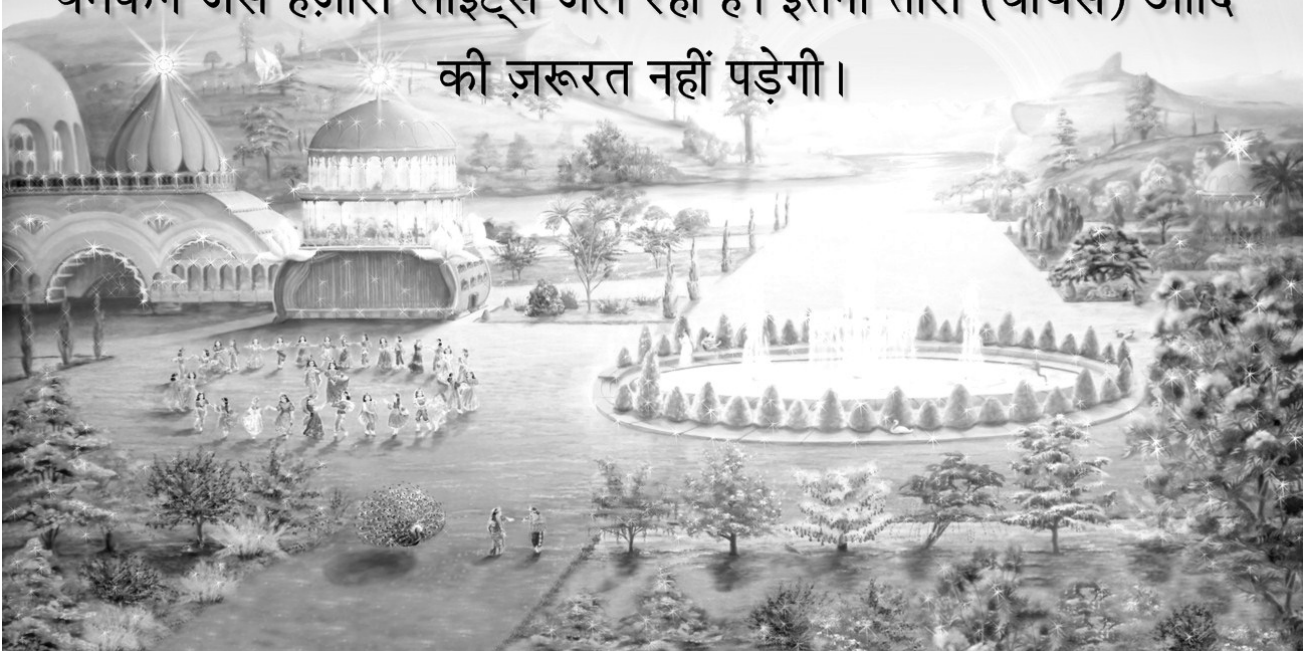
लेकिन उससे पहले यहीं पर हम बेफ़िक्र बादशाह बन जाये । बादशाहो की तरह संसार में जीये और याद रखे कि जो कुछ हो रहा है वही सत्य है । जो कुछ हो रहा है वह तो हमने करोडो बार देखा है । तो जैसे बाबा साक्षी हैं, बहुत हलका हैं क्योंकि कुछ भी नया नहीं हो रहा है । वैसे ही हमे भी ड्रामा के ज्ञान को यूज़ करके बहुत हलके रहना है ।

तो आज सारा दिन हम इस स्मृति में रहेंगे कि जो कुछ हो रहा है, जो कुछ हम देख रहे हैं वह तो हमने करोडो बार देखा है, नथिंग न्यू । और इस संकल्प से हम बहुत हलके रहकर साक्षीभाव में आ जायेंगे और अपने जीवन को आनंद से, सुखो से भरपूर करेंगे । तो आज सारा दिन बारबार याद करेंगे, "मैं बहुत सुखी हूँ बाबा! आपको पाकर हम बहुत सुखी हो गये । आपको कोटीकोटी बार शुक्रिया!" तो देखेंगे उपर, बाबा मुस्कुरा रहे हैं और दृष्टि दे रहे हैं ।"

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

सोने की लाइट और हीरों की लाइट अर्थात् चमक दोनों के मेल से महल जगमगाता हुआ नज़र आयेगा । सूर्य की किरणों से हीरे और सोना ऐसे चमकेंगे जैसे हज़ारों लाइट्स जल रही हैं । इतनी तारों (वायर्स) आदि की ज़रूरत नहीं पड़ेगी ।



हम कितने भाग्यवान हैं कि स्वयं भगवान हमे पढ़ाने आते हैं और पढ़ाई भी कितनी श्रेष्ठ और कितनी सहज और लक्ष्य हैं मनुष्य से देवता बनना । कभी सोचा भी नहीं था कि हम भी, कोई मनुष्य देवता बनेंगे । इतना ही नहीं, लेकिन देवयुग के मालिक बनेंगे, विश्व महाराज बननेंगे, विश्व की बादशाही हमारे हाथ में आ जायेगी । कभी हम सुना करते थे कि फ़लाने ऋषि ने या राजा ने देवपद, इंद्रपद पाने के लिए, इंद्र की राजाई पाने के लिए, सतयुग का सिंहासन पाने के लिए घोर तपस्या की । इंद्र परेशान हो गये और विघ्न डालने लगे । लेकिन वह व्यक्ति सफल हो गया ।

हम सभी अब तपस्या कर रहे हैं मनुष्य से महान देवता बनने की । महान संपदा के हम मालिक होंगे । जहाँ कोई चिंता नहीं होगी, जहाँ यह मनोविकार नहीं होंगे, जहाँ दुःख, रोग-शोक नहीं होंगे, जहाँ पढ़ाई का कोई बोझ नहीं होगा । सोच ले, आज अपने छोटेसे परिवार की पालना करने के लिए मनुष्य कितने घंटे रोज़ मेहनत करता है । बच्चे अच्छी पढ़ाई पढ़ ले, उन्हें अच्छी नौकरी मिल जाये... कितनी मेहनत करते हैं और उसमें टेंशन कितनी होती है! एक छोटे से परिवार की पालना के लिए एक छोटासा घर मिलता है । और सोचे, हमे क्या मिल रहा है? दो युग के लिए महान भाग्य! सतयुग और त्रेतायुग में कुछ भी कमाना नहीं पड़ेगा और द्वापरयुग में भी सबकुछ सहज प्राप्त होता रहेगा । ऐसे महान भाग्य को पाने के लिए हम क्या कर रहे हैं? जिसमें कोई कमाई की चिंता नहीं, जहाँ कोई समस्या नहीं, जहाँ कोई नौकरी और टेंशन नहीं होगा । केवल संगमयुग का भाग्य हम खाते रहेंगे ।

तो हमे मनुष्य से देवता बनना है । ध्यान दे, हमारे संस्कार भी बहुत रॉयल हो जाने चाहिए, बड़े सॉफ़्ट (सरल) हो जाने चाहिए । माँगने के संस्कार देवसंस्कार नहीं हैं । बुरे वचन बोलने के संस्कार, कटू वचन बोलकर दूसरो को पीड़ा देने के संस्कार, इगो (अहम्) से प्रेरित संस्कार, बात-बात में क्रोध करने के संस्कार... यह सब देवसंस्कार नहीं हैं । हमे रॉयल बनना है, हम रॉयल बाप के रॉयल बच्चे भी हैं और देवयुग की महान आत्माये भी हैं और पुनः हमे मनुष्य से देवता बनना है । यह लक्ष्य अपना कायम रख ले और अपना एक चित्र बनाया करेंगे, जब हम देवता थे या जब हम देवता होंगे तो हम ऐसे होंगे । हम चलेंगे कैसे? हम देखेंगे कैसे? हम बोलेंगे कैसे? हम सुनेंगे कैसे? हम खायेंगे कैसे? सोयेंगे कैसे? -इन सब में रॉयल्टी होगी । चेहरो पर कितना तेज होगा! कोई टेंशन की रेखा नहीं, कोई उदासीनता नहीं । रॉयल चेहरा, रॉयल संस्कारो को अपने सामने रखकर हम अपने वर्तमान संस्कारो को भी बहुत

रॉयल बनायेंगे । हम जैसा रॉयल तो चारो युगो में कोई होता ही नहीं । पूज्य जब हम बनते हैं तब भी सोचो कितने रॉयल होंगे हम ।

तो आज सारा दिन हम अपने देवस्वरूप को और अपने पूज्य स्वरूप को याद करेंगे जो दोनो ही बहुत रॉयल हैं । हम देखेंगे कि एक ओर हमारा देवस्वरूप स्थित हैं तो दूसरी ओर हमारा पूज्य स्वरूप । पूज्यस्वरूप में आप कोई भी अपना स्वरूप चुन ले । एक स्वरूप अपना फ़िक्स कर ले कि यह मेरा पूज्य स्वरूप हैं और बारबार उसका अभ्यास करें । तो कभी मैं अपने देवस्वरूप में हूँ, बहुत रॉयल... अपने को चलता हुआ देखे । कैसे हम बोल रहे हैं उसका विज्ञान (दृश्य) बनाये । कैसे हम व्यवहार कर रहे हैं इसका विज्ञान बनाये । दूसरी ओर हमारा पूज्य स्वरूप चाहे विघ्नविनाशक गणेश, चाहे महाविष्णु शेष शैया पर बिराजमान हैं । चाहे महावीर या चाहे कोई ओर जो आपको प्रिय हो उसे अपने सामने रखे और जैसे हमारे वह दोनो स्वरूप हमे देखकर मुस्कुरा रहे हैं और याद दिला रहे हैं कि, "मैं तुम्हारा ही स्वरूप हूँ ।" ऐसे अपने पूज्य स्वरूप और देव स्वरूप को सारे दिन प्रेक्टिस करेंगे ।

ओम शांति...

बाबा हमे संपूर्णता की ओर ले चल रहे हैं। और संपूर्णता की एक बहुत गहन परिभाषा हैं। निर्दोष दृष्टि और निष्काम भावना। हम अपनी दृष्टि को निर्दोष बनाये। जो दूसरे के दोष देखते हैं, जो दूसरो पर दोष आरोपित करते हैं वे वास्तव में संपूर्णता के पथ के राही नहीं हैं।

सब अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं। इस ड्रामा में सबका अपना-अपना पार्ट निश्चित हैं। यहाँ सभी महान नहीं हो सकते, यहाँ सभी गुणसंपन्न नहीं हो सकते। कलियुग में अवगुणो की खान भी अनेको का जीवन बन चुका हैं। परंतु हमे तो सबमें गुण ही देखने हैं। निष्काम भावना रखनी हैं, किसी से मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, मुझे संसार में कुछ भी नहीं चाहिए। न मान की कामना हो, न काम की कामना हो। यह दो कामनाये ही मनुष्य को ढीला करती हैं, योग के पथ से विचलीत करती हैं, उनमें रुहानीयत का अभाव हो जाता हैं और मन असंतुष्ट रहने लगता हैं। काम की कामनाये, कईयो ने काम की वासना को तो छोड़ दिया लेकिन उनकी सूक्ष्म कामनाये अभी भी बाक्री हैं जो कभी स्वप्न के रूप में उदय होती हैं, कभी संस्कारो के रूप में, कभी कर्मेन्द्रियों की चंचलता के रूप में। हमे इन कामनाओ का भी त्याग कर देना हैं। अपने से बाते करें, "जब मेने पवित्रता का पथ अपना लिया तो फिर यह कामनायें क्यों? त्याग करो इनका। मुझे तो संपूर्ण पवित्र बनना हैं।" संपूर्ण पवित्र आत्मा के महत्व को अच्छी तरह समझ ले। पवित्र आत्मा इस संसार के लिए वरदान हैं। उनका इस संसार में होना ही पर्याप्त हैं फिर वह चाहे कुछ भी न करें। वह तो इस संसार को प्रकाशीत करने वाले हैं। "मुझे बाबा के इस महान कार्य में पवित्रता के द्वारा संपूर्ण सहयोग देना हैं" यह सुंदर भावना अपने मन में रहे।

तो चेक करते रहे, "मेरे मन में काम की सूक्ष्म भावनाये क्या-क्या हैं? कामनाये क्या-क्या हैं।" ज्ञान के बल से, योग के बल से उनका त्याग करते चले। जैसे-जैसे आत्मा को ईश्वरीय रस मिलता रहेगा तो यह कर्मेन्द्रियों के रस या और कुछ पाने की इच्छा समाप्त होती जायेगी। जब तक आत्मा अशरीरीपन के सुंदर अनुभवो में नहीं आती तब तक उसको ईश्वरीय सुख भी कम भासता हैं और यह काम की कामनाये उसका पीछा नहीं छोड़ती।

तो जिन्हें संपूर्ण पवित्रता की मंजिल पर चढ़ना हैं वह इन कामनाओ का त्याग कर दे। मान की कामना, यह भी बड़ी सूक्ष्मरूप से पीछा करती हैं। संगठनो में कॉपिटिशन (स्पर्धा) रहती हैं, ईर्ष्या रहती हैं। हर व्यक्ति चाहता हैं मेरा ही नाम हो, मुझे ही मान मिले। यह तो ठीक हैं लेकिन दूसरो को भी मिले तो यह देखकर परेशानी क्यों? दूसरे यदि योग्य हैं तो क्या वह मान

के पात्र नहीं हैं? क्या उनका नाम नहीं होना चाहिए? और क्या ब्राह्मण परिवार में किसी का भी नाम होना भी हम सबका नाम होना नहीं? आपके लौकिक परिवार में आपके एक बच्चे का बहुत नाम हो जाये तो क्या वह आपका नाम नहीं होता?

तो हम अपनी विचारधाराओ को जरा विशाल बनाये और आज सारा दिन सूक्ष्मरूप से अपनी जाँच कर ले कि हममें यह कामनायें शेष तो नहीं रह गई हैं? नहीं तो यह कामनायें हमारी सूक्ष्म शक्तियों को खाती रहेगी और हम सेवाये करते हुए भी, योग करते हुए भी, मुरली सुनते हुए भी पीछे रह जायेंगे।

तो आइये, आज सारा दिन बहुत तत्परता के साथ अभ्यास करें, "मैं आत्मा इस तन में अवतार हूँ। मैंने अवतार लिया है इस संसार को पावन बनाने के लिए, विश्व में शांति का साम्राज्य स्थापित करने के लिए। स्वयं भगवान मुझे परमधाम से अपने साथ लाये हैं कि चलो बच्चे मेरे इस कार्य में सहयोगी बनो।" अपने इस स्वरूप में एकाग्र होते हुए अनुभव करेंगे कि, "परमधाम से बाबा की किरणे मुझपर पड़ रही हैं। इस फ़ॉउंटेन के नीचे मानो में निरंतर स्नान कर रही हूँ/कर रहा हूँ।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

बहुत सुन्दर प्रकार के आजकल की राजाई फैमली में बिजलियों की जगमग देखते हो, भिन्न-भिन्न प्रकार की लैम्पस की डिज़ाइन देखते हो। वहाँ रीयल हीरों के होने के कारण एक दीपक अनेक दीपकों का कार्य करेगा। ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सब नैचुरल होगा।



बाबा ने आकर हमारे स्पिरीच्युअल लेवल (आध्यात्मिक स्तर) को बहुत उंचा उठा दिया है। हमारी हिन भावनाओ को समाप्त करके हमे महान बना दिया है। कहाँ हम माँगते-फ़िरते थे और कहाँ हमे दाता बना दिया! माँगते क्या थे? रोटी, पैसा नहीं... लेकिन मान-सम्मान, अनेक तरह की मदद, दूसरो की ओर प्यासी नज़रो से देखते थे। उनकी ओर जिनके पास देने को कुछ भी नहीं है, जिनके मटके पहले ही खाली हैं। परंतु बाबा ने आकर हमे याद दिलाया, "बच्चे, मंदिरो में तुम्हारी पूजा हो रही है। सभी तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं कि हे देवी, हे देव, तुम तो दुःखहर्ता हो, भाग्यविधाता हो, वरदाता हो, तुम तो देने वाले हो।" बाबा ने याद दिलाया कि, "तुम पूर्वज हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, तुम्हें सबको देना है। संसार की अनेक आत्माये दुःख, अशांति में, समस्याओ और विघ्नो में, रोग और शोक से, स्वार्थ और परेशानीयो में जीवन व्यतित कर रहे हैं। तुम उन सबसे बड़े हो।" तुम्हारे में देने की क्षमता है क्योंकि बाबा ने तुम्हें भरपूर कर दिया है। तुम देते चलो। सम्मान भी देते चलो, स्वमान भी देते चलो, प्यार भी देते चलो। तुम सम्मान लेने वाले नहीं, देने वाले हो। तुम मान लेने वाले भिखारी नहीं तुम देने वाले दाता हो। सोचो, तुम्हें तो स्वयं भगवान मान दे रहा है! मनुष्यो से मान लेकर क्या करोगे? वह तो आज देंगे, कल कुछ और देंगे, फिर कुछ और देंगे। तुम्हें तो स्वयं भगवान मान दे रहा है, स्वमान दे रहा है, उंचा उठा रहा है।

तो आओ हम दाता बने। मन में किसी भी चीज़ की लेने की इच्छा न हो। जो रॉयल होते हैं, जो राजन होते हैं उनकी आँख किसी में भी नहीं डूबती अर्थात् वह किसी की ओर भी प्यासी नज़रो से नहीं देखते। वह किसी की ओर भी आकर्षित नहीं होते। हम दाता हैं, हमारी नज़र भी किसी में नहीं डूबनी चाहिए, हमारी नज़र तो केवल एक में समा गई है। एक से ही सबकुछ लेना है, एक ही सबसे अधिक सुंदर है। वही सबसे अधिक प्यारा है। सत्यम, शिवम, सुंदरम है। बहुत कल्याणकारी है। जिसके मन में हमारे लिए कभी भी अकल्याण की भावना नहीं होती। तो बाबा ने कहा, "तुम दाता बन जाओ। संगमयुग पर दाता बनोगे तो जन्म-जन्म तुम्हारे राज्य में प्रजा भरपूर रहेगी।" कितने सुंदर तरीके से सृष्टि का रहस्य स्पष्ट कर दिया। किसी के राज्य में प्रजा रोती, भूखी, दुःखी, अशांत रहती है और किसी राज में सब सुखी होते हैं, सुख-चैन की बँसी बजाते हैं, गहरी निंद सोते हैं, निर्भय रहते हैं, देते रहते हैं। बाबा हम सभी में राजाई संस्कार भर रहे हैं। Rajyog is the training to administrate the world (राजयोग विश्व पर शासन करने का शिक्षण है)। राजयोग वर्ल्ड अड्मिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिंग है। जैसे हमारे यहाँ IAS है, इंडियन अड्मिनिस्ट्रेटिव सर्विस। ऐसे ही हम सीख रहे हैं

वर्ल्ड अड्मिनिस्ट्रेटिव सर्विस (पूरे विश्व पर राज्य करने की शिक्षा) । ट्रेनिंग मिल रही हैं हमे । बाबा हमे विश्व का राज्य-भाग्य देने आया हैं । राज्य-भाग्य देने से पहले हमे शिक्षण दे रहा हैं कि, "तुम्हें कैसे राज्य-भाग्य चलाना हैं ।" और राजयोग उसकी सर्वोत्तम ट्रेनिंग हैं ।

तो आइये, हम दाता बने । स्वमान में रहकर खड़े हो जाये कि, "मैं सबको देने वाली महान आत्मा, पूर्वज आत्मा हूँ... बाबा की किरणे मुझपर पड़ रही हैं और मुझसे जुड़ा हैं सारा संसार और यह ईश्वरीय वायब्रेशन्स सभी आत्माओ को जा रहे हैं ।" अपने चारो ओर देखो, दृष्टि दे दो सबको, "करोडो आत्माये चारो ओर दिख रही हैं... बाबा की किरणे मुझे आ रही हैं और मुझसे इन करोडो आत्माओ को जा रही हैं ।" ऐसे दातापन का अभ्यास आज हर घंटे में दो बार करेंगे ।

ओम शांति...

तुम इस धरा की महान आत्मा हो। उठो, तुम पर भगवान राज़ी हुआ हैं। तुम साधारण नहीं हो, तुम्हारा जन्म साधारण कार्यों के लिए नहीं हुआ हैं। तुम्हें तो एक-एक संकल्प से जग का कल्याण करना हैं। तुम्हें तो अपनी एक-एक क्षण की दृष्टि से सबको सकाश देनी हैं। तुम्हारा तो एक-एक सेकण्ड विश्व कल्याण हेतु समर्पित हैं। अपने इस जीवन को व्यर्थ संकल्पों में नहीं बीताना हैं।

ज़रा सोच ले, हमारा संगमयुग कैसे बीता हैं? जिन उम्मीदों से बाबा ने हमें जन्म दिया था, जो भाग्य की रेखाएँ हमारे मस्तक पर खिंची थी, जिस महान कार्य की जिम्मेदारी उसने हमें दी थी, क्या वह हम कर रहे हैं? या अपनी ही उलझनों में उलझकर रह गये हैं? या बच्चों के मोह में ही उलझकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं? या तेरी-मेरी से हम बाहर ही नहीं निकल पाये हैं।

हम महान हैं। हमें महान कार्य करने हैं। इसके लिए स्वयं को अनेक वरदानों से और शक्तियों से सुसज्जित करना हैं क्योंकि हमारे पास जब अथाह खज़ाने होंगे तब ही हम दूसरों को दे पायेंगे। यदि हम ही दूसरों की ओर प्यासी नज़रों से देखते होंगे तो हम दूसरों को कैसे दे पायेंगे?

तो सर्वप्रथम चीज़ हैं कि हम संतुष्ट आत्माएँ बने। संतुष्ट वही रहते हैं जो अपनी प्राप्तीयों में पूर्ण तृप्त हो। "मिल गया", जिनके अंदर से आवाज़ आती हो, "जो कुछ पाना था वह पा लिया, अब कुछ भी बाक़ी नहीं हैं। बस, भगवान सामने खड़ा हैं, भाग्य बाँट रहा हैं, प्यार दे रहा हैं, अपने वरदान दे रहा हैं... मिल गया... मिल गया..." संसार की सभी इच्छाओं और तृष्णाओं से मन मुक्त हो जाये अनासक्त हो जाये, कर्मेन्द्रियों का रस अपनी ओर आकर्षित न करें। किसी को खानेपीने का रस, किसी को देखने का रस, किसी को व्यर्थ सुनने का रस, किसी को बहुत ज्यादा बोलने का रस। यह रस हमारी शक्तियों को समाप्त करते जाते हैं। जो श्रेष्ठ योगी हैं उन्हें कर्मेन्द्रियों के रसों से मुक्त होना हैं। जो इन रसों से उपर उठ जाये उन्हें ही अतिन्द्रिय सुख भासता हैं।

तो आइये, सभी खज़ानों से अपनी झोली भरे। समय का खज़ाना भी बहुत बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक-एक सेकण्ड बहुमूल्य हैं। भगवान के महावाक्यों के अनुसार एक-एक सेकण्ड वर्षों के समान हैं। हम उतना ही समय को महत्व दे जितना बाबा ने इसको महत्व

दिया हैं। तो हमारा जीवन बड़ा महत्वपूर्ण बन जायेगा। हम संसार के काम आयेंगे और ऐसा समय आ रहा है जब हमें सारे संसार को श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देने होंगे। अपने वरदान देकर उनके दुःख हरने होंगे। तो हम स्वयं को तैयार करें इन महान कार्यों के लिए। तो समय को आप उतना ही महत्व दे रहे हैं या नहीं जितना इस समय का परम महत्व है? इस पर एक नज़र डाल ले, "मेरा संगमयुग कैसे बीता? और मुझे आने वाले दिनों को कैसे व्यतित करना है?" इसके बारे में आज कुछ लिख ले और चले आज सारा दिन बापदादा का हर घंटे में एक बार आह्वान करें। परमधाम में जाकर अपने प्राणेश्वर को निमंत्रण दे, "हमारा मन तुम्हारे बिना नहीं लगता। हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं। अपना धाम छोड़कर हमारे पास आ जाओ।" और देखो, निराकार परमात्मा अपना धाम छोड़कर नीचे उतर रहे हैं। फिर आ गये सूक्ष्मलोक में, ब्रह्मातन में प्रवेश किया, दोनो नीचे आ रहे हैं... आ गये हमारे सामने और सामने खड़े होकर बहुत प्यार से निहार रहे हैं... वरदानी हाथ सिर पर रख दिया है..."

ओम शांति...

हम प्यार के सागर की संतान हैं, तो सहजरूप से हम प्यार से भरपूर हैं। हमे किसी से प्यार माँगने की जरूरत नहीं। हम प्यासी नज़रो से चारो ओर नहीं निहारेंगे कि कोई हमे प्यार करें। बल्कि हम तो प्यार के दाता हैं क्योंकि हमारा बाबा प्यार का सागर हैं।

तो आईये हम अपने व्यवहार में प्यार को बहुत बढ़ायें, अभिमान को छोड़ दे, कटूता को छोड़ दे, सदा ही सख्त (कठोर) रहने की भावना को छोड़ दे। जो सदा ही सख्त रहते हैं वो प्रेम स्वरूप को भूल जाते हैं, वो दूसरो को सदा ही तंग रखते हैं इसलिए उनके समीप कोई भी आना नहीं चाहता। भले ही हमारे सिद्धांत बहुत सुंदर हैं लेकिन सिद्धांतो की पालना प्रेम की शक्ति के द्वारा ही कराइ जा सकती हैं, सख्त या कठोर होकर नहीं। क्योंकि जब तक मनुष्य स्व-इच्छा से धारणाओ को न अपनाये तब तक वो धारणायें उसके अंदर जायेंगी भी नहीं। मान लो, सवेरे उठना बहुत ही सख्ती से कोई करता और कराता हैं तो उठनेवालो को उसका आनंद नहीं आयेगा। लेकिन परमात्म प्यार में हम सवेरे उठे, स्व-इच्छा से उठे, महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उठे तो सहज ही ईश्वरीय रसो की अनुभूति होगी।

हम अपने प्यार में दूसरो को आगे बढ़ाये। यह प्यार बहुत बड़ी शक्ति हैं। जैसे और शक्तियाँ हमारे पास हैं वैसे ही प्यार की, स्नेह की शक्ति भी हमारे पास हैं। हमे प्यार की दृष्टि दे कर दूसरो के विकार नष्ट करने हैं, हमे प्रेम के बोल बोलकर दूसरो के दुःख हरने हैं, हमारी भावनाओ में भी प्रेम हो, हमारे व्यवहार में भी प्रेम छलकता हो ताकि सभी लोग यह सच्चे दिल से कह सके कि यह तो प्यार के सागर की संतान हैं। लेकिन यह प्यार असली प्यार तब बनता हैं जब यह प्यार आत्मिक प्रेम हो जाये। अगर हम दूसरो को आत्मिक दृष्टि से देखेंगे तो दूसरो को हमारे प्रेम के वायब्रेशन्स जायेंगे। अगर हम स्वयं देह से न्यारे रहेंगे तो संसार की सभी आत्माओ का प्यार हमे प्राप्त होगा। यहाँ तक कि स्वयं भगवान भी हमे बहुत प्यार करेगा।

तो हम अपने चित्त से कड़वाहट को निकाल दे, नफ़रत को निकाल दे, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष को निकाल दे, अवगुणी दृष्टि को समाप्त कर दे क्योंकि यही सब चीजे हमारे प्रेम स्वरूप को नष्ट करती हैं।

जिस व्यक्ति के बारे में हमने पहले ही कोई अवगुण अपने चित्त पर रख लिया हो तो हमारे बोल उसी अनुसार निकलते हैं। जिसके लिए हमारे मन में ईर्ष्या हो तो हमारे बोल भी

उस अनुसार निकलते हैं। इसलिए अपने मन में सभी के लिए निर्मल स्नेह पैदा करें। हम याद रखे कि संपूर्ण स्वरूप में सभी आत्माये बहुत गुणो से संपन्न हैं और दूसरी बात याद रखे कि यह सब हमारे हैं। जिनसे हम ईर्ष्या करते हैं, जिनसे हम नफ़रत करते हैं, जिन्हें हम गिराना चाहते हैं, वो तो सब हमारे हैं। अपनो से कैसा व्यवहार किया जाता है इस पर ज़रा एक नज़र डाल ले।

तो आईये हम प्रेम स्वरूप बनकर प्यार के सागर को प्रत्यक्ष करें और आज सारा दिन यह याद रखेंगे कि, "मैं प्रेम से भरपूर बहती गंगा हूँ... मेरे सामने जो भी आयेगा वो ईश्वरीय प्यार को अनुभव करेगा... मुझसे सभी प्यार की सौगात लेकर जायेंगे, मीठी दृष्टि लेकर जायेंगे, दो मधुर वचन सुनकर जायेंगे, ईश्वरीय वरदान लेकर जायेंगे..." और बार-बार अभ्यास करेंगे कि, "मैं आत्मा इस देह को छोड़कर चलती हूँ परमधाम में... प्यार के सागर को स्पर्श करती हूँ... कुछ देर उसके पास बैठ जाती हूँ... उससे प्यार के वायब्रेशन्स भरकर नीचे आती हूँ इस देह में... फिर मैं आत्मा उपर वापस जाती हूँ... बाबा प्यार का सागर है इस संकल्प से उसके पास बैठ जाती हूँ... हम में प्यार के वायब्रेशन्स भरते जाते हैं... फिर मैं आत्मा नीचे आती हूँ अपनी देह में..." यह अभ्यास सारा दिन करेंगे।

ओम शांति...

ऋषर्ण युग की जीवन शैली



भाषा तो बहुत शुद्ध हिन्दी ही होगी। हर शब्द वस्तु को सिद्ध करेगा – ऐसी भाषा होगी।

हम इस सृष्टि के हीरो एक्टर हैं। हमने जन्म-जन्म हीरो पार्ट बजाये हैं। जितना-जितना हम योगयुक्त होते जायेंगे, जितना-जितना बुद्धि शुद्ध होती जायेगी, हमारी एकाग्रता बढ़ती जायेगी, हम स्वदर्शन चक्रधारी होते जायेंगे। तो हमने जो-जो हीरो पार्ट बजाये हैं जन्म-जन्म वो हमारे सम्मुख आता जायेगा, इतना स्पष्ट आयेगा मानो साक्षात्कार हो रहा हो। तब हमे बहुत नशा चढ़ेगा, "यह पार्ट मेरे हैं" और तब हमारे वर्तमान में यदि कोई कमी रही होगी, कोई छोटा-मोटा भय समाया होगा, कोई अपवित्रता होगी वो सब समाप्त हो जायेगा।

तो हम हीरो एक्टर हैं, पूर्वज हैं, हमे सभी को प्यार की दृष्टि से देखना है। चाहे वो किसी भी धर्म की आत्मा हो, हमे किसी के लिए भी मन में तनीक भी घृणाभाव, नफ़रत का भाव नहीं रखना है। सभी अच्छे हैं। कभी-कभी क्या होता है कि कभी विशेष धर्म वालो को देखकर मन में नफ़रत आती है क्योंकि कि पास्ट की हिस्टरी (इतिहास) बड़ी खराब रही है। परंतु वो सब काम तो राजाओ ने किया था, सम्राटो ने किया था। कोई सम्राट बड़े क्रूर थे। आम जनता का इससे कोई लेना-देना नहीं होता है। वो तो अपने जीवन को सुखी देखना चाहते हैं। इसीलिए हम सभी धर्मों की आत्माओ को प्यार दे।

याद रखे, हम महान हैं। सभी धर्म की आत्माओ के पूर्वज हैं। हमारी प्यार की दृष्टि उनमे सुख-शांति का संचार करेगी। हम उन्हें अपना समझेंगे तो वो भी हमे अपना ही समझेंगे। यह बहुत सूक्ष्म गति काम करेगी। हमे याद रखना है कि जब तक हमारे मन में किसी भी आत्मा के लिए नफ़रत का भाव है तो हमारा योग संपूर्ण नहीं हो पायेगा, हमारा योग टूटता ही रहेगा। इसलिए अपने को योगयुक्त बनाने के लिए भी अपने चित्त को सबके लिए प्रेम और शुभ भावनाओ से भरपूर करना है। किसी के लिए भी यदि मन में नफ़रत भाव बसा हो तो उसको पूरी तरह निकाल दे।

चेक कर ले, कोई अपना किसी ने हमे कष्ट दिया हो वो मनुष्य, किसी के अवगुण हमे बहुत दिखाइ देते हो वो या कुछ और किसी कारण से हमारे मन में किसी के लिए नफ़रत तो नहीं बसी है..? नफ़रत का नुक़सान दूसरो को कम और मनुष्य स्वयं को बहुत ज्यादा होता है। आप जानते हैं कि हमारे इस देह में 70% से भी ज्यादा पानी होता है। कितना सुंदर यह रहस्य है कि धरती पर भी 70% पानी है। बिलकुल वैसा ही संबंध इस देह का है। देह में भी उतना प्रतिशत (हिस्सा) पानी होता है। तो अगर हमारे मन में घृणा-ईर्ष्या होगी तो हमारे नेगेटिव (नकारात्मक) वायब्रेशन्स हमारी देह में व्याप्त पानी को गंदा कर देंगे, नेगेटिव वायब्रेशन्स

उसको ज़हरीला बना देंगे और वो पानी हमे अनेक बीमारीयाँ देगा । अनेक बीमारीयाँ इस देह में जन्म ले लेगी । तो अगर हम अपने मन में प्यार भरेंगे, अगर हम अपने मन में सभी आत्माओ के लिए शुभ भावनायें भरेंगे तो उसके वायब्रेशन्स हमारे इस देह में स्थित पानी पर भी बहुत पॉज़िटिवली (सकारात्मक रूप से) काम करेंगे और हम सदा स्वस्थ रहेंगे, यह भी फ़ायदा हमे बहुत होगा ।

तो आइये हम सभी आत्माओ को प्यार की दृष्टि से देखे और सबको अच्छे वायब्रेशन्स दे ।

तो आज सारा दिन हम महसूस करेंगे कि, "मैं कल्पवृक्ष की जड़ों में हूँ... मैं पूर्वज... महान तपस्वी... कल्पवृक्ष की जड़ों में हूँ और बाबा मेरे सिर पर छत्र-छाँया हैं... मुझ से निकले हुए श्रेष्ठ वायब्रेशन्स पूरे कल्पवृक्ष में फैल रहे हैं... इससे सभी धर्मों की आत्माओ को हमसे अच्छे वायब्रेशन्स जायेंगे..." ऐसा भी आप विज्ञान (दृश्य) बना सकते हैं कि, "कल्पवृक्ष के तने में एक गुफ़ा हैं, उसमें मैं विराजमान हूँ... मैं पूर्वज हूँ, महान हूँ, मुझसे निकले वायब्रेशन्स अंदर ही अंदर सारे कल्पवृक्ष में फैल रहे हैं ।" आज हर घंटे में एक बार आनंद लेंगे ।

ओम शांति...

हम सभी को बाबा ने आते ही बहुत बड़े खज़ाने दिये हैं। उन खज़ानो को पाकर हम संतुष्ट हुए। हमारे अंदर से आवाज निकलनी चाहिए, "बाबा, आपको पाकर हम संतुष्ट हुए... आपने हमे बहुत खज़ाने दिये, उन्हें पाकर हम संतुष्ट हुए..!"

तो यह संतुष्टता ही हमारी बहुत बड़ी संपत्ति हो गई, हमारी प्रॉपर्टी हो गई। जो मनुष्य हर हाल में संतुष्ट रहता है वो सचमुच बहुत बुद्धिमान है, वो ज्ञानी है। मनुष्य के जीवन में रोज़ अनेक बातें आकर उसके मन को थोड़ा-थोड़ा, कहीं पर भी बहुत सूक्ष्म असंतुष्ट करती हैं। कहीं मान न मिला, कहीं बैठने को ठीक जगह न मिली, कहीं बच्चो ने आज्ञा न मानी, कहीं पत्नी या पति ने कुछ ऐसा-वैसा कर दिया, कहीं नौकरी-धंधो में कुछ हो गया... तो एक असंतोष की भावना बनी रहती है।

दूसरो के व्यवहार के कारण भी और कुछ अप्राप्तिओ के कारण भी मनुष्य असंतुष्ट होता है। परंतु बुद्धिमान, समझदार वही हैं जो सदा संतुष्ट रहे। संतुष्टता सचमुच बहुत बड़ी चीज़ है। और विचार करें, यदि भगवान को पाकर भी यदि कोई संतुष्ट न हुआ, तो भला कब होगा..? सोचा तो यह जाये कि यदि भगवान को पाकर, उससे संपूर्ण ज्ञान पाकर, सर्व खज़ाने पाकर, उसका प्यार पाकर, उससे सुख-शांति और शक्तियों की अनुभूति कर के, पवित्र आत्मा बनकर भी यदि हम संतुष्ट नहीं हुए तो द्वापरयुग के बाद पुनः असंतोष की ज्वाला हमारे अंतरमन में धधकती रहेगी और हमे जीवन का सच्चा सुख नहीं मिलेगा। इसलिए स्वयं को स्वयं में ही संतुष्ट करें। श्रीमद् भगवद् गीता के दूसरे अध्याय में ही जब स्थितप्रज्ञ योगी के लक्षणो की चर्चा की गई है तो कहा गया है ऐसा व्यक्ति जो आत्मा में ही संतुष्ट रहता है वो स्थितप्रज्ञ है। अर्थात् जो आत्म-अनुभूति में संतुष्ट रहता है, जो आत्मा को भरपूर करके संतुष्ट रहता है। जो आत्मा की श्रेष्ठ स्थिति बनाकर संतुष्ट रहता है वही स्थिर बुद्धि हो सकता है अन्यथा यह बुद्धि है जो भटकती ही रहती है।

तो आइये हम सभी संतुष्टता से अपना श्रृंगार करें। यह श्रृंगार बहुत सुंदर है। यदि मन उत्तेजित रहता है, यदि मन अशांत रहता है तो चाहे कोई व्यक्ति कितना भी सुंदर हो, श्रृंगारीत हो वो वास्तव में किसी को भी प्रिय नहीं लगता, किसी को भी आकर्षित नहीं करता। सच्चा प्यार और सच्चा आकर्षण मनुष्य के अंदर उसकी श्रेष्ठ स्थिति, चित्त की शांति, मन की संतुष्टता से ही प्राप्त होता है। तो जरा इस नशे में आ जायें, "स्वयं भगवान हमारा श्रृंगार कर रहा है। सोचो, कितनी बड़ी बात हो गई..! वो श्रृंगार भी ऐसा, सदगुणो से श्रृंगार, शक्तियों से

श्रृंगार, महान संकल्पो से श्रृंगार, श्रेष्ठ पवित्रता से श्रृंगार, योग के सुख के द्वारा श्रृंगार । यह सब हमारे श्रृंगार हैं । हमे इन सब श्रृंगारो को खराब भी नहीं होने देना है, श्रृंगार को बिगाड्ना भी नहीं और निरंतर श्रृंगारे हुए ही रहना है ।

तो आइये आज हम सारा दिन इस स्वमान में रहे, "स्वयं भगवान हमारा श्रृंगार कर रहा है । वो स्वयं आया है हमारे पास हमे सबकुछ प्रदान करने के लिए और मैं हूँ संतुष्टमणी ।" बहुत सुंदर यह स्वमान है, "मैं हूँ संतुष्टमणी, जिसका प्रकाश चारो ओर फैलता है ।" साथ-साथ बहुत अच्छा अभ्यास करेंगे कि, "यह संसार का खेल पूरा हुआ । अब मुझे सबकुछ छोड्कर आत्मा बनकर निराकार बनकर बाबा के साथ घर चलना है", और अपने को आत्मा देखकर घर जाते हुए देखेंगे, "मैं आत्मा पहुँच गई अपने घर, मुक्त अवस्था में, संपूर्ण शांत अवस्था में..." और वहाँ एंजोय (आनंद का अनुभव) करेंगे । यह एंजोयमेंट ही मुक्ती का आनंद है ।

ओम शांति...

हम सभी इस संसार में सबसे अधिक भाग्यवान हैं। बाबा की ओर देखकर ज़रा सच्चे दिल से कहे, "बाबा, आपने मुझे सबकुछ दिया। आपको पाकर हम संतुष्ट हो गये। आपको पाने के बाद और कुछ भी पाना शेष नहीं रहा!"

सचमूच, भगवान हमारा परमपिता, परमशिक्षक और परमसद्गुरु बनकर आया। कितना बड़ा भाग्य है कि स्वयं भगवान हमें पढ़ाने के लिए आ गया! और इतना ही नहीं, उसने आकर हमारा सच्चा साथ निभाया, वह आकर हमारा खुदादोस्त बन गया! सदा साथ निभाने वाला दोस्त, आवश्यकता में साथ देने वाला दोस्त। केवल कहने का दोस्त नहीं! जब भी बुलाओ तो वह आ जाता है ऐसा दोस्त! परंतु याद रखेंगे, दोस्ती हमेशा दोनों ओर से हुआ करती है। वह हमसे दोस्ती निभाने आया है तो हमें भी उससे दोस्ती निभानी है। दोस्ती में सर्वप्रथम होता है दो सच्चे दिलों का मिलन। हमारे दोनों के सच्चे दिल हो, पवित्र दिल हो। हमारा खुदादोस्त पवित्रता का सागर है, हम भी परमपवित्र हो जाये तो दोनों के सच्चे दिल मिल जाये और यह दोस्ती everlasting (हमेशा के लिए) हो जाये और द्वापरयुग के बाद भी यह दोस्ती चलती रहे!

विचार करें, क्या हम ऐसे सच्चे दिलवाले हैं? दोस्ती उन्हीं में होती है जिनके विचार समान हो। बाबा के विचार बेहद के, महान विचार हैं। हम अपने विचारों को चेक करें कि क्या हमारे विचार भी वैसे ही हैं? वह कल्याणकारी, क्या हम भी कल्याणकारी हैं? वह सत्यम, शिवम, सुंदरम, क्या हम भी सत्यम, शिवम, सुंदरम हैं? वह सबको देने वाला, सबके लिए शुभ चिंतक। क्या हम भी वैसे ही हैं? ऐसे ही अनेक महान विचार बाबा के हैं। एक के बहुत महान विचार हो और दूसरे के बहुत छोटे, एक निःस्वार्थ हो और दूसरे में स्वार्थ भरा हो तो दोस्ती कैसे टिकेगी?

तो आइये हम इस दोस्ती को everlasting (अनंत) बनाने के लिए विचारों का मिलन करें और साथसाथ उसने हमारा आह्वान किया, "बच्चे, मेरे इस महान कर्तव्य में मेरे साथी बन जाओ।" तो बस, हम लगा दे सबकुछ उसके महान कर्तव्यों में और वह भी लगा देगा उसका सबकुछ हमारे लिए। यह हो जायेगी बहुत सुंदर समानता।

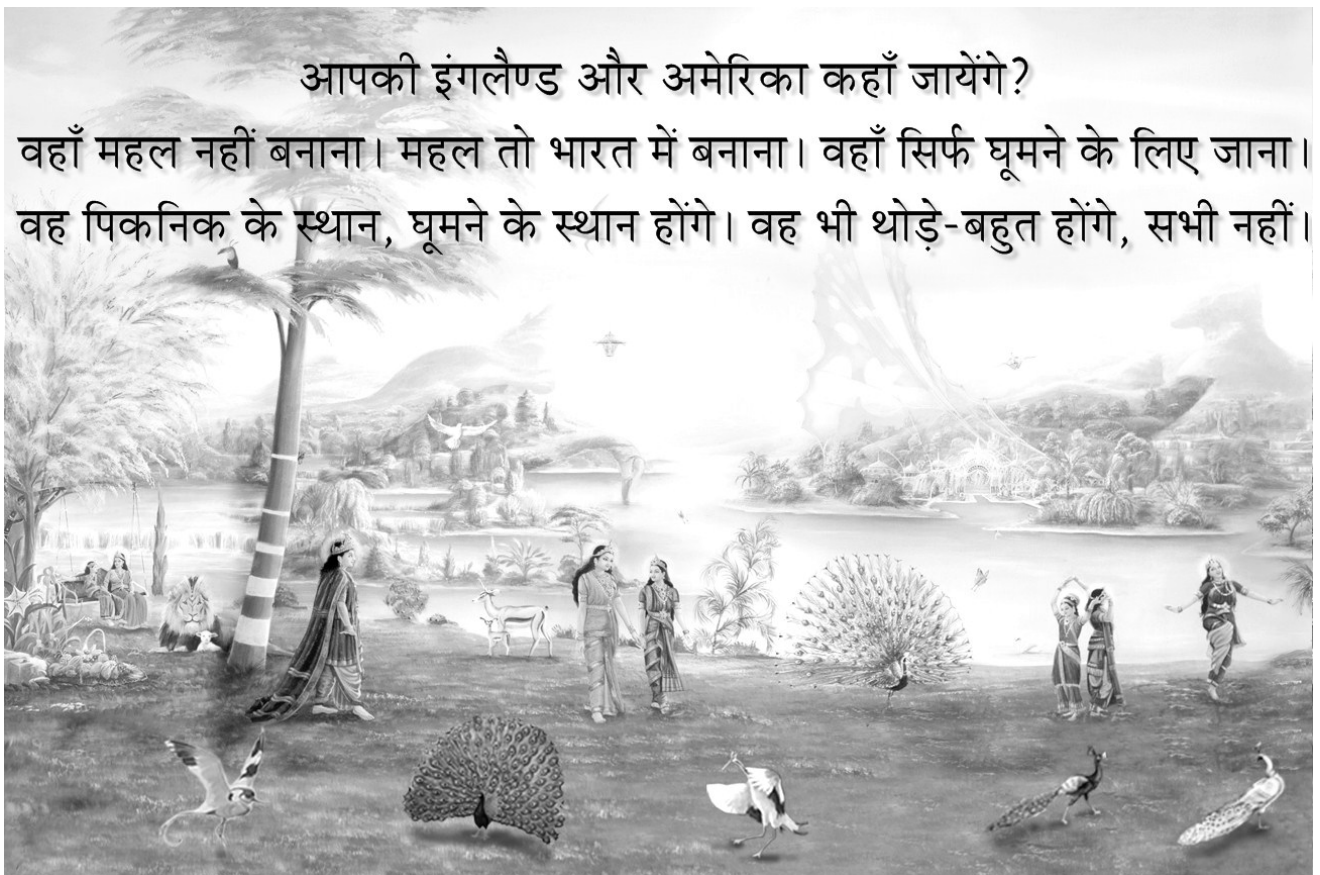
तो आइये इस खुदादोस्त का संपूर्ण लाभ उठाये। घूमने चले तो दोस्त के साथ, भोजन करें तो दोस्त के साथ, कार्य पर जाये तो दोस्त के साथ, ऐसा पक्का प्यार हो जाये कि उसके

अलावा हम रह ही न पाये तो अनुभव होगा कोई भी कठनाई आये तो बस उसे याद कर लेना, "आ जाओ!" मन भारी हो तो उसे सुना देना! तो यह दोस्ती जीवन को परमानंद से भर देगी। आइये, बाबा को अपना दोस्त बना लो। ऐसा दोस्त जो चारो युगो में कभी नहीं मिलता, कोई सुने तो वंडर खायेगा, उसके नैन खुले के खुले रह जायेंगे कि, 'भगवान इनका दोस्त बन गया..! वाह, इनका भाग्य..!'

तो आज सारा दिन इस नशे में रहेंगे कि मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं क्योंकि स्वयं भगवान मेरा दोस्त बन गया हैं। और बारबार उसको अपने पास बुलायेंगे, उसका हाथ पकड़कर सैर करेंगे, उससे बातें करेंगे, अपने मन के सारे बोझ उसे देंगे, कहीं कोई काम भारी हो जाये तो हजार भुजाओ सहित उसका आह्वान करेंगे और कहेंगे, "आओ, थोड़ा काम तुम करो, थोड़ा हम करेंगे।" इस तरह आज सारा दिन खुदा की दोस्ती को एंजोय करेंगे। इसके भिन्न-भिन्न अनुभव सारा दिन करते रहेंगे।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



हम सुना करते थे 'God is truth' (ईश्वर सत्य हैं)। कुछ लोग ऐसा भी कह देते थे 'Truth is God' (सत्य ही ईश्वर हैं)। लेकिन जो सत्य बोलता है उसको तो भगवान नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह कहा जायेगा कि जहाँ सत्यता है वहाँ परमात्म सहयोग है। उसकी उपस्थिति का आभास हो सकता है। और God is truth अर्थात् वही संपूर्ण सत्य ज्ञान का दाता है, वही मनुष्य को सत्य की ओर ले चलता है, वही हमे हमारे सत्य स्वरूप की याद दिलाता है। जब हम अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तो हम बहुत शक्तिशाली हो जाते हैं। सत्य में शक्ति है, सत्य को असत्य के काले बादल ढूंक नहीं सकते। सत्य को विवश भले किया जा सकता है लेकिन हराया नहीं जा सकता। अंततः विजय सत्य की ही होती है इसलिए हमे स्वयं में सत्य की शक्ति भरनी है। सत्य कर्म करने से पुण्य बहुत जमा होते हैं और जिनके कर्म असत्य हैं वो पाप की धुंधली राहो पर चलते हैं। पाप उनकी बुद्धि को मलीन करता रहता है। यह सूक्ष्म पाप, भले ही वो महसूस करें कि वो धनवान बन गये हैं, उन्होंने ने यह-यह काम कर लिए। परंतु यह सूक्ष्म पाप उनके सिर पर बोझ बनता रहता है। उनके मन और बुद्धि को निरंतर भटकाता है इसलिए वो ईश्वरीय सुखो का सच्चा रसपान नहीं कर सकते।

तो आइये हम सत्य से स्वयं को भरपूर करें। पहले अपने सत्य स्वरूप को पहचाने, "मैं आत्मा हूँ" यह हमारा पहला सत्य स्वरूप, फिर आत्मा के सातो गुणो को स्वीकार करें, उन्हें पहचाने। "हे आत्मा, तुम तो ज्ञान स्वरूप हो, अज्ञान का तुम्हारी बुद्धि में कोई स्थान नहीं। हे आत्मा, तुम तो शांत हो, तुम अशांत हो ही नहीं सकती, तुम तो प्रेम स्वरूप हो, तुम्हारे मन में नफ़रत आ नहीं सकती। तुम तो आनंद स्वरूप हो, सदा प्रसन्न हो। परम पवित्र हो, विकारो से तुम्हारा कुछ लेना-देना नहीं। तुम तो सर्वशक्तिवान की संतान हो, शक्तिशाली हो, निर्भय हो।" यह हमारा सत्य स्वरूप है। इसे हम न केवल पहचाने लेकिन इसका सचमुच में स्वरूप बनते चले। स्वरूप से अर्थात् स्थिति बनने से हम में शक्ति बहुत आ जाती है। यह सत्यता की शक्ति के आगे सारे संसार को झुकना पड़ेगा। वैसे ही हमने जान लिया है परमात्मा के सत्य स्वरूप को और यह भी जान लिया है कि वो हमारा है और यह भी जान लिया है कि वो निरंतर हमे मदद करने के लिए तैयार है। बस उसने शर्त रखी है कि अपने सारे बोझ मुझे अर्पित करो, मेरे को तेरे में बदलो और फ़िकर को बदलकर फ़कुर ले लो। तो हम यह जानते हैं वो हमारी सारी चिंताये हर लेगा, वो हमे निश्चिंत बनायेगा। लेकिन यदि मेरा-मेरा रहेगा, यदि हम अपने सारे बोझ अपने मन पर ही रखकर चलेंगे तो हम ईश्वरीय मदद के पात्र नहीं बन पायेंगे।

तो आइये आज हम सत्य स्वरूप को देखे, इस संसार के सत्यता के बारे में भी जाने कि यह संसार अब समाप्त होने जा रहा है। जो वस्तुयें, वैभव, धन- संपत्ति हैं उसके भी सत्य स्वरूप पर ध्यान दे कि यह सब केवल उपयोग करने की वस्तुयें हैं, यह विनाशी हैं, अविनाशी नहीं।

चारो ओर सत्य नज़र से देखते हुए आज परमसत्य को बार-बार देखेंगे, दस-दस सेकण्ड के लिए हर घंटे में दो-तीन बार। बस, जैसे "यहाँ बैठकर हम उस परमसत्य को निहार रहे हैं। उससे चारो ओर फ़ैलता हुआ तेज़ हमें बहुत आकर्षित कर रहा है, निराकार है लेकिन अतिसुंदर है। उसकी सुंदरता को देखकर हमारा चित्त तृप्त हो रहा है..."

आज आत्मा के सत्य स्वरूप चमकती हुई को देखते रहेंगे और परमात्मा के सत्य स्वरूप को देखेंगे और इसका परम आनंद लेंगे।

ओम शांति...

बहुत-बहुत महत्वपूर्ण बात हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में हमारी स्थिति न बिगड़े। परिस्थितियाँ तो आती हैं, संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिसको विभिन्न परिस्थितियों से न गुजरना पड़ा हो। कोई गरीबी की परिस्थिति से गुजर रहा है, कोई धनवान है तो उसे अनेक तरह की चिंतायें रहती हैं, उसकी अलग परिस्थिति होती है, डॉक्टर्स की अलग परिस्थिति तो बिजनेस वालो को अलग परिस्थिति, अधिकारियों की अलग परिस्थिति तो राजकारणियों की अलग परिस्थिति। परंतु परिस्थितियों में स्वस्थिति को श्रेष्ठ बनाये रखना ही परिस्थितियों को समाप्त करने का तरीका है क्योंकि जब हमारी स्वस्थिति श्रेष्ठ रहती है तो हमसे बहुत ही शक्तिशाली वायब्रेशन्स निकलते हैं। हमारे संकल्प सफल होते हैं, सिद्ध होते हैं और इससे परिस्थितियाँ बदल जाती हैं। इसलिए हमें यह कला सीख लेनी है। अपने को इतना शक्तिशाली बना लेना है कि परिस्थितियाँ हम पर हावी न हो जायें। हमारी शक्तियाँ परिस्थितियों पर भारी पड़े। इसके लिए हमें अपने पास ज्ञान का बल भी बहुत रखना है। ज्ञान के बल का अर्थ है कि ज्ञान की कुछ ऐसी पॉइंट्स जिसके चिंतन से हम परिस्थितियों में भी हलके रहे। जैसे अपने सारे बोझ बाबा को समर्पित कर दे तो बाबा बोझो को हर लेता है। अपनी सारी समस्यायें बाबा के हवाले कर दे तो उनमें वो बहुत मदद कर देता है। जैसे बाबा के महावाक्य याद करें, "बच्चे, तुम चिंता क्यों करते हो? मेरे को तेरे में समर्पित करके बेफिक्र बादशाह बनके जीओ। तुम चिंता न करो, मैं हजार भुजाओ सहित तुम्हारे साथ हूँ। मेरी शक्तियाँ तुम्हारे साथ हैं।" इनको याद करने से हमें जो बल मिलेगा उसे ज्ञान का बल कहते हैं। इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है हमें परिस्थितियों में हलका रखने में।

दूसरी चीज है स्वमान का बल। हम कौन हैं और किसके हैं? हम कितने शक्तिशाली हैं? होता क्या है कि परिस्थितियाँ आने पर हम अपनी शक्तियों को भूल जाते हैं तो परिस्थितियाँ हमें भारी लगने लगती हैं। छोटीसी बीमारी भी एक बड़ी परिस्थिति के रूप में अनुभव होने लगती है। लेकिन अगर हम स्वमान में स्थित रहते हैं तो हमारा सारा ज्ञान भी इमर्ज रहता है और हमें अपनी शक्तियों की भी awareness (जागरूकता) रहती है। इससे परिस्थितियों का दबाव कम हो जाता है।

तीसरा है, हमें अपने अंदर योग की शक्ति बढ़ाते चलना है। योग ही एक ऐसी विद्या है, कनेक्शन है सर्वशक्तिवान से कि योग की शक्ति के बिना न तो कोई मायाजीत बन सकता और न ही शक्तिशाली। तो हमें योग अभ्यास बहुत बढ़ा देना है। योग के भिन्न-भिन्न तरीके

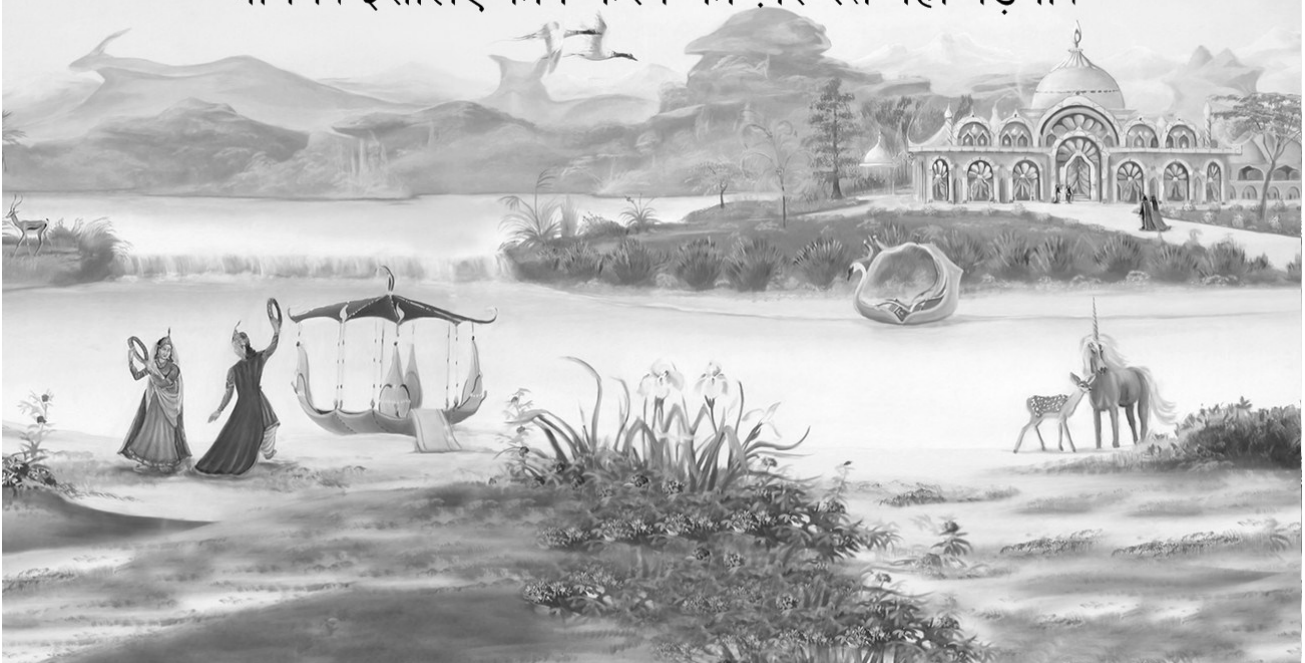
सीखकर कर्म में योग को जोड़ने का दृढ़ संकल्प कर ले । प्लान (योजना) बना ले, विभिन्न कर्मों में, घूमते-फ़िरते, ड्राइविंग करते, बस में यात्रा करते हम कैसे-कैसे अभ्यास करें ताकि हमारे अंदर योग की शक्तियाँ बढ़ती रहे ।

तो आज सारा दिन हम एक बहुत सुंदर अभ्यास करेंगे जो बहुत सरल हैं, "मैं मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ" । स्वयं को आत्मा देखे और मास्टर ज्ञानसूर्य के स्वरूप में देखे । फिर ज्ञानसूर्य शिवबाबा परमधाम से नीचे उतरकर मेरे सम्मुख आ गये हैं । सामने देखे उनको, 4-6 फुट की दूरी पर और उनकी शक्तियों की रंगबेरंगी किरणे सामने से मुझ पर पड़ रही हैं । यह अभ्यास आज बार-बार करेंगे । घंटे में दो बार तो इसको अवश्य करना है । इससे एकाग्रता भी हमारी बहुत बढ़ जायेगी और हमे बहुत सुंदर अनुभव होंगे । अगर इस अभ्यास को हम बढ़ा दे तो हमे परिस्थितियाँ बहुत हलकी लगने लगेगी । हम बहुत बड़े हैं और परिस्थितियाँ बहुत छोटी हैं यह आभास होता रहेगा और हम उन पर विजयी होंगे ।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली

विमान शुरू किया और आवाज़ से भी पहले पहुँच जायेंगे । इतनी तेज़ स्पीड विमान की होगी । जैसे फोन में बात करते हो ना, इतना जल्दी विमान से पहुँच जायेंगे । इसलिए फोन करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी ।



संगमयुग का वास्तविक वर्सा सर्वशक्तियाँ और सर्वगुण हैं। यूं तो बाबा हमे भविष्य का स्वर्ग का राज्य-भाग्य देने आया हैं। परंतु उसको प्राप्त करने के लिए शक्तिसंपन्न, गुणसंपन्न, चरित्रवान, दिव्यबुद्धि से संपन्न बनना परम आवश्यक हैं। इसलिए सभी ध्यान दे, यही वो समय हैं जब हम अपनी खोई हुई समस्त शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

एक दिन था जब हम परमधाम से इस धरा पर आये थे, संपूर्ण थे। शक्तियों में भी संपूर्ण, गुणो में भी संपूर्ण, मर्यादाओ में भी संपूर्ण, और पवित्रता में भी संपूर्ण। धीरे-धीरे हमने अपनी शक्तियाँ गवाँ दी। अब पुनः समय हैं शक्तिसंपन्न बनने का। पहला ध्यान हम दे कि हमारी शक्तियाँ नष्ट न हो रही हो। व्यर्थ संकल्पो में, व्यर्थ देखने में, व्यर्थ बोलने में, व्यर्थ कर्म करने में, दूसरो के अवगुण देखने में, परचिंतन करने में, परदर्शन करने में, अवगुणी दृष्टि रखने में, ईर्ष्या-द्वेष में, घृणा-नफ़रत में, काम-क्रोध आदी विकारो में हमारी आंतरिक शक्तियाँ नष्ट होती हैं। हमे पहले तो जो नष्ट होने का लिकेज हैं उसे बंद करना हैं और फिर स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिए मन में शक्तिशाली विचारो की रचना करनी हैं। सीख ले आप, कम से कम दस सुंदर और शक्तिशाली विचार अपने पास जरूर रखे। जैसे "मैं कल्प-कल्प का विजयरत्न हूँ... माया मुझे हरा नहीं सकती... इस माया को मैंने कल्प-कल्प जीता हैं... मार्ग में चाहे कितनी भी परिस्थितियाँ आ जाये, मैं अपनी स्थिति से विचलीत नहीं होऊंगा... मैं तो मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... इस संसार की सबसे अधिक शक्तिशाली आत्मा... मेरे लिए कुछ भी असंभव नहीं... मेरे साथ तो स्वयं भगवान हैं... उसकी शक्तियाँ मेरे साथ काम कर रही हैं... मुझे किसी का कोई भय नहीं..." इस तरह के सुंदर संकल्प अपने पास नोट रखे। तो शक्तियाँ बढ़ती जायेगी क्योंकि हमारे संकल्प से एनर्जी (उर्जा) उत्पन्न होती हैं। हमारा हर पॉवरफुल संकल्प हमे इनर-पॉवर (आंतरिक शक्ति) प्रदान करेगा। "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... मैं विजयरत्न हूँ... मैं निर्भय हूँ... मैं भगवान की संतान हूँ..." यह सब स्वमान के संकल्प भी हमे शक्ति प्रदान करेंगे। साथ-साथ योगबल को हम बढ़ाते चले, योगबल से ही हमे सबसे ज्यादा शक्तियाँ मिलती हैं। पवित्रता का बल भी बहुत बड़ा बल हैं। इस बल को जितना हम बढ़ायेंगे, हम शक्तिशाली बनते जायेंगे। ऐसे ही ज्ञान-चिंतन भी हमे बल प्रदान करता हैं। तो अपनी शक्तियों में दिनोदिन वृद्धि करते चले।

गुणसंपन्न भी हमे बनना हैं, कुछ गुणो पर विशेष ध्यान दे। संतुष्टता, सरलता, निर्भयता, अंतर्मुखता, निरहंकारीता, समर्पणता, शुभ भावना, दृढ़ता इन गुणो पर विशेष ध्यान देंगे। यह

8-10 गुण हमें गुणसंपन्न बनाने में संपूर्ण भूमिका निभायेंगे। जो व्यक्ति गुणवान होता है वही सबको प्रिय लगता है।

तो आइये आज सारा दिन हम अपने पाँचों स्वरूपों का अभ्यास करें। हम अपने देव स्वरूप को देखें। वो भी गुणों से संपन्न और शक्तियों से संपन्न है। हम अपने आत्मिक स्वरूप पर नज़र डालें, "मैं सभी गुणों से संपन्न, संपूर्ण पवित्र और शक्ति स्वरूप हूँ..." हम अपने पूज्य स्वरूप पर नज़र दौड़ाएँ, "हमारे मन में सभी के लिए शुभ भावनाएँ हैं, हम दाता हैं, हम बहुत रहमदिल हैं..." हम अपने ब्राह्मण स्वरूप पर ध्यान दिलाएँ भगवान के साथ और फ़रिश्ते स्वरूप को देखें, "हम संपूर्ण पवित्र हैं"।

आज इन पाँचों स्वरूपों का चिंतन करते रहेंगे, हर घंटे में एक बार। तो यह पाँचों स्वरूप हमें शक्तिशाली भी बनायेंगे और गुणसंपन्न भी।

ओम शांति...

स्वयं भगवान ने परम सदगुरु बनकर हम सभी को राजयोग सिखाया । जरा अपने भाग्य को देखकर आनंदित हो जाये । स्वयं भगवान हमें पढ़ाने आये और उन्होंने ने योग की गुह्य से गुह्य विद्या हमें प्रदान कर दी । उसमें एक बात है कि उसने हमारी सोई हुई शक्तियों को जगा दिया । हमारे सोये हुए पवित्र संस्कारों को जागृत किया, हमें एहसास कराया कि तुम बहुत शक्तिशाली हो, तुम परम पवित्र हो, तुम इस धरा की महान आत्माये हो..! हम तो विस्मृति की नींद में सोये हुए थे । बाबा ने आकर हमें जगा दिया है और सभी पूरी तरह से जग चूके हैं ।

तो रोज़ सवेरे उठकर, उठने के बाद हमें स्वयं को फिर से जगाना है, अच्छी तरह जगाना है, अपनी सोई हुई शक्तियों को आवाज देना है, "उठो, (अपनी पवित्रता का आह्वान करना है) आ जाओ मेरे पास ।" यह महान कार्य रोज़ सवेरे-सवेरे हमें करना है । तो उठने के तुरंत बाद ही बाबा को गुड मॉर्निंग करके अपने को अनेक स्वमानों की याद दिलाये । यह स्वमान हमारी सोई हुई चेतना को जगाने वाले हैं, यही हमें महान बनाने वाले हैं । हमें यह सोचने की आवश्यकता नहीं कि बाबा तो केवल यह कहते हैं कि मुझे याद करो, बाकी चीजों की क्या जरूरत है । लेकिन योग से हमारे विकर्म विनाश होंगे लेकिन स्वमान से हम सर्वगुण संपन्न और संपूर्ण शक्तिशाली बन जायेंगे । अकेले योग करने से हमें अच्छे अनुभव तो होंगे । बेशक योग हमारा मुख्य विषय है, परंतु हमें विविध प्रकार के अनुभव नहीं होंगे । जबकि हमें आवश्यकता है कि हम अलग-अलग तरह के अनुभव प्राप्त करें । अपने देव स्वरूप को याद करेंगे तो देवत्व का अनुभव होगा, बहुत आनंद होगा । हमें महसूस होगा कि हमारे सुखों के दिन आ रहे हैं, हम कैसे थे? हम हीरो एक्टर्स थे, इसका हमें बहुत स्पष्ट आभास होने लगेगा । अपने पूज्य स्वरूप को याद करने से हमें आभास होगा कि जिन देवी-देवताओं की हम पूजा करते हैं वो तो हम ही हैं । तब हमारा क्या स्वरूप है? हमारे चेहरे पर कितनी दिव्यता, कितना तेज, कितनी शांति और कितनी पवित्रता है । हमें महसूस होगा कि यह मैं ही हूँ । यह नशा चढ़ता जायेगा । इसको ही लोगो ने सो-अहम-तत्त्वम ऐसे मंत्रों के रूप में भक्ति में याद किया । लेकिन गलती यह कर दी कि स्वयं को भगवान मान बैठे, उसका स्वरूप मान बैठे । यह नहीं, हम देवता थे, हम पुनः देवता बन रहे हैं । यह सो-अहम का अर्थ है ।

तो हम अपने को रोज़ जगाया करें । अपनी महानताओं की स्वयं को स्मृति दिलाया करें । अपनी शक्तियों की स्वयं को स्मृति दिलाया करें ताकि हमें यह आभास रहे कि "शक्तिशाली

मैं हूँ, यह समस्यायें और परिस्थितियाँ शक्तिशाली नहीं हैं, बड़े हम हैं बाक़ी यह सभी बाते तो बहुत छोटी हैं।

तो आज सारा दिन हम स्वयं को जगाकर रखेंगे और विस्मृति की नींद में सोने नहीं देंगे। तो याद रखेंगे कि "हमारा यह 84 जन्मों का खेल अब पूरा हुआ। स्वयं भगवान आये हैं हमें घर ले जाने के लिए। मुझे सबकुछ छोड़कर अब घर वापस चलना है।" तो अभ्यास करेंगे कि, "इस देह को छोड़कर मैं आत्मा उड़ चली अपने धाम की ओर... धीरे-धीरे मैं उड़ती जा रही हूँ... पहुँच गई परमधाम... यह मेरा घर है, यहाँ मुझे चैन है, विश्राम है, संपूर्ण सुख और शांति है।" थोड़ी देर हम यहाँ स्थित होंगे फिर महसूस करेंगे कि वहाँ से निकलकर मैं आत्मा नीचे उतर रही हूँ और आ गई अपनी देह में, भ्रुकुटि की कूटिया में।" यह जाने और आने का अभ्यास करते रहेंगे।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



स्वयं शांति के सागर बाबा इस संसार में सुख और शांति की स्थापना के लिए आये हैं। वह युग बदलने आये हैं, इस धरा पर स्वर्ग रचने आये हैं जहाँ संपूर्ण सुख और शांति होगी। हम स्वर्ग की स्थापना में भगवान के मददगार हैं। महसूस करें सभी, हम उसके मददगार हैं। उसने हमें यह बहुत बड़ा भाग्य दिया है कि अपने कार्य में हमें भी लगा दिया। कहीं हम उसे तन से मदद करते हैं, कहीं धन से, कहीं मन से, कहीं अपनी योग्यताओं से। लेकिन योग से उसे मदद करना, अपनी श्रेष्ठ धारणाएँ अपनाकर उसे मदद करना यह बहुत सुंदर बात है। क्योंकि हमें यदि क्रोध आता है, यदि बात-बात में घरों में हम झगड़ते हैं, यदि हममें अशांति फैलाने का संस्कार है तो दूसरों पर इसका बहुत बुरा असर पड़ता है। परिवार वाले भी आपसे प्रभावित नहीं होंगे और जो लोग देखेंगे उनकी भी डिसर्विस होगी। और आज तक यह देखा गया है जिनकी स्थिति बहुत सुंदर है, जो बहुत sweet (मीठे) बन गये, जिन्होंने अपने व्यवहार को बदल दिया, जिन्होंने अपने क्रोध को शांत कर दिया, जिनके बोल शीतल और नम्रता से भरपूर हो गये उनके द्वारा बहुत सेवा होती है। उनका जीवन ही बहुत सेवा करता है। लोग उन्हें देखकर सोचते हैं कि, "जिन्होंने इनको बदल दिया, जिन्होंने इनके जीवन में शांति ला दी, हम भी उनके ही पास चले।" और यह सेवा को आकर्षित करने का बहुत सुंदर साधन बन जाता है। इसलिए हमें ध्यान देना है कि हमारे व्यवहार में, हमारे बोल से कहीं भी परिवारों में, कार्यक्षेत्र पर अशांति न हो।

हमारी रोयल चलन, हमारे रोयल बोल, हमारा रोयल व्यवहार, हमारी देवकूल की याद दिलाये। तो सब चिंतन करेंगे, अपने को देखेंगे, "मेरे किसी बोल से दूसरे को अशांति तो नहीं होती।" ऐसे नहीं परिवार में कुछ न मिला, थोड़ी बहुत देर हो गई, किसीने कोई गलती कर दी, बात न सुनी गई और अशांत होकर क्रोधीत होकर चारों ओर लड़ाई-झगड़ा प्रारंभ कर दिया। यह संस्कार अभी हमें समाप्त कर देने हैं। यह संस्कार हमारे नहीं हैं, यह मायावी संस्कार हैं। ऐसा सोचकर संस्कारों से नफ़रत करनी है तो यह संस्कार हमसे दूर जाते रहेंगे। हम शांत हैं। जितना-जितना हम शांत होते जायेंगे, संसार में स्वराज्य स्थापित करने में मदद होती जायेगी। तो अपने चित्त को क्रोध से मुक्त, पूरी तरह शांत कर दे। अपने को चेक कर ले, "मुझे कहां क्रोध आता है, कौनसी परिस्थितियाँ हैं जो मुझे क्रोधीत कर देती हैं? ऐसा तो नहीं की क्रोध मेरा स्वभाव बन गया है? बात-बात में मुझे क्रोध आता रहता है?" इसको ठीक अवश्य करना है। अहंकार ही क्रोध का बीज होता है। जैसे-जैसे हम निरहंकारी बनते जायेंगे, वैसे-वैसे हमारा चित्त भी शीतल होता जायेगा। हमारे व्यवहार में भी रोयल्टी आती जायेगी।

तो आज सारा दिन हम लक्ष्य बना ले, हमें चित्त को पूरी तरह शांत रखना है और बाबा के इस महान कार्य में सहयोग देना है। यह संकल्प हमें बहुत अच्छी मदद करेगा। और सारा दिन हम पाँच स्वरूपों का अभ्यास करते हुए यह अभ्यास करेंगे कि, "अब यह खेल पूरा हुआ। अब मुझे सबकुछ यहीं छोड़कर, भरपूर होकर, कर्मातित होकर वापस अपने धाम जाना है। मेरा अनादि स्वरूप... आदि देव स्वरूप... मंदिरो में स्थित पूज्य स्वरूप... मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण... भाग्यवान् आत्मा... भगवान् के द्वारा पालना में पल रही आत्मा और मैं फ़रिश्ता हूँ..." एक मिनट में पाँचों स्वरूपों को अभ्यास करेंगे और फिर "मुझे भी फ़रिश्ता बनकर वापस चलना है" यह सुंदर अनुभूति करेंगे। घंटे में एक बार अवश्य करेंगे।

ओम शांति...

संगमयुग पर बाबा हमे सर्व खजाने देने आया हैं। हम सभी इस बात को बहुत अच्छी तरह महसूस करें कि हम बाबा से सबकुछ प्राप्त कर ले। वो हमे दाता बनाने आया हैं, देने आया हैं, हीरो एक्टर बनाने आया हैं, चारो युगो के लिए श्रेष्ठ वरदान देने के लिए आया हैं। हम बाबा से सबकुछ प्राप्त कर ले।

बाबा ने बहुत सहज यह बात स्पष्ट कर दी कि, "निरंतर मुझे याद करो। जो निरंतर मुझे याद करते हैं वो निरंतर मेरे साथ हैं।" यह साथ, भगवान का साथ कितनी बड़ी चीज हैं। ब्रह्माबाबा का साथ जो पहले नंबर की आत्मा हैं, जो महान त्यागी और महान योगी हैं, जिनका इस सृष्टि चक्र में सबसे ज्यादा महत्व हैं उनके साथ हीरो पार्ट बजाना, हर जन्म में उनके साथ रहना इस बात का कितना ज्यादा महत्व हैं..! तो हम निरंतर योगी बने, सहजयोगी बने। जो इस समय सहजयोगी बन जायेंगे वही 84 जन्म सहजरूप से जीवन व्यतित करेंगे और यहाँ उन्हें अनुभव होगा कि वह हमेशा बाबा के साथ हैं, उसकी छत्रछाया हमारे सिर पर हैं।

तो आइये हम सहजयोगी बने। इसमे ही परम आनंद हैं, इसमे हमारी आंतरिक शक्तियाँ बहुत बढ़ जाती हैं, हम देने योग्य बन जाते हैं। सहजयोगी, निरंतर योगी बनने के लिए हमे कुछ चीजे याद रखनी हैं जैसेकि, "बाबा मेरा हैं" उससे बहुत ज्यादा अपनापन ऐसे महसूस करें जैसे संसार में कोई आपका अति प्रिय हैं। चाहे आपका बच्चा, पति, पत्नी, माँ-बाप जिससे आपका बहुत प्यार हैं। आप जानते हैं उससे कैसा अपनापन होता हैं वैसा ही अपनापन बाबा में हो जाये। बस हमे लगे कि वह मेरा हैं। यह अनुभव प्यार को बढ़ायेगा और हमे सहजयोगी बनायेगी।

दूसरा बहुत अच्छा अभ्यास हम करते रहे जो कि बहुत सरल हैं जिसमे मेहनत भी नहीं लगेगी। और वो हैं "भगवान मेरा साथी हैं।" चाहे तो गीत गाते रहे सारा दिन कि "भगवान हमारा साथी हैं।" उसके साथ का निरंतर अनुभव होता रहेगा। यह भी योग में गिना जायेगा। और बहुत पॉवरफुल योग करने के लिए यह अभ्यास करते रहे कि बाबा मेरे सिर के उपर छत्रछाया हैं। तो चाहे उसको खुदादोस्त बना ले, अपना परम प्रियतम बना ले, अपना साथी बना ले, लेकिन यह चीजे याद रखनी पड़ेगी। होता क्या हैं कि मनुष्य जब अपने काम-धंधे में बहुत व्यस्त हो जाता हैं, जब वो यह सोचता हैं कि बहुत व्यस्त हूँ अथवा वह कर्म कॉन्श्यस हो जाता हैं। कार्य के अलावा उसे कुछ भी याद नहीं आता तब यह सब चीजे भूल जाती हैं। लेकिन भूले नहीं, बीच-बीच में अशरीरीपन और स्वमान का अभ्यास बढ़ाते चले। तो ऐसी

कोई बात नहीं कि हम निरंतर योगी न बन सके। योग हमारे आनंद का विषय हो जायेगा, योग हमारे लिए सुखदायी विषय हो जायेगा। हम श्रेष्ठ योगी बनकर इस संसार में ऐसे विचरण करेंगे मानो लाईट-हाउस (प्रकाश-स्तंभ) होकर विचरण कर रहे हो। प्रकृति भी हमारा सम्मान करेगी। स्वयं भगवान भी ऐसे बच्चों का सम्मान करते ही हैं।

तो आज सारा दिन अशरीरी होने का अभ्यास करेंगे और यह बात याद रखेंगे कि "भगवान हमारा साथी हैं।" रोज़ सवेरे चिंतन के द्वारा अपनापन बढ़ायेंगे। लेकिन आज का मुख्य अभ्यास होगा "सर्वशक्तिवान मेरे सिर के उपर छत्रछाया हैं। नीचे मैं शिवशक्ति... सिर के उपर सर्वशक्तिवान।" इसका आज सारा दिन बहुत ज्यादा आनंद लेंगे और निरंतर योग की ओर बढ़ेंगे क्योंकि निरंतर योगी ही बाप के निरंतर साथी हैं।

ओम शांति...

ऋषि युग की जीवन शैली



ब्रह्मा बाप तैयारी कर रहे हैं ना स्वर्ग में जाने की तो स्वर्ग के नक्शे निकाल रहे हैं। आप सब तैयार हो ना? तैयारी कौन-सी है वह तो मालूम है ना? कौन बाप के साथ स्वर्ग के गेट से पास करेंगे। उसकी पास ले ली है? गेट-पास तो ले ली है लेकिन बाप के साथ गेट पास करने की पास हो। एक वी.आई.पी.गेट पास होती है और एक राष्ट्रपति की भी पास होती है। यह विश्वपति का गेट पास है। कौन-सी गेट-पास ली है? अपने पास को चेक करना।

बाबा हमारे जीवन को पूर्णतः दिव्य बनाने आया हैं ताकि हम हीरो एक्टर बनकर इस संसार में बाबा का महान कार्य कर सके । हमारे साथ शिवबाबा और ब्रह्माबाबा, दो महान हस्तियाँ रहती हैं । शिवबाबा तो सर्वोच्च हैं ही, ब्रह्माबाबा भी बहुत महान बने । हम उन्हें फॉलो करते हैं ।

ब्रह्माबाबा पहले नंबर की आत्मा बने जिसके अनेक आधार थे कि योगी, ज्ञानी, त्यागी थे लेकिन प्रमुख आधार यह हैं कि वह 'मैं' और 'मेरेपन' से पूरी तरह मुक्त हुए । हमे भी उन्हें फॉलो करना हैं । बाबा के अंदर लेश मात्र भी नहीं था कि, "मैं यज्ञ का मालिक हूँ" या "मेरे द्वारा बाबा बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं ।" ऐसा नहीं, बाबा ही कर रहे हैं । मैं-पन और मेरा-पन, मेरा यज्ञ, मेरा परिवार, मैंने धन दिया, मैंने यज्ञ को स्थापित किया -इन सबसे वह पूरी तरह मुक्त थे । हम भी अपने जीवन को यदि divine (दिव्य) बनाना चाहते हैं तो पूरी तरह से स्वयं को 'मैं' और 'मेरे' से मुक्त कर दे । यह मैं और मेरापन गहरी जड़े मनुष्य के अंदर जमाये हुए हैं और जो मैं-मैं करता हैं वह बकरी की तरह बहुत निर्बल हो जाता हैं, उसकी सेवाओ में भी बल नहीं भरता, उसकी स्थिति में भी बल नहीं भरता हैं ।

तो आइये हम जाँच ले कि हमारे अंदर कहाँ-कहाँ मैं-पन और मेरापन हैं । मेरा परिवार, मेरी सेवा, मेरे बच्चे, मेरी धन-संपत्ति, मेरा धंधा, मेरा मकान इस तरह के कई मेरेपन रहते हैं मनुष्य के अंदर । मैं बड़ा, मैं घर का मालिक, मैं बहुत धनवान, मैं बहुत बुद्धिमान, मैंने सेवाओ में बहुत सफलता पाई, मैं बहुत अनुभवी हूँ, मेरा समाज में बहुत सम्मान हैं, मैं बड़ा हूँ तो मेरी आज्ञा के बिना कुछ भी काम नहीं होना चाहिए -यह 'मैं' और 'मेरा' मनुष्य के मन में बहुत गहराई तक जमा रहता हैं और जो इन दोनो से मुक्त हो जाये वही बहुत श्रेष्ठ होता हैं, उसमे दिव्यता आ जाती हैं ।

तो सभी को यह बहुत अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिए अनुभवो के साथ कि "मेरी शक्तियों से सेवा नहीं हो रही हैं, बाबा की शक्तियों से हो रही हैं । मेरी शक्तियों से सफलता नहीं मिल रही हैं, बाबा की यह गिफ्ट हैं । हम सेवाओ में सफल इसलिए हो रहे हैं कि ईश्वरीय ज्ञान हमारे साथ हैं, कि परमात्म वरदान हमारे साथ हैं और उसके द्वारा दिए गये टेलेंट्स (प्रतिभा) हमारे साथ हैं । सफलता का भी वरदान उसने ही दिया हैं ।" जो इस तरह इन सभी मनोविकारो से मुक्त रहकर सेवा करते हैं, अपने घर को चलाते हैं, अपनी लौलिक और अलौकिक उन्नति करते हैं वो निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रेसर रहते हैं । और जहाँ मैं और मेरा

हैं वहीं परेशानीयाँ हैं, वहीं व्यर्थ का प्रकोप हैं, वहीं मनुष्य को उदासी, निराशा, हताशा पैदा होती हैं। लेकिन मेरा कुछ भी नहीं, सबकुछ तेरा, तेरा ही दिया हुआ है और तुझको अर्पित। जैसे बाबा ने कर दिया था मैं-पन का त्याग, "I am nothing Baba, you are everything (मैं कुछ नहीं हूँ बाबा, आप ही सबकुछ हो)" ऐसे ही हम भी कर दे। मैं-मैं के गीत न गाये, अपनी महिमा के गुणगान न करते रहे, सिर्फ बाबा ही बाबा। लेकिन कहीं-कहीं आत्माये बाबा के गुणगान करते हुए अपना भी गुणगान करने लगती हैं। इससे ईश्वरीय बल समाप्त हो जाता है, प्रभाव फ़िका पड़ जाता है, प्रत्यक्षता में देरी होती है।

तो आइये आज सारा दिन हम अभ्यास करें, "सबकुछ तेरा, मेरा कुछ भी नहीं।" जो भक्ति में गाते आये कि क्या लागे मेरा, अब उसका स्वरूप बनना है। और आज सारा दिन बार-बार बापदादा का आह्वान करेंगे। बाबा को बुलायेंगे और महसूस करेंगे कि "बापदादा अपना धाम छोड़कर नीचे हमारे पास आ गये, हमारे सिर पर हाथ रख दिया" और यह अनुभव करवाया कि "बच्चे मैं हूँ, मेरी शक्तियाँ तुम्हारे साथ हैं, मेरे वरदान तुम्हारे साथ हैं।"

तो सारा दिन बापदादा का आह्वान करते हुए योग का परमसुख प्राप्त करेंगे।

ओम शांति...

आपका धन्यवाद..!

 bkjayshah@gmail.com

 /gyanamrit